लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़–27

इटली की लोकप्रिय कथाऐं–1

थोमस फ्रैडैरिक केन

1885

हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

2022

Series Title: Lok Kathaon Ki Classic Pustaken Series-27
Book Title: Italy Ki Lokpriya Kathayen-1 (Italian Popular Tales-1)
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2019
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Italy

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें 6
इटली की लोकप्रिय कथाऐं–1 8
अध्याय 1ः परियों की कहानियॉ 10
1 प्यार का राजा 12
2 ज़ैलिन्डा और राक्षस 27
3 राजा बीन 36
4 नाचता पानी गाता पेड़ और बोलती चिड़िया 49
5 सुन्दरी ऐन्जिओला 68
6 बादल 78
7 तालाब 94
8 ग्रिफ़िन 106
9 सिन्डरैला 110
10 सुन्दर मारिया वुड 125
11 सात बच्चों का शाप 139
12 ओरैजियो और बियान्चीनैटा 150
13 सुन्दर फ़िओरीता 155
14 बीयर्ड 169
15 बर्फ सी सफेद आग सी लाल 178
16 शैतान ने तीन बहिनों से शादी कैसे की 191
17 मूर्ति के प्यार में 205
18 तेरहवॉ 216
19 चमार 226
20 जादूगर सर फ़िओरान्ते 231

21 किस्टल का ताबूत 236
22 सौतेली माँ 254
23 पानी और नमक 260
24 तीन सन्तरों से प्यार 265

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है। फिर इनका एकत्रीकरण आरम्भ हुआ और इक्का दुक्का पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हुईं और अब तो बहुत सारे देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें उनकी मूल भाषा में और उनके अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं।

सबसे पहले हमने इन कथाओं के प्रकाशन का आरम्भ एक सीरीज़ से किया था – "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिनके अन्तर्गत हमने इधर उधर से एकत्र कर के **2500** से भी अधिक देश विदेश की लोक कथाओं के अनुवाद प्रकाशित किये थे – कुछ देशों के नाम के अन्तर्गत और कुछ विषयों के अन्तर्गत।

इन कथाओं को एकत्र करते समय यह देखा गया कि कुछ लोक कथाऐं उससे मिलते जुलते रूप में कई देशों में कही सुनी जाती है। तो उसी सीरीज़ में एक और सीरीज़ शुरू की गयी – "एक कहानी कई रंग"[1]। इस सीरीज़ के अन्तर्गत एक ही लोक कथा के कई रूप दिये गये थे। इस लोक कथा का चुनाव उसकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया था। उस पुस्तक में उसकी मुख्य कहानी सबसे पहले दी गयी थी और फिर वैसी ही कहानी जो दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं उसके बाद में दी गयीं थीं। इस सीरीज़ में **20** से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। यह एक आश्चर्यजनक और रोचक संग्रह था।

आज हम एक और नयी सीरीज़ प्रारम्भ कर रहे हैं "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें"। इस सीरीज़ में हम उन पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो बहुत शुरू शुरू में लिखी गयी थीं। ये पुस्तकें तब की हैं जब लोक कथाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ ही हुआ था। अधिकतर प्रकाशन **19**वीं सदी से आरम्भ होता है। जिनका मूल रूप अब पढ़ने के लिये मुश्किल से मिलता है और हिन्दी में तो बिल्कुल ही नहीं मिलता। ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें हम अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह सीरीज़ आरम्भ कर रहे हैं।

इस सीरीज़ में चार प्रकार की पुस्तकें शामिल हैं –

1. अफ्रीका की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें

2. भारत की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें

3. **19**वीं सदी की लोक कथाओं की पुस्तकें

4. मध्य काल की तीन पुस्तकें – डैकामिरोन, नाइट्स औफ स्ट्रापरोला और पैन्टामिरोन। ये तीनों पुस्तकें इटली की हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सारी लोक कथाऐं बोलचाल की भाषा में लिखी जायें ताकि इन्हें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

[1] "One Story Many Colors"

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब पुस्तकें "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरी भाषाओं के लोक कथा साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

इटली की लोकप्रिय कथाऐं–1

यों तो हर देश की अपनी अपनी लोक कथाऐं होती है पर यूरोप महाद्वीप में ब्रिटेन जर्मनी फ्रांस और इटली अपनी एक विशेष जगह रखते हैं। इन देशों में भी यों तो सभी जगह लोक कथाऐं कही सुनी जाती रही हैं पर संगठित रूप में इनका संग्रह ससबसे पहले केवल इटली देश ने ही शुरू किया था। सन् **1313** में बोककाओ की "इल डैकामिरोन", इसके बाद सन् **1550** में स्ट्रापरोला की ""फ़ेसशस नाइट्स औफ स्ट्रापरोला", इसके बाद **1885** में थोमस केन की "इटली की लोकप्रिय कहानियॉ" और फिर सन् **1893** में जियामबतिस्ता की "इल पैन्टामिरोन" शुरू में लिखी गयी कहानियों के बहुत अच्छे संग्रहों में गिने जाते है।

इस पुस्तक से पहले इटली के एक और संग्रह "इतालो कैलवीनो की इटली की लोक कथाऐं" से जिसमें **200** कहानियॉ थीं **125** कहानियों का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित किया गया था जो छह भागों में बॉट कर प्रकाशित किया गया था।[2] उस पुस्तक की लोकप्रियता को देख कर एक और पुस्तक का अनुवाद किया गया। यह पुस्तक थोमस केन की पुस्तक "इटली की लोकप्रिय कथाऐं"[3] है। इस पुस्तक में कुल मिला कर **109** कथाऐं हैं जिनको केन ने छह अध्यायों में बॉटा है। हम इसको पढ़ने की आसानी के लिये चार भागों में बॉट कर आपके लिये प्रस्तुत कर रहे हैं —

भाग **1** — अध्याय **1** ः परियों की कहानियॉ
भाग **2** — अध्याय **2** ः परियों की कहानियॉ कमशः
अध्याय **3** ः ओरिऐन्ट की कहानियॉ
भाग **3** — अध्याय **4** ः दंत कथाऐं और भूतों की कहानियॉ
भाग **4** — अध्याय **5** ः नर्सरी की कहानियॉ
अध्याय **6** ः कहानियॉ और हॅसी दिल्लगी

इस पुस्तक की सारी कहानियॉ यहॉ अनुवादित की गयी हैं। इस भाग में उसके पहले अध्याय में दी गयी कथाऐं हैं। तो लीजिये यह प्रस्तुत है इसका पहला भाग – मूल पुस्तक का पहला अध्याय।

आशा है कि आपको इटली की ये पुरानी कहानियॉ अवश्य ही पसन्द आयेंगीं।

---

[2] "Italo Calvino: Folktales of Italy". Translated by George Martin. 1980.
[3] Italian Popular Tales. By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. 1885.
Taken from the Web Site :
https://books.google.ca/books?id=RALaAAAAMAAJ&pg=PR1&redir_esc=y&hl=en#v=onepage&q&f=false

अध्याय 1ः परियों की कहानियॉ

सबसे ज़्यादा लोकप्रिय और सबसे ज़्यादा मजेदार परियों की कहानियॉ वे होती हैं जिनमें कोई पत्नी अपने ऐसे पति का चेहरा देखने की कोशिश करती है जो केवल रात को ही आता है। वह तो चेहरा देखने में सफल हो जाती है पर उसका पति गायब हो जाता है। वह उसको पाने में तब तक सफल नहीं होती जब तक वह अपने किये का पछतावा और प्रायश्चित नहीं कर लेती। यह उसको थका देने वाली यात्राओं और बहुत सारे बहुत मुश्किल काम कर के करना पड़ता है।

ऐसी श्रेणी की क्लासिक कहानी है – "क्यूपिड ऐन्ड साइक"। ऐसी कहानियों को भी चार हिस्सों में बॉटा जा सकता है। पहले हिस्से में वे कहानियॉ रखी जा सकती हैं जिनमें यह पत्नी की उत्सुकता की सजा होती है। दूसरे हिस्से में वे कहानियॉ रखी जा सकती हैं जिनमें पति की प्रेमिका मत्स्यकन्या होती है। तीसरे हिस्से में वे कहानियॉ आती हैं जिनमें लड़की की शादी किसी राक्षस से हो जाती है। फिर वह उसका कहा न मानने की वजह से उसे खो देती है पर फिर बाद में वही उसको आदमी के रूप में लाती है।

चौथे हिस्से में वे कहानियॉ आती हैं जो पहले और तीसरे हिस्सों की कहानियों का मिला जुला रूप हैं। इनमें पति ने एक जानवर का रूप लिया हुआ होता है। वह अपनी पत्नी से उसकी अपनी उत्सुकता या पति की बात न मानने की वजह से या फिर पत्नी की बहिनों की द्वेष भावना रखने की वजह से अलग हो जाता है।

इन कहानियों में पहली तरह की कहानी के उदाहरण में हम सिसिली की एक कहानी दे रहे हैं जो जियूसैप्पे पित्रे के संग्रह में है।[4]

[4] Giuseppe Pitre. (Tale No 18)

1 प्यार का राजा[5]

एक बार की बात है कि एक आदमी था जिसके तीन बेटियॉ थीं। वह अपना घर जंगली पत्ते और जड़ी बूटियॉ इकट्ठी कर के चलाता था।

एक दिन वह अपनी सबसे छोटी बेटी को साथ ले कर गया और एक बागीचे में जा कर सब्जियॉ तोड़ने लगा। लड़की को एक बहुत सुन्दर मूली दिखायी दे गयी तो उसने उसे उखाड़ना चाहा।

जैसे ही वह उसे उखाड़ रही थी तो न जाने कहॉ से वहॉ एक तुर्क आ गया और उससे बोला — "तुम लोगों ने मेरे मालिक के घर का दरवाजा क्यों खोला? अब तुमको अन्दर आना पड़ेगा और अब वही तुम्हारी सजा बतायेंगे।"

सो वे तीनों लोग जमीन के अन्दर चले गये। वे दोनों बेचारे डर के मारे ज़िन्दे से ज़्यादा मरे जैसे हो रहे थे। जब वे वहॉ बैठे हुए थे तो वहॉ एक हरी चिड़िया आयी और एक बर्तन में रखे हुए दूध में नहायी। फिर उसने अपने आपको सुखाया तो वह एक बहुत सुन्दर नौजवान बन गयी।

उसने तुर्क से पूछा "ये लोग क्या चाहते हैं।"

[5] The King of Love. Tale No 1.

तुर्क बोला — "सरकार ये लोग मूली तोड़ रहे थे कि इन्होंने गुफा का दरवाजा खोल दिया।"

यह सुन कर पिता बोला — "हमें क्या पता था कि यह किसी राजा का घर है। मेरी बेटी ने एक सुन्दर मूली देखी वह उसको अच्छी लगी तो उसने वह उखाड़ ली।"

मालिक ने कहा — "अगर यह बात है तो तुम्हारी बेटी मेरे पास मेरी पत्नी बन कर रहेगी। लो यह सोने का एक थैला लो और जाओ। और जब भी तुम अपनी बेटी को देखना चाहो तो यहाँ आ जाना और इसे अपना ही घर समझना।"

पिता ने अपनी बेटी को वहीं छोड़ा और अपने घर वापस चला गया। जब घर का मालिक लड़की के साथ अकेला रह गया तो उसने लड़की से कहा — "देखो रोज़ैला[6] अब तुम यहाँ की मालकिन हो। लो ये चाभियाँ लो।" कह कर उसने घर की सारी चाभियाँ उसको दे दीं। चाभियाँ ले कर वह लड़की बहुत खुश हो गयी।

एक दिन जब वह हरी चिड़िया कहीं बाहर गयी हुई थी तो उसकी बहिनों ने उससे मिलने की सोची। वे आयीं और उससे उसके पति के बारे में पूछा। रोज़ैला बोली "मुझे पता नहीं। क्योंकि उसने मुझसे इस बात को जानने के लिये मना किया है कि मैं उसके बारे में कुछ जानूँ कि वह कौन है।"

[6] Rosella – name of the girl, called Rusheeda also in Muslims

उसकी बहिनों ने उससे बहुत जिद की कि वह यह बात जाने कि आखिर वह है कौन। सो जब वह घर आ गया और आदमी में बदल गया तो रोज़ैला ने एक लम्बी सॉस ली।

उसके पति ने पूछा — "क्या बात है?"

"कुछ नहीं।"

"तुम मुझे बताओ तो।"

लड़की ने कुछ देर तक तो उसे सवाल पूछने दिया फिर आखीर में बोली — "अगर तुम यह जानना ही चाहते हो कि मैं परेशान क्यों हूँ तो मैं कहे देती हूँ कि मैं तुम्हारा नाम जानना चाहती हूँ।"

उसके पति ने कहा कि वह उसके लिये इससे भी बुरा होगा। पर वह नहीं मानी और उससे उसका नाम जानने की जिद करती रही। तो उसने उससे सोने का एक बर्तन पानी भर कर एक कुर्सी पर रखने के लिये कहा और उसमें अपने पैर धोने शुरू किये।

उसने फिर पूछा — "रोज़ैला क्या तुम वाकई में मेरा नाम जानना चाहती हो।"

वह लड़की अपनी बात पर जमी रही बोली "हॉ।"

अब वह पानी उसकी कमर तक आ गया था क्योंकि अब वह चिड़िया बन चुका था और उस बर्तन के अन्दर तक चला गया था। लेकिन उसने वही सवाल उससे एक बार फिर पूछा। उसने भी जवाब दिया "हॉ।"

अब वह पानी उस चिड़िया के मुँह तक आ चुका था। पति ने फिर पूछा कि क्या वह अभी भी उसका नाम जानना चाहती है। उसने फिर वही जवाब दिया "हॉ हॉ हॉ। मैं तुम्हारा नाम जानना चाहती हूँ।"

"तो सुनो मैं हूँ प्यार का राजा।" और यह कहने के साथ ही वह वहॉ से गायब हो गया। साथ में वे बर्तन और महल भी गायब हो गये। अब रोज़ैला एक बड़े से मैदान में अकेली खड़ी थी। उसकी सहायता करने वाला भी अब वहॉ कोई नहीं था। उसने अपने नौकरों को भी आवाज लगायी पर किसी का कोई जवाब ही नहीं आया।

इस पर वह बोली — "क्योंकि मेरा पति गायब हो गया है तो मुझे अब अकेले ही इधर उधर घूमना पड़ेगा और उसे ढूँढना पड़ेगा।"

वह बेचारी लड़की जिसको अब बच्चे की आशा भी थी इधर उधर घूमती रही। रात को वह एक अकेले मैदान में आ निकली। उसका दिल डूबने लगा था। वह नहीं जानती थी कि वह क्या करे सो वह ज़ोर से बोली —

ओ प्यार के राजा तुमने किया भी और कहा भी
तुम एक सोने के बर्तन में से मेरे सामने सामने गायब हो गये
अब आज की रात मुझ बदकिस्मत को कौन शरण देगा

जैसे ही उसने यह कहा कि उसके सामने एक राक्षसी प्रगट हो गयी और बोली — "ओ नीच तेरी यह हिम्मत कैसे हुई कि तू मेरे भानजे[7] को ढूँढे।" और उसे खा ही जाने वाली थी कि उसको उसकी दुखी हालत देख कर उस पर दया आ गयी। उसने उसे रात को शरण दे दी।

सुबह को उसने उसे रोटी का एक टुकड़ा दिया और कहा — "हम सात बहिनें हैं और सब राक्षसियाँ हैं और हम सबमें बुरी है तुम्हारी सास। तो पहले तू उसको ढूँढ।"

थोड़े में कहो तो वह लड़की छह दिनों तक उसको ढूँढती हुई इधर उधर घूमती रही। इस बीच वह छह राक्षसियों से मिली जिन्होंने सबने उसके साथ उसी तरीके का बर्ताव किया।

सातवें दिन बहुत दुखी हो कर उसने अपना रोज का गाना गा दिया —

ओ प्यार के राजा तुमने किया भी और कहा भी
तुम एक सोने के बर्तन में से मेरे सामने सामने गायब हो गये
अब आज की रात मुझ बदकिस्मत को कौन शरण देगा

तो प्यार के राजा की बहिन वहाँ प्रगट हुई। उसने उससे कहा — "रोज़ैला मेरी माँ बाहर गयी हुई है। आओ ऊपर आ जाओ।" कह कर उसने अपनी चोटी नीचे की तरफ फेंक दी। रोज़ैला ने उसे

[7] Translated for the word "Nephew" – he may be the son of the sister or brother. Here this means the son of the sister

पकड़ लिया और प्यार के राजा की बहिन ने उसे ऊपर खींच लिया। उसने उसे कुछ खिलाया और बताया कि कैसे उसको उसकी मॉ को पकड़ना है और नोचना है जब तक कि वह चिल्ला कर यह न कह दे कि "मेरे बेटे प्यार के राजा के लिये मुझे छोड़ दो।"

रोज़ैला ने वैसा ही किया पर वह राक्षसी इतनी ज़्यादा गुस्सा थी कि वह तो बस उसको खाने ही वाली थी लेकिन उसकी बेटियों ने उसको धमकी दी कि अगर उसने रोज़ैला को खाया तो वे उसको छोड़ कर चली जायेंगी।

इस पर उसने कहा — "ठीक है। तब मैं एक चिट्ठी लिखती हूॅ जो उसको मेरी एक दोस्त के पास ले कर जानी पड़ेगी।"

कह कर उसने अपने दोस्त के नाम एक चिट्ठी लिखी पर बेचारी रोज़ैला का तो उसको पढ़ कर दिल ही टूट गया। पर फिर भी उसको उसका वह काम करना तो था ही।

सो जब वह नीचे उतरी तो उसने देखा कि वह एक खुले मैदान में खड़ी है। वहॉ भी उसने अपने वही रोज का गाना गाया —

ओ प्यार के राजा तुमने किया भी और कहा भी
तुम एक सोने के बर्तन में से मेरे सामने सामने गायब हो गये
अब आज की रात मुझ बदकिस्मत को कौन शरण देगा

तो वहॉ प्यार का राजा प्रगट हो गया और बोला — "तुमने देखा कि तुम्हारी मेरा नाम जानने की उत्सुकता तुम्हें कहॉ तक ले आयी।"

बेचारी लड़की। जैसे ही उसने प्यार के राजा को देखा तो वह रो पड़ी और अपने किये की माफी मॉगने लगी। उसको उस पर दया आ गयी तो उसने उससे कहा — "अब तुम मेरी बात सुनो क्योंकि तुमको अब यह करना ही चाहिये नहीं तो तुम ज़िन्दा नहीं बचोगी।

जब तुम जा रही होगी तब तुम्हारे रास्ते में एक खून की नदी पड़ेगी। तुम उसमें से झुक कर अपने हाथों में उसका थोड़ा सा खून लेना और कहना "ओह यह कितना साफ पानी है। इतना साफ पानी तो मैंने कभी पिया ही नहीं।" उसके बाद तुम एक गदले पानी की नदी के पास आओगी तो वहॉ भी ऐसा ही करना।

उसके बाद तुम एक बागीचे में आ जाओगी जहॉ बहुत सारे फल लगे होंगे। वहॉ तुम कुछ नाशपातियॉ[8] तोड़ कर खाना और कहना "ओह कितनी स्वादिष्ट नाशपातियॉ हैं। इतनी स्वादिष्ट नाशपातियॉ तो मैंने इससे पहले कभी नहीं खायीं।

इसके बाद तुमको एक ओवन मिलेगा जिसमें दिन रात डबल रोटियॉ बनती रहती हैं पर उन्हें खरीदता कोई नहीं। वहॉ आ कर तुम कहना "ओह कितनी अच्छी डबल रोटी है ऐसी डबल रोटी तो मैंने पहले कभी खायी ही नहीं।"

[8] Translated for the word "Pear". See their picture above.

उसके बाद तुमको एक फाटक[9] मिलेगा जिस पर दो भूखे कुत्ते पहरा दे रहे होंगे। तुम उनको डबल रोटी का एक एक टुकड़ा खाने के लिये दे देना।

उसके बाद तुम एक दरवाजे पर आओगी जो धूल और मकड़ी के जालों से भरा हुआ होगा। वहॉ आ कर तुम एक झाड़ू लेना और उसे साफ कर देना।

उसके बाद तुम्हें सीढ़ियॉ मिलेंगी। आधी सीढ़ियॉ चढ़ने के बाद तुम्हें दो बड़े साइज़ के आदमी[10] मिलेंगे जिनके दोनों के पास एक एक गन्दा सा मॉस का टुकड़ा रखा होगा। तुम एक ब्रश लेना और उससे उनके मॉस के टुकड़ों को उनके लिये साफ कर देना।

उसके बाद तुम घर में घुसोगी तो वहॉ तुमको एक रेज़र एक कैंची और एक चाकू मिलेगा। वहॉ से कोई चीज़ ले कर तुम उनको पौलिश कर देना। जब तुम यह सब कर चुको तब तुम जा कर यह चिट्ठी मेरी मॉ की दोस्त को दे देना।

जब वह यह चिट्ठी पढ़ रही हो तो वहॉ मेज पर रखा हुआ एक छोटा सा डिब्बा उठाना और उसको ले कर वहॉ से भाग आना।

यह सब तुम इसी तरह से करना जैसा कि मैंने तुम्हें बताया है वरना तुम वहॉ से ज़िन्दा बच कर नहीं आ पाओगी।"

[9] Translated for the word "Entrance"

[10] Translated for the word "Giant"

रोज़ैला ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा उसके पति ने उससे करने के लिये कहा था। जब राक्षसी चिट्ठी पढ़ रही थी तो रोज़ैला ने मेज पर से डिब्बा उठाया और उसे ले कर वहॉ से भाग गयी।

जब राक्षसी ने चिट्ठी पढ़ ली तब वह चिल्लायी "रोज़ैला रोज़ैला।" पर जब उसको कोई जवाब नहीं मिला तो उसको लगा कि उसको तो धोखा दिया गया है तो वह चिल्लायी "रेज़र कैंची चाकू तुम लोग उसे काट डालो।"

तो उन्होंने उसे जवाब दिया — "जब तक हम रेज़र कैंची और चाकू थे तब तक क्या तुमने हमें कभी पौलिश किया? रोज़ैला आयी तो उसने हमारे ऊपर पौलिश की। हम उसे कैसे काट दें।"

राक्षसी फिर गुस्से में भर कर चिल्लायी — "ओ सीढ़ियों उसको खा जाओ।" सीढ़ियॉ बोलीं — "जब तक हम सीढ़ियॉ थीं तब तक क्या तुमने हमें कभी बुहार कर साफ किया? रोज़ैला आयी तो उसने हमें झाड़ू लगा कर साफ किया। हम उसको कैसे खा सकते हैं।"

राक्षसी गुस्से में भर कर फिर चिल्लायी — "ओ बड़े साइज़ के लोगों उसको कुचल कर रख दो।" बड़े साइज़ के लोगों ने कहा — "जब तक हम बड़े साइज़ के आदमी थे क्या कभी तुमने हमारे खाने को साफ किया? रोजैला आयी और उसने यह किया। हम उसको कैसे कुचल सकते हैं।"

अब तक राक्षसी का गुस्सा बहुत बढ़ गया था उसने चिल्ला कर अपने फाटक से कहा कि वह उसको ज़िन्दा ही जमीन में गाड़ दे।

अपने कुत्तों को बोला कि वे उसको काट काट कर मार दें। ओवन को बोला कि वह उसको जला कर राख कर दे। फल के पेड़ को बोला कि वह उसके ऊपर गिर कर उसको मार दे। नदियों को बोला कि वे उसको अपने अन्दर डुबो लें।

पर सबको रोज़ैला की उनके साथ की गयीं भलाइयॉ याद रहीं और उन्होंने सबने उसको किसी भी तरह का नुकसान पहुँचाने से मना कर दिया।

इस बीच रोज़ैला वहॉ से चलती रही चलती रही। काफी दूर निकल आने पर उसको यह जानने की उत्सुकता हुई कि उस बक्से में क्या था जिसको ले कर वह वहॉ से लिये चली आ रही थी।

उसने उसे खोल दिया तो उसमें से बहुत सारी छोटी छोटी कठपुतलियॉ निकल आयीं। कुछ नाच रही थीं कुछ गा रही थीं। कुछ वाद्य बजा रही थीं।

कुछ देर तक वह उनके नाच गाने का आनन्द लेती रही पर फिर जब वह वहॉ से चलने को हुई तो वे छोटी छोटी कठपुतलियॉ उस बक्से में अन्दर ही न जायें। रात हो आयी तो उसने फिर अपना वही गाना गाया —

ओ प्यार के राजा तुमने किया भी और कहा भी
तुम एक सोने के बर्तन में से मेरे सामने सामने गायब हो गये
अब आज की रात मुझ बदकिस्मत को कौन शरण देगा

उसके यह गाते ही उसका पति फिर से वहॉ प्रगट हो गया और बोला — "उफ़ तुम्हारी यह उत्सुकता तो तुम्हारी जान ले कर ही छोड़ेगी।" कह कर उसने उन कठपुतलियों को उस बक्से के अन्दर जाने के लिये कहा।

उसके कहते ही वे सब कठपुतलियॉ उस बक्से के अन्दर चली गयीं और रोज़ैला भी उसको ले कर अपने रास्ते चल पड़ी। वह ठीक से अपनी सास के घर आ गयी।

जब राक्षसी ने उसके देखा तो वह गुस्से से चिल्लायी — "तू तो मेरे बेटे की वजह से यहॉ ज़िन्दा खड़ी हुई है वरना अब तक कभी की मर गयी होती।" कह कर वह उसको खा ही जाने वाली थी कि उसकी बेटियॉ बोलीं — "वह बेचारी बच्ची। वह तुम्हारे लिये बक्सा तो ले कर आ गयी अब तुम उसे क्यों खा जाना चाहती हो?"

इस पर वह बोली — "ठीक है तो तू मेरे बेटे प्यार के राजा से शादी करना चाहती है। ले ये छह गद्दे ले और इनको चिड़ियों के पंखों से भर दे।"

रोज़ैला फिर नीचे उतरी और इधर उधर घूम कर अपना वही पुराना गाना गाने लगी —

ओ प्यार के राजा तुमने किया भी और कहा भी
तुम एक सोने के बर्तन में से मेरे सामने सामने गायब हो गये
अब आज की रात मुझ बदकिस्मत को कौन शरण देगा

यह सुन कर उसका पति फिर उसके सामने प्रगट हुआ तो उसने उसको सब बताया कि क्या हुआ। उसके पति ने एक सीटी बजायी और चिड़ियों का राजा वहॉ आ गया। उसने सारी चिड़ियों को हुक्म दिया कि वे सब अपने अपने पंख ला कर वहॉ डाल दें वे छहों गद्दे उनसे भर दें और उनको राक्षसी के पास ले जायें।

जब ऐसा हो गया तो राक्षसी ने फिर कहा कि यह तो उसके बेटे की सहायता से हुआ है। फिर भी वह गयी और उन छह गद्दों से उसने अपने बेटे का बिस्तर बनाया और उसी दिन उसने अपने बेटे की शादी पुर्तगाल के राजा की बेटी से कर दी।

फिर उसने रोज़ैला को बुलाया और उससे कहा कि उसके बेटे की शादी हो चुकी है सो अब वह उसके शादी वाले पलंग के सामने दो जलती हुई मशालें ले कर झुके।

रोज़ैला ने उसकी बात मानी पर जल्दी ही प्यार के राजा ने यह कहते हुए कि रोज़ैला अब इस हालत में नहीं थी कि वह अपने दोनों हाथों में जलती हुई मशाल पकड़ सके उसने अपनी पत्नी को इस बात के लिये राजी कर लिया कि वह रोज़ैला से अपनी जगह बदल ले।

जैसे ही रानी ने वे मशालें अपने हाथों में लीं कि तभी जमीन खुल गयी और वह उसमें समा गयी। फिर प्यार का राजा रोज़ैला के साथ हॅसी खुशी रहा।

जब राक्षसी ने सुना कि क्या हुआ तो उसने अपने सिर के ऊपर अपने दोनों हाथ पकड़ लिये और कहा कि रोज़ैला का बच्चा तब तक पैदा नहीं होना चाहिये जब तक उसके हाथ न खुल जायें।

इस पर प्यार के राजा ने एक चबूतरा[11] बनवाया जिस पर वह खुद लेट गया जैसे कि वह मर गया हो। फिर उसने सब घंटियॉ बजवा दीं जिससे बहुत सारे लोग चिल्ला चिल्ला कर रोने लगे "ओह प्यार का राजा कैसे मर गया?"

राक्षसी ने भी यह सुना तो पूछा "यह शोर कैसा है।"

उसकी बेटियों ने कहा कि उनका भाई उसकी अपनी गलतियों की वजह से मर गया है। जब राक्षसी ने यह सुना तो उसने यह कहते हुए अपने हाथ खोल दिये "अरे मेरा बेटा कैसे मर गया?"

जैसे ही उसने अपने हाथ खोले उसी समय रोज़ैला ने अपने बच्चे को जन्म दिया। जैसे ही राक्षसी ने यह सुना कि रोज़ैला का बच्चा पैदा हो चुका है तो उसके दिल की एक नस फट गयी और वह मर गयी। प्यार के राजा ने अपनी पत्नी और अपनी बहिनों को लिया और फिर सब सुख और शान्ति से रहने लगे।

[11] Translated for the word "Catafalque" – a coffin-like wooden structure on which dead body is kept in the state of lying.

जियूसैप्पे पित्रे के संग्रह में इसी तरह की कहानी का एक और रूप है जिसका नाम है "क्रिस्टल का राजा" जो इस दंत कथा से ज़्यादा मिलता जुलता है।[12]

एक पिता अपनी तीन बेटियों में से सबसे छोटी बेटी की शादी एक घुड़सवार से कर देता है जो राजा का जादू पड़ा बेटा होता है और जो केवल रात को ही अपनी पत्नी के पास आता है। यह घुड़सवार एक बार अपनी पत्नी को उसकी बहिनों से मिलने की इजाजत दे देता है। उधर उसकी बहिनों को जब यह पता चलता है कि उनकी बहिन ने अपने पति का चेहरा ही नहीं देखा तो उसकी सबसे बड़ी बहिन उसको मोमबत्ती देती है और उससे कहती है कि जब वह सो जाये तब वह उसे जला कर उसकी रोशनी में उसका चेहरा देख ले और फिर उन्हें बताये कि वह कैसा लगता है।

वह ऐसा ही करती है तो क्या देखती है कि उसके पास तो एक बहुत ही सुन्दर राजकुमार सो रहा है। पर जब वह उसकी तरफ देख रही होती है तो मोमबत्ती के पिघले हुए मोम की एक बूँद राजकुमार की नाक पर गिर जाती है। वह "धोखा धोखा" चिल्लाता हुआ उठ जाता है और अपनी पत्नी को घर से बाहर निकाल देता है।

वह उसको सलाह देता है कि वह अपने लिये लोहे के जूते बनवाये और यात्रा करते करते उसके वे जूते टूट जायें तो वह एक महल के पास आ जायेगी जहाँ वहाँ के लोग उसको शरण दे देंगे। वहीं उसको उसका पति भी मिल जायेगा। बाकी की कहानी तो फिर साफ ही है।

इस हिस्से की एक और विशेषता है और वह यह कि बहुत ढूँढने के बाद जब पत्नी पति को ढूँढ लेती है तो वह उसको दूसरी स्त्री के काबू में पाती है जिसे कई रिश्वतें देने के बाद वह उसको अपने पति से मिलने देती है उसके कमरे में सोने देती है। वह अपने पति को जगा नहीं पाती क्योंकि दूसरी स्त्री कोई दवा दे कर उसको सुला देती है। तीसरी रात वह उसको जगाने में सफल हो जाती है और फिर वह उसको पहचान जाता है। उसके बाद वे दोनों वहाँ से भाग जाते हैं।

इस कहानी के उदाहरण में हम यहाँ एक कहानी दे रहे हैं जो डी गुब के संग्रह में दी हुई है। यह कहानी इस पुस्तक की **22**वीं कहानी है – "जादूगर सर फ़िओरान्ते"।

दूसरे हिस्से की कहानियों में पति को उत्सुकता होती है जिसकी सजा उसको मिलती है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण इटली से बाहर फ्रांस की एक कहानी में पाया जाता है।

---

[12] Giuseppe Pitre. "The Crystal King". (Tale No 281).

इसके तीसरे हिस्से में "सुन्दरी और जानवर"[13] जैसी कहानियॉ आती हैं। इसका सबसे अच्छा उदाहरण है आगे वाली कहानी – "ज़ैलिन्डा और राक्षस"।

[13] Beauty and the Beast

2 ज़ैलिन्डा और राक्षस[14]

एक बार की बात है कि एक आदमी था जिसके तीन बेटियॉ थीं। उसकी तीसरी और सबसे छोटी बेटी सबसे सुन्दर और बहुत ही तमीजदार लड़की थी। उसके विचार भी बहुत अच्छे थे। इससे उसकी दोनों बड़ी बहिनें उससे बहुत जलती थीं जबकि उनका पिता उसको बहुत प्यार करता था।

ऐसा हुआ कि जनवरी के महीने में वहॉ के पड़ोस के शहर में एक मेला लगने वाला था तो उस आदमी को वहॉ से घर का कुछ जरूरी सामान लाना था। सो मेला जाने से पहले उसने अपनी तीनों बेटियों से पूछा कि वह मेला जा रहा है वह अपनी हैसियत के अनुसार उनके लिये वहॉ से क्या ले कर आये।

रोज़ीना जो उसकी सबसे बड़ी बेटी थी उसने उससे एक पोशाक लाने के लिये कहा। मरीटा यानी उसकी दूसरी बेटी बोली कि वह उसके लिये एक शाल ले कर आये। उसकी तीसरी सबसे छोटी बेटी ज़ैलिन्डा को केवल एक गुलाब का फूल चाहिये थो।

जब वह मेले में पहुॅचा तो उसने वह सब खरीदा जो उसको खरीदना था। फिर उसने अपनी दोनों बेटियों के लिये पोशाक और

[14] Zelinda and the Monster. (Tale No 2)
A version of the “Beauty and the Beast” tale from France

शाल खरीदे पर बहुत कोशिशों के बाद भी अपनी छोटी बेटी के लिये गुलाब नहीं खरीद सका।

अपनी बेटी ज़ैलिन्डा को खुश करने के लिये जिस रास्ते पर वह आ रहा था उस रास्ते पर पड़ने वाली उसने पहली ही सड़क ले ली। चलते चलते वह एक बागीचे के पास ही आ गया।

उस बागीचे के चारों तरफ ऊँची ऊँची दीवार लगी हुई थी। दीवार में एक फाटक था। फाटक थोड़ा सा खुला हुआ था सो वह उसको खोल कर बागीचे के अन्दर आ गया। वहॉ एक कोने में एक गुलाब की एक बड़ी सी झाड़ी लगी हुई थी जिस पर बहुत सारी गुलाब की कलियॉ लगी हुई थीं।

वहॉ आ कर उसने चारों तरफ देखा तो वहॉ उसे कोई भी जीता जागता आदमी नजर नहीं आया जिससे वह एक गुलाब के फूल को तोड़ने की इजाज़त मॉग ले। सो उस बेचारे गरीब आदमी ने हाथ बढ़ा कर उसमें से एक गुलाब का फूल अपनी ज़ैलिन्डा के लिये तोड़ लिया।

हे भगवान। जैसे ही उसने डाल पर से गुलाब का फूल तोड़ा तो बड़े ज़ोर की आवाज हुई और जमीन से आग की लपटें निकलने लगीं। तुरन्त ही उसमें से एक राक्षस निकल पड़ा जिसकी शक्ल ड्रैगन जैसी थी। निकलते ही वह ज़ोर से फुँकार मारने लगा।

गुस्से के मारे वह चिल्ला कर उस आदमी से बोला — "ओ बदतमीज आदमी। यह तूने क्या किया। अब तुझे इसके लिये मरना ही होगा क्योंकि तूने मेरी गुलाब की झाड़ी को बर्बाद किया है।

वह बेचारा गरीब आदमी तो बस डर से मर ही गया। वह रोने चिल्लाने लगा और घुटनों के बल बैठ कर अपनी गलती के लिये उससे दया की प्रार्थना करने लगा।

उसने उसे बताया कि वह गुलाब उसने क्यों तोड़ा था और फिर वहॉ से उससे जाने की आज्ञा मॉगी — "मेहरबानी कर के मुझे जाने दीजिये। मेरा परिवार है। अगर मैं मरा गया तो मेरा परिवार तो बर्बाद हो जायेगा।"

पर वह राक्षस तो और बार से भी ज़्यादा नीच हो रहा था बोला — "तुमको मरना ही चाहिये। या तो मुझे वह लड़की ला कर दो जिसने तुमसे गुलाब मॅगवाया है वरना मैं तुम्हें इसी पल मार दूॅगा।"

राक्षस को प्रार्थना और रो धो कर नहीं बहलाया जा पा रहा था। वह अपने फैसले पर अटल था और उस गरीब आदमी को घर नहीं जाने दे रहा था जब तक कि वह अपनी बेटी ज़ैलिन्डा को वहॉ बागीचे में लाने के लिये हॉ न कर दे।

ज़रा सोचो कि वह गरीब आदमी अपने दिल पर कितना बड़ा पत्थर ले कर घर लौटा होगा। घर आ कर उसने अपनी दोनों बड़ी बेटियों को उनकी चीज़ें दीं और ज़ैलिन्डा को उसका गुलाब दिया पर

उसका चेहरा बिल्कुल सफेद पड़ा हुआ था जैसे वह अभी अभी कब्र में से निकल कर आया हो।

उसकी बेटियॉ उसका चेहरा देख कर डर गयीं और अपने पिता से पूछा कि क्या बात थी। वह इतना डरा हुआ क्यों था। क्या उसके साथ रास्ते में कोई बुरी घटना घटी थी।

उनके बार बार पूछने पर वह बहुत ज़ोर से रो पड़ा। उसने उनको वह सब कुछ बताया जो रास्ते में उसके साथ घटा था कि किस शर्त पर वह घर लौट सका था। अन्त में वह बोला कि या तो वह राक्षस ज़ैलिन्डा को खायेगा या फिर मुझे।

यह सुन कर दोनों बड़ी बहिनों ने अपना सारा गुस्सा ज़ैलिन्डा पर उतारा। वे बालीं — "अब देखो ज़रा इसको अब यह राक्षस के मुॅह में जायेगी। यह जो इस मौसम में गुलाब का फूल चाहती थी। पिता जी नहीं जायेंगे वह हमारे साथ ही रहेंगे। यह बेवकूफ लड़की।"

यह सब सुन कर ज़ैलिन्डा बिना किसी नाराजी के बोली — "ठीक है जिसकी वजह से यह मुसीबत आयी है वही राक्षस के पास जायेगा। उसी को उसकी कीमत चुकानी चाहिये। पिता जी मैं उस राक्षस के पास जाऊॅगी। आप मुझे बागीचे में उसके पास ले चलिये फिर जो भगवान की इच्छा।"

अगले दिन ज़ैलिन्डा का पिता दुखी हो कर ज़ैलिन्डा को बागीचे ले चला। शाम को वे लोग बागीचे पहुॅच गये।

जब वे दोनों उस दरवाजे के अन्दर घुसे तो पहले की तरह वहॉ कोई भी नहीं था पर वहॉ एक बहुत बड़ा महल खड़ा था जिसमें चारों तरफ रोशनी हो रही थी और जिसके दरवाजे खुले पड़े थे।

जब दोनों यात्री उसमें घुसे तो अचानक चार संगमरमर की मूर्तियॉ ऊपर से एक एक टार्च लिये नीचे उतरीं और उनको एक कमरे की सीढ़ियों तक साथ ले गयीं। उस कमरे में एक बहुत बड़ी मेज बिछी हुई थी और उस पर बहुत सारा और बहुत स्वादिष्ट खाना लगा हुआ था।

यात्री लोग जो बहुत भूखे थे और बिना किसी रस्मों रिवाज के उन्होंने वहॉ खाना खाया। जब उन्होंने खाना खा लिया तो वे ही मूर्तियॉ उन्हें रात के सोने के लिये दो कमरों की तरफ ले गयीं।

जब वे गुलाब की झाड़ी के पास आये तो वह अपनी पूरी बदसूरती के साथ वहॉ प्रगट हुआ। ज़ैलिन्डा तो उसको देख कर डर के मारे पीली पड़ गयी। उसके हाथ पैर कॉपने लगे पर राक्षस उसको अपनी अंगारे जैसी ऑखों से बड़े ध्यान से देखता रहा।

फिर वह आदमी से बोला — "मुझे खुशी है कि तुमने अपना वायदा पूरा किया। मैं सन्तुष्ट हूॅ। अब तुम अपने घर जाओ और इस नौजवान लड़की को मेरे पास छोड़ जाओ।"

यह सुन कर आदमी तो बस मर ही गया। ज़ैलिन्डा भी वहॉ ऑखों में ऑसू भरे खड़ी रही। कोई प्रार्थना तो उसकी काम करेगी नहीं। वह राक्षस तो पत्थर बना बैठा रहा।

आदमी को अपनी प्यारी ज़ैलिन्डा को राक्षस के पास छोड़ कर वापस जाना ही पड़ा। जब राक्षस ज़ैलिन्डा के साथ अकेला रह गया तो उसने उसको सहलाना और मीठी मीठी बातें करना शुरू किया। वह अपने आपको बहुत सभ्य दिखाने की कोशिश कर रहा था।

उसको भूलने का तो कोई खतरा था ही नहीं। उसने यह भी देख लिया था कि ज़ैलिन्डा को किसी चीज़ की जरूरत नहीं थी। वह उसको रोज बागीचे ले जाता था और उससे पूछता कि क्या वह उससे प्यार करती थी। क्या वह उसकी पत्नी बनेगी।

वह लड़की रोज उसको वही जवाब देती "सर मैं आपको पसन्द तो करती हूँ पर आपसे शादी नहीं करूँगी।" इस बात पर राक्षस कुछ दुखी हो जाता और उसको सहलाना और ध्यान दोगुना कर देता।

वह कहता — "देखो ज़ैलिन्डा अगर तुम मुझसे शादी कर लोगी तो तुम्हारे साथ बहुत अच्छी अच्छी बातें घटेंगी। वे अच्छी बातें क्या होंगी यह मैं तुम्हें अभी नहीं बता सकता जब तक तुम मेरी पत्नी नहीं बन जातीं।"

ज़ैलिन्डा हालाँकि उस जगह से कोई असन्तुष्ट नहीं थी और जिस तरीके से उसके साथ रानी जैसा बर्ताव किया जा रहा था उससे भी उसको कोई ऐतराज नहीं था पर वह उस राक्षस से शादी करने की बात मन में सोच भी नहीं सकती थी क्योंकि वह बहुत ही

बदसूरत था और राक्षस जैसा लगता था। सो वह उसकी प्रार्थनाओं का जवाब भी वैसे ही देती थी।

एक दिन राक्षस ने ज़ैलिन्डा को जल्दी में अपने पास बुलाया और उससे कहा — "देखो ज़ैलिन्डा सुनो। अगर तुम मुझसे शादी करने के लिये राजी नहीं होतीं तो इसका मतलब यह है कि फिर तुम्हारे पिता को मरना ही चाहिये।

वह बीमार है और दुख से मर रहा है। तुम उसको फिर कभी देख भी नहीं पाओगी। तुम अपने आप देख लो कि मैं तुमसे सच बोल रहा हूँ या नहीं।" यह कह कर उसने एक जादुई शीशा निकाला और उसमें उसके पिता को बीमार दिखा दिया।

यह दृश्य देख कर ज़ैलिन्डा बहुत जोर से रो पड़ी और बोली — "हे भगवान बचाओ मेरे पिता को बचाओ। उनके मरने से पहले मुझे अपने पिता से मिलने दो। मैं वायदा करती हूँ कि मैं तुम्हारी वफादार और हमेशा के लिये पत्नी रहूँगी और वह भी अभी से। मेहरबानी कर के मेरे पिता को बचाओ।"

जैसे ही ज़ैलिन्डा ने यह कहा तो वह राक्षस एक बहुत सुन्दर नौजवान में बदल गया। ज़ैलिन्डा को इस बदलाव को देख कर बहुत आश्चर्य हुआ।

नौजवान ने उसका हाथ पकड़ा और बोला — "सुनो ज़ैलिन्डा। मैं औरेन्जेज़ के राजा[15] का बेटा हूँ। एक बूढ़ी जादूगरनी ने मुझे छू

[15] The King of Oranges

कर इस राक्षस में बदल दिया था और इस गुलाब की झाड़ी में तब तक छिपे रहने का शाप दिया था जब तक कि कोई लड़की मुझसे शादी करने के लिये तैयार न हो जाये।"

बाकी बची इस कहानी में कोई ऐसी मजेदार बात नहीं है। ज़ैलिन्डा और उसका पति पति के माता पिता से शादी की इजाज़त लेने जाते हैं। वे इस शादी के लिये मना कर देते हैं तो यह जोड़ा वहॉ से भाग जाता है और एक ओगरे और उसकी पत्नी के चंगुल में फॅस जाता है जहॉ से वे फिर भाग जाते हैं।

इस कहानी की एक खास चीज़ कहानी के इस रूप में से गायब है पर वह दूसरी कहानियों में पायी जाती है। सिसिली में जो इसका रूप कहा सुना जाता है[16] उसमें राक्षस रोज़ीना को अपने पिता के घर जाने देता है पर उसको चेतावनी देता है कि अगर वह नौ दिनों के अन्दर अन्दर वापस नहीं आयी तो वह मर जायेगा। वह उसको एक अॅगूठी भी देता है जो इस घटना के बीच काली पड़ जायेगी।

नौ दिन गुजर जाते हैं और जब रोज़ीना उस अॅगूठी की तरफ देखती है तो वह उसको बिल्कुल काली दिखायी देती है। वह जल्दी ही वापस लौटती है तो उसको गुलाब की झाड़ी में ही अपनी आखिरी सॉसें लेते हुए पाती है।

महल में उसको एक मरहम मिल जाता है जिसको वह उसके शरीर पर चार दिन तक मलती रहती है और वह राक्षस बच जाता है। पिछली कहानी की तरह से इसमें यह राक्षस तब अपने असली रूप में आता है जब रोज़ीना उससे शादी करने को तैयार होती है।

एक दूसरे रूप में राक्षस ऐलिज़ाबैथ को इस शर्त पर अपने मरते हुए पिता को देखने के लिये जाने देता है कि वह अपने बाल नहीं नोचेगी। पर जब उसका पिता मरता है तो दुख में वह यह वायदा भूल जाती है और अपने बाल नोच लेती है। फिर जब वह वापस आती है तो राक्षस उसे कहीं दिखायी नहीं देता। वह उसको यह कहते कहते ढूँढती रहती है —

[16] "The Emperess Rosina" – Sicilian version

ओ मेरे भयानक जानवर अगर मैं तुझे ज़िन्दा पा लूँगी
तो मैं तेरे जानवर होते हुए भी तुझसे शादी कर लूँगी

आखिर वह उसे मिल जाता है और अपने आदमी के रूप में आ जाता है। इस तरह की बहुत कहानियाँ हैं जिनमें एक पिता अपनी बेटियों से यह पूछता है कि वह उनके लिये क्या ले कर आये। और उसकी सबसे छोटी बेटी की माँग उसकी बेटी को राक्षस के पास ले जाती है।

करीब करीब इसी तरह की कुछ कहानियाँ हैं "जानवर बच्चों"[17] की। जानवर बच्चा अक्सर कर के एक बिन बच्चे की स्त्री की बच्चे को पाने की एक बहुत ही गहरी इच्छा होने पर पैदा होता है कि उसके एक बच्चा हो जाये – बेटा या बेटी चाहे वह उस जानवर जैसा ही क्यों न हो जिसको वह उस समय देख रही होती है।

जब यह जानवर बच्चा बड़ा हो जाता है तो उसके माता पिता उसके लिये पत्नी ढूँढने में बहुत मुश्किल होती है। दो या तीन बहिनें ऐसी शादी कर के अपनी असन्तुष्टि दिखाती हैं और मारी जाती हैं। तीसरी बहादुर होती है और अपने पति को जादू से छुड़ा लेती है – यह वह उसकी खाल जला कर करती है जिसको वह जब चाहे उतार सकता था और पहन सकता था। इस तरह की सबसे ठीक कहानी है "साँप"[18]।

इसी के साथ एक और तरह की कहानी है जिनमें बच्चा इच्छा से नहीं बल्कि अपने शाप की वजह से ही जानवर के रूप में पैदा होता है।

चौथी तरह की वे कहानियाँ हैं जो ऊपर दी गयी पहली और तीसरी तरह की कहानियों से केवल थोड़ी सी मिलती जुलती हैं। इन कहानियों में नायिका और नायक बिछड़ जाते हैं और फिर नायिका अपने पति को ढूँढने जाती है। ये नायक और पति अक्सर जानवर के रूप में होते हैं।

इस तरह की एक कहानी जो हमने यहाँ चुनी है वह अब आगे दी जाती है – "राजा बीन"।[19]

[17] Animal Children. This is Hahn's Formula No 7.
[18] "The Serpent". By Giuseppe. Pitre. (Tale No 56)
[19] King Bean. Tale No 3. From Venice. By Bernoni (Tale No XVII)

3 राजा बीन[20]

एक बार की बात है कि एक आदमी था जिसकी तीन बेटियॉ थीं। एक बार पिता की सबसे छोटी बेटी ने अपने पिता को अपने कमरे में बुलाया और उससे कहा कि वह राजा बीन के पास जाये और उससे पूछे कि क्या वह उसको अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार कर लेगा।

गरीब बूढ़ा बोला — "बेटी तू मुझे वहॉ जाने के लिये कह तो रही है पर मैं वहॉ जा कर करूँगा क्या। मैं तो पहले वहॉ कभी गया ही नहीं।"

लड़की बोली — "कोई बात नहीं पिता जी। मेरी इच्छा है कि आप मेरी बात सुनें और वहॉ जायें।"

सो वह बूढ़ा वहॉ से चल दिया। क्योंकि वह नहीं जानता था कि राजा कहॉ रहता था सो वह रास्ते में उसका पता पूछता चला जा रहा था और लोग उसको रास्ता बताते जा रहे थे। आखिर वह वहॉ पहुँच ही गया।

जब वह राजा के सामने पहुँचा ताप बोला — "मैं योर मैजेस्टी का दास हूँ।"

राजा ने पूछा — "कहो क्या बात है ओ भले बूढ़े आदमी।"

---

[20] King Bean. Tale No 3.

तब उसने राजा को बताया कि उसकी बेटी उसके प्रेम में पड़ी हुई है और उससे शादी करना चाहती है।

राजा बोला — "जब उसने मुझे देखा तक नहीं तो वह मुझसे प्यार ही कैसे करती है।"

लड़की का पिता बोला — "वह तो रो रो कर मरी जा रही है और अब वह और ज़्यादा सहन नहीं कर सकती।"

राजा बोला — "लो यह सफेद रूमाल ले जाओ। उससे कहना कि वह अपने ऑसू इस रूमाल से पोंछ ले।"

बूढ़े ने राजा से रूमाल और राजा का सन्देश दोनों लिये और जा कर अपनी बेटी को दे दिये। बेटी ने कहा कि तीन चार दिन बाद उसको फिर वहॉ जाना चाहिये और उससे कहना कि जब तक वह मुझसे शादी नहीं कर लेते मैं या तो अपने आपको मार लूँगी या फिर फॉसी पर लटक जाऊँगी।

बूढ़ा तीन चार दिन बाद वहॉ फिर गया और राजा से बोला — "योर मैजेस्टी। मेहरबानी कर के मेरे ऊपर एक कृपा और कीजिये कि आप मेरी बेटी से शादी कर लीजिये। अगर आप ऐसा नहीं करेंगे तो वह ज़रूर ही कुछ तमाशा खड़ा कर देगी।"

राजा बोला — "देखो यहॉ मेरे पास कितनी सारी सुन्दर सुन्दर लड़कियों की तस्वीरें पड़ी हुई और मुझे इनमें से कोई भी नहीं जॅच रही है।"

पिता बोला — "उसने मुझसे आपसे यह कहने के लिये भी कहा है कि अगर आपने उससे शादी नहीं की तो वह या तो अपने आपको मार लेगी या फिर फॉसी लगा लेगी।"

यह सुन कर राजा ने बूढ़े को एक चाकू दिया और कहा कि यह लो चाकू लो अगर वह अपने आपको मारना चाहे तो और फिर एक रस्सी दी और कहा कि यह लो रस्सी लो अगर वह अपने को फॉसी लगाना चाहे तो।

बूढ़ा इस सन्देश को अपनी बेटी के पास ले गया तो बेटी ने कहा कि उसको राजा के पास एक बार फिर जाना चाहिये और उसे तब तक उससे यह कहते रहना चाहिये जब तक वह राजी न हो जाये।

बूढ़ा एक बार फिर घर लौटा और अपने घुटनों पर झुक कर फिर बोला — "मेहरबानी कर के मेरे ऊपर कृपा कीजिये। मेरी बेटी को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार कर लीजिये। मना मत कीजिये क्योंकि वह बेचारी लड़की का अब धीरज छूट रहा है।"

राजा बोला — "ओ भले बूढ़े उठो। मैं तैयार हूँ। मुझे तुम्हारी इन लम्बी लम्बी यात्राओं के लिये अफसोस है। अब तुम ऐसा करो कि अपनी बेटी से तीन बर्तन तैयार करने के लिये कहो जिसमें एक में दूध और पानी भरा हो। दूसरे में केवल दूध भरा हो और तीसरे में गुलाबजल भरा हो।

और लो यह एक बीन है। जब भी वह मुझसे बात करना चाहे तो वह अपने छज्जे पर जाये और इस बीन को खोले मैं आ जाऊँगा।"

बूढ़ा बीन और इस सन्देश को ले कर घर लौट आया। इस बार वह पहले से ज़्यादा सन्तुष्ट था। उसने अपनी बेटी से कहा कि अगर वह राजा बीन से शादी करना चाहती है तो उसको यह सब करना ही चाहिये।

उसकी बेटी ने तुरन्त ही तीन बर्तन तैयार किये और अपने छज्जे पर पहुँच कर उस बीन को खोला तो उसने देखा कि कोई चीज़ उड़ती हुई उसकी तरफ चली आ रही थै। वह उसके छज्जे से हो कर उसके कमरे में आ गयी।

उसने सबसे पहले दूध और पानी भरे बर्तन में डुबकी लगायी फिर वह केवल दूध भरे बर्तन में नहायी उसके बाद गुलाबजल में डुबकी लगा कर एक बहुत ही सुन्दर नौजवान के रूप में आ कर खड़ी हो गयी। इतना सुन्दर नौजवान तो पहले कभी देखा नहीं गया था। उसने लड़की को बहुत प्यार किया। और फिर उड़ गया।

कुछ समय बाद उसकी बहिनों ने देखा कि उनकी बहिन तो अक्सर ही कमरे में बन्द रहती थी तो उसकी सबसे बड़ी बहिन ने कहा — "यह हर समय कमरे में बन्द क्यों रहती है।"

उसकी दूसरी बहिन ने कहा — "क्योंकि उसके पास राजा बीन है जो उससे प्यार करता है।"

बड़ी बहिन बोली — "ज़रा इन्तजार करो जब तक यह चर्च जाती है तब हम देखेंगे कि इसके कमरे में क्या है।"

एक दिन सबसे छोटी बहिन चर्च गयी तो दोनों उसके कमरे में अन्दर चली गयीं। वहॉ पहुँच कर उन्होंने देखा कि तीन बर्तन रखे हुए हैं। वे बोलीं कि इन तीन बर्तनों में राजा बीन नहाता है।

बड़ी बहिन बोली "चलो और देखते हैं। चलो भंडारघर में से एक टूटा हुआ शीशा ढूँढते हैं और थोड़ा थोड़ा सब बर्तनों में रखते हैं। जब राजा इनमें नहायेगा तो इनसे उसका शरीर कट जायेगा।" ऐसा कर के वे वहॉ से चली गयीं और कमरे को वैसा ही छोड़ गयीं।

जब छोटी बहिन घर वापस आयी तो उसने चाहा कि वह राजा बीन से बात करे सो वह छज्जे पर पहुँची और अपनी बीन खोली। तुरन्त ही कोई चीज़ अन्दर आयी और उसने तीनों बर्तनों में डुबकी लगायी। उन बर्तनों में पड़े टूटे हुए शीशे के टुकड़ों से उसका शरीर घायल हो गया। सो जब वह गुलाबजल से नहा कर बाहर निकला तो वह उड़ गया।

लड़की उसको देखने के लिये बाहर आयी तो उसने देखा कि जहॉ जहॉ से वह उड़ कर गया था वहॉ वहॉ खून की धारा सी बह गयी थी। तब उसने बर्तन देखे तो देखा कि तीनों बरतनों में खून था। वह बड़े ज़ोर से चिल्ला पड़ी — "मुझे धोखा दिया गया है। मुझे धोखा दिया गया है।"

वह अपने पिता के पास गयी और उनसे कहा कि उसकी बहिनों ने उसे धोखा दिया है। अब वह अपने पति को ढूँढ कर उसको ठीक करना चाहती है। सो वह चल दी। वह अभी बहुत दूर नहीं गयी थी कि वह एक जंगल में पहुँच गयी।

वहाँ उसने एक छोटा सा घर देखा जिसमें एक बहुत छोटा सा दरवाजा था। उसने जा कर दरवाजा खटखटाया तो अन्दर से किसी ने पूछा "क्या तुम ईसाई हो।" लड़की बोली "हाँ।"

दरवाजा खुल गया और उसने देखा कि वहाँ तो एक पवित्र साधु खड़ा था। साधु ने उससे पूछा — "भगवान तुम्हारे भला करे तुम यहाँ कैसे आयीं। कुछ ही देर में यहाँ जादूगरनियाँ[21] आने वाली हैं वे तुम्हारे ऊपर जादू डाल सकती हैं।"

लड़की बोली — "बाबा। मैं राजा बीन को ढूँढ रही हूँ जो बीमार है।"

साधु बोला — "मैं उसके बारे में कुछ नहीं जानता। तुम उस पेड़ पर चढ़ जाओ। जादूगरनियाँ यहाँ बहुत जल्दी ही आने वाली हैं। हो सकता है कि तुमको उनसे कुछ पता चल जाये। अगर उसके बाद भी तुमको कुछ चाहिये तो तुम फिर मेरे पास आ सकती हो मैं तुम्हें दे दूँगा।"

[21] Translated for the word "Witches"

यह सुन कर वह पेड़ पर चढ़ गयी। कुछ ही पल बाद उसने कुछ शोर सुना और किसी को चिल्लाते सुना "हम यहॉ हैं हम यहॉ हैं।"

सारी जादूगरनियॉ वहीं जंगल के बीच में बैठ गयीं और कहने लगीं — "वह लॅगड़ी तो यहॉ नहीं है। वह कलमुँही लॅगड़ी कहॉ गयी।"

तभी किसी ने कहा — "वह तो वह रही। वह आ रही है।"

तभी दूसरी बोली — "ओ कलमुँही लॅगड़ी तू कहॉ रह गयी थी।"

लॅगड़ी बोली — "शान्ति रखो शान्ति रखो। मैं तुम्हें अभी बताती हूँ कि मैं कहॉ रह गयी थी। पर ज़रा रुको। मैं इस पेड़ को हिला कर देख लूँ कि यहॉ कोई बैठा तो नहीं है।"

लड़की ने पेड़ की डाल इतनी मजबूती से पकड़ रखी थी कि वह उसके हिलाने पर भी उस पेड़ से नीचे नहीं गिर सकी। लॅगड़ी ने जब देखा कि उस पेड़ पर कोई नहीं है तो वह अपनी दूसरी साथिनों के पास आ कर बैठ गयी और बोली।

"तुम लोग जानना चाहते हो? राजा बीन बस अब केवल दो घंटे का मेहमान है।"

एक जादूगरनी ने पूछा — "लेकिन उसे हुआ क्या?"

लॅगड़ी बोली — "उसकी एक पत्नी थी। उसने तीनों बर्तनों में कॉच के टूटे हुए टुकड़े भर दिये थे तो उसने जब उन बर्तनों में

डुबकी लगायी तो वे कॉच के टुकड़े उसके सारे शरीर में चुभ गये।"

दूसरी जादूगरनी ने पूछा — "क्या इसका कोई इलाज नहीं है?"

लॅगड़ी बोली — "है तो पर बहुत मुश्किल है।"

दूसरी ने पूछा — "क्या चाहिये उसके लिये?"

लॅगड़ी बोली — "तो सुनो कि उसके लिये क्या चाहिये। हममें से एक को मरना होगा। फिर उसका खून एक बर्तन में रख ले। फिर उसमें यहॉ जो फाख्ता उड़ रहे हैं उनमें से किसी एक का खून मिला दे। दोनों को अच्छी तरह मिला कर उसको गर्म कर ले। फिर यह खून उस राजा के सारे शरीर पर मल दे।

इसके साथ साथ एक और चीज़ भी जरूरी है। तुम सामने वह पत्थर देख रही हो। उसके नीचे एक बोतल रखी है जिसमें पानी है। पत्थर को हटा कर उस बोतल को निकाल कर उसका पानी उसके शरीर पर डालना चाहिये। इससे उसके शरीर के सारे कॉच के टुकड़े बाहर आ जायेंगे। पॉच मिनट में वह बिल्कुल ठीक हो जायेगा।"

उसके बाद जादूगरनियों ने खूब खाया पिया और थक कर बेहोश हो कर वहीं जमीन पर लेट कर सो गयीं। लड़की ने जब देखा कि वे गहरी नींद सो गयीं हैं तो वह बिना आवाज किये पेड़ पर से नीचे उतरी और साधु के घर गयी। उसने उससे एक बर्तन एक चाकू और एक बोतल मॉगी।

साधु ने वे तीनों चीज़ें ला कर उसको दे दीं। उसने उसके लिये एक फाख्ता पकड़ कर भी मार दी और उसका खून बर्तन में भर दिया।

लड़की को यह तो नहीं पता था कि उसे किस जादूगरनी को मारना है पर फिर उसने तय किया कि वह उसी लॅगड़ी जादूगरनी को मारेगी जो यह सब बातें कर रही थी। उसने उसको मार कर उसका खून भी बर्तन में भर लिया।

दोनों खूनों को मिला कर उसने उन्हें गर्म किया। फिर उसने पत्थर हटा कर पानी की बोतल निकाली। उसके पानी से अपनी बोतल भर ली। फिर वह वापस साधु के पास आयी और उसे बताया कि उसने क्या किया था।

साधु ने उसको एक डाक्टर की पोशाक दी। उसने वह पोशाक पहनी और राजा बीन के महल चल दी। वहॉ पहुॅच कर उसने पहरेदारों से कहा कि वह उसको अन्दर जाने दें क्योंकि वह राजा को ठीक करने के लिये वहॉ आयी थी।

पहरेदारों ने पहले तो उसे अन्दर जाने से रोका पर देखा कि वह तो अपने इरादों की बहुत ही पक्की थी सो उन्होंने उसको अन्दर जाने की इजाज़त दे दी।

राजा की मॉ उसके पास दौड़ी दौड़ी आयी और उससे बोली — "मेरे अच्छे डाक्टर। अगर तुम मेरे बेटे को अच्छा कर दोगे तो मैं तुम्हें राज सिंहासन और अपना ताज दोनों दे दूॅगी।"

डाक्टर बोला — "मैं बहुत दूर से जल्दी में आया हूँ और इन्हें ठीक करूँगा।"

कह कर वह रसोईघर में गया बर्तन आग पर रखा। फिर कमरे में वापस आया क्योंकि राजा की ज़िन्दगी अब कुछ मिनटों की बची थी। उसने वह खून उसके सारे शरीर पर मल दिया फिर उसके ऊपर बोतल का पानी डाल दिया। उसके शरीर से सारा कॉच बाहर निकल आया और राजा बीन पॉच मिनट में बिल्कुल ठीक हो गया।

राजा बोला — "यह लो मेरा ताज ओ डाक्टर। मैं इसको तुम्हारे सिर पर रखना चाहता हूँ।"

डाक्टर ने पूछा — "योर मैजेस्टी इस मुसीबत में फॅसे कैसे।"

राजा बोला — "यह सब मेरी पत्नी की वजह से हुआ। मैं उसके पास गया था। उसने मेरे लिये तीन बर्तन तैयार कर के रखे थे। एक दूध और पानी से भरा दूसरा दूध से भरा और तीसरा गुलाबजल भरा। उन तीनों में उसने टूटे कॉच के टुकड़े डाल दिये थे। वे मेरे शरीर में घुस गये थे।"

डाक्टर बोला — "क्या वह आपकी पत्नी थी जिसने आपको साथ यह धोखा किया। कहीं ऐसा तो नहीं कि यह काम किसी और ने किया हो।"

राजा बोला — "यह तो नामुमकिन है क्योंकि उसके कमरे में कोई और घुसता ही नहीं था।"

डाक्टर ने पूछा — "और तब आप उसके साथ क्या करेंगे अगर वह आपके सामने हो।"

राजा बोला — "मैं उसे चाकू से मार दूँगा।"

डाक्टर बोला — "आप ठीक कह रहे हैं। क्योंकि अगर यह सच है कि उसने ऐसा ही किया है तो वह जरूर ही मौत के काबिल है।"

यह कह कर डाक्टर वहाँ से चलने के लिये तैयार हो गया तो राजा की माँ बोली — "नहीं नहीं। यह कहना ठीक नहीं था। मेरे बेटे की जान बचा कर तुम यहाँ से ऐसे ही नहीं जा सकते। अभी तुम यहीं रहो और मैं भी यही चाहती हूँ कि तुम यहाँ रुको। उस वायदे के अनुसार जो मैंने तुमसे किया था कि मैं अपना ताज तुम्हें दे दूँगी।"

डाक्टर बोला — "मुझे तो बस एक ही चीज़ चाहिये।"

माँ बोली — "डाक्टर बस बोल दो कि तुम्हें क्या चाहिये। मैं तुम्हें वही दे दूँगी।"

डाक्टर बोला — "मेरी इच्छा है कि मेरी एक हथेली पर राजा मेरा अपना नाम और मेरे परिवार का नाम लिख दें और मेरी दूसरी हथेली पर अपना नाम और अपने परिवार का नाम लिख दें।"

राजा ने वैसा ही किया। डाक्टर बोला — "अब मुझे कुछ जगह और जाना है। वहाँ का काम खत्म कर के मैं वापस आता हूँ।"

कह कर वह वहॉ से चला आया। वह अपने घर आया और तीनों बर्तनों का पुराना दूध पानी गुलाबजल सब फेंक दिया। उसने तीनों बर्तनों को ताजा दूध पानी और गुलाबजल से भरा। फिर वह बाहर छज्जे पर गयी और बीन खोली।

राजा को लगा कि जैसी ने उसका दिल खोल दिया हो। उसने अपना खंजर लिया और अपनी पत्नी को मारने चल दिया। लड़की ने राजा बीन के हाथ में खंजर देखा तो उसने अपने हाथ उठा दिये।

राजा ने उसकी हथेलियों पर अपना और अपनी पत्नी का नाम अपनी लिखावट में लिखा देखा तो उसने अपना खंजर फेंक दिया। उसने तीनों बर्तनों में डुबकी लगायी और अपनी पत्नी को गले से लगा लिया।

वह बोला — "अगर तुमने मुझे इतना नुकसान पहुॅचाया था तो वह भी तो तुम्हीं हो जिसने मुझे ठीक किया है।"

लड़की बोली — "वह मैं नहीं थी। वह तो मेरी बहिनें थीं जिन्होंने मुझे धोखा दिया।"

राजा बोला — "अगर ऐसा है तो चलो अब तुम जल्दी से मेरे घर चलो। हम वहॉ चल कर शादी कर लेंगे।"

जब वह राजा के घर पहुॅची तो उसने उनको सब बातें बतायीं और उनको अपने हाथ दिखाये जिन पर उसका और राजा का नाम लिखा हुआ था। राजा के माता पिता ने उसे गले लगाया और

उसकी शादी की रस्म की। वह और राजा जब तक ज़िन्दा रहे वे एक दूसरे से बहुत प्यार करते रहे।

अगली किस्म की कहानी वह है जिसमें कोई ईर्ष्यालु सम्बन्धी, या तो सौतेली बहिनें या सास, लड़की का नया पैदा हुआ बच्चा चुरा लेती हैं। बाद में उनको वापस लाया जाता है। कोई आदमी या परिवार जिसके अपना कोई बच्चा नहीं है उनको वापस ले कर आता है। या फिर मॉ पर ही उस बच्चे की हत्या का इलजाम लगा कर उसे सजा दी जाती है। बाद में उसके बच्चे उसको उसका पुराना दर्जा दिलवाते हैं। बच्चों का पिता ही ये बच्चे ढूँढता है। यह कहानी जियूसैप्पे पित्रे[22] ने लिखी है और थोड़े से छोटे रूप में यहॉ दी जा रही है।

[22] Giuseppe Pitre. Story No 36.

4 नाचता पानी गाता पेड़ और बोलती चिड़िया[23]

एक बार की बात है कि एक जड़ी बूटी इकट्ठा करने वाला था जिसके तीन बेटियॉ थीं जो सूत कात कर अपना गुजारा करती थीं। एक दिन उनका पिता भगवान को प्यारा हो गया और अब वे दुनियॉ में अकेली रह गयीं।

उस देश के राजा की एक आदत थी कि वह रोज रात को यह जानने के लिये अपने शहर की सड़कों के चक्कर काटा करता था कि लोग उसके बारे में क्या बातें करते हैं।

एक रात वह चक्कर काटते काटते उस घर के पास से गुजरा जहॉ ये तीनों लड़कियॉ रहती थीं। उसने सुना कि वे तीनों किसी बात पर बहस कर रही थीं।

सबसे बड़ी लड़की कह रही थी कि अगर वह शाही बटलर की पत्नी होती तो वह केवल एक गिलास पानी में से ही सब दरबारियों को पानी पिला देती और फिर भी उसमें कुछ पानी बच जाता।

दूसरी बोली "अगर मैं शाही कपड़ों की देखभाल करने वाली होती तो मैं केवल एक कपड़े में से ही सबको कपड़े पहना देती और फिर भी उसमें से मेरे पास कुछ बच जाता।"

[23] The Dancing Water, the Singing Apple and the Speaking Tree. Tale No 4.

तीसरी बोली — "अगर मैं राजा की पत्नी होती तो मैं उसको तीन बच्चे देती - दो बेटे सेब के साथ और एक बेटी अपनी भौंह पर तारे के साथ।"

राजा ने यह सुना और अपने महल वापस चला गया। अगले दिन उसने तीनों लड़कियों को बुलवाया और कहा — "डरो नहीं। पर तुम मुझे एक बार फिर वह बात बताओ जो तुमने कल रात कही थी।"

सबसे बड़ी लड़की ने वह दोहरा दिया जो उसने कल रात कहा था। राजा ने एक गिलास पानी मँगवाया और उसे हुक्म दिया कि वह अपनी बात साबित करे। लड़की ने गिलास अपने हाथ में लिया और सब दरबारियों को पीने को दिया। सबने खूब पानी पिया फिर भी उसके गिलास में थोड़ा सा पानी बच रहा। राजा ने अपने बटलर को बुलाया और उसको बटलर को दे दिया।

अब दूसरी लड़की की बारी थी। उसने उससे भी जो कुछ पिछली रात उसने कहा था वह उससे दोहराने के लिये कहा तो उसके लिये राजा ने एक कपड़ा मँगवा दिया। उसने सब नौकरों के लिये उसमें से कपड़े काटे और उसके बाद भी उसके पास कुछ कपड़ा बच गया। राजा ने शाही पोशाकों के देखभाल करने वाले को बुलवाया और उसे उसे थमा दिया।

अब तीसरी लड़की की बारी थी। लड़की बोली — "योर मैजेस्टी। मैंने कहा था कि मैं अगर राजा की पत्नी बनूँगी तो मैं

उसको तीन बच्चे दूँगी – दो बेटे हाथ में सेब लिये और एक बेटी जिसकी भौंह पर सितारा होगा।"

राजा बोला — "अगर यह सच है तो तुम मेरी पत्नी बनोगी। और अगर यह झूठ निकला तो तुमको मरना होगा।" कह कर उसने तुरन्त ही उससे शादी कर ली।

बहुत जल्दी ही रानी की बहिनें रानी से ईर्ष्या करने लगी। दोनों ने आपस में बात की "देखो यह तो रानी बनी बैठी है और हम इसके नौकर हैं।" सो उन्होंने उससे ईर्ष्या करने शुरू कर दी।

कुछ समय बाद रानी को बच्चे की आशा हुई। तो बच्चे के जन्म से कुछ महीने पहले ही लड़ाई छिड़ गयी सो उसको महल से बाहर लड़ाई के लिये जाना पड़ा।

जाने से पहले वह कह गया कि अगर रानी के तीन बच्चे हों – दो बेटे हाथ में सेब लिये और एक बेटी अपनी भौंह पर सितारा लिये हुए तो उनकी मॉ की रानी की तरह से इज़्ज़त की जाये।

और अगर ऐसा नहीं है तो इस बात की खबर उसको दी जाये। वह बतायेगा कि उसके नौकरों को क्या करना है। ऐसा कह कर वह वहॉ से चला गया।

जब रानी ने अपने वायदे के अनुसार वैसे ही तीन बच्चों को जन्म दिया तो ईर्ष्या की वजह से उसकी बहिनों ने यह कह दिया कि उसने तो तीन कुत्तों के बच्चों को जन्म दिया है। राजा ने वापस

लिखा कि रानी की दो हफ्ते तक देखभाल की जाये फिर उसे ट्रैडमिल में डाल दिया जाये।

इस बीच आया ने तीनों बच्चों को उठाया और उन्हें घर के बाहर ले गयी। उसने सोचा कि वह उनको बाहर कहीं छोड़ देगी और उनको कुत्ते खा जायेंगे। सो वह उनको बाहर छोड़ कर चली गयी।

जब वे वहॉ पड़े हुए थे तो वहॉ से तीन परियॉ गुजर रही थीं। उन्होंने तीनों बच्चों को देखा तो उनके मुँह से निकला — "अरे कितने सुन्दर बच्चे हैं।" दूसरी परी बोली — "हम इन बच्चों को क्या भेंट दें।"

एक और परी बोली — "मैं इनको एक ऐसी हिरनी देती हूँ जो इनका लालन पालन करेगी।"

एक परी बोली — "मैं इनको एक ऐसा बटुआ देती हूँ जो कभी पैसे से खाली नहीं होगा।"

तीसरी परी बोली — "और मैं इनको एक ऐसी अँगूठी देती हूँ जो जब इन पर कोई मुसीबत आयेगी तो वह अपना रंग बदल लेगी।"

सो हिरनी ने बच्चों की उनके बड़े होने तक देखभाल की। जब वे बड़े हो गये तो वह परी आयी जिसने उनको इनकी देखभाल करने के लिये हिरनी दी थी और बोली — "अब तुम लोग बड़े हो गये हो तो अब तुम लोग यहॉ नहीं रह सकते।"

तो बड़ा भाई बोला — "ठीक है। मैं शहर में जा कर अपने लिये कोई मकान देखता हूँ।"

हिरनी बोली — "अपना ध्यान रखना और तुम लोग अपना घर शाही महल के सामने ही लेना।"

सो वे सब शहर चले गये और वहाँ पहुँच कर उन्होंने शाही महल के सामने ही एक घर ले लिया। उन्होंने उस घर को इस तरह से सजाया जैसे वह किसी शाही आदमी का महल हो।

जब उनकी मौसियों ने उनको देखा तो वे तो हक्का बक्का रह गयीं कि ये तो अभी ज़िन्दा हैं। तो ज़रा उनका डर तो देखो। उनको किसी तरह गलती नहीं लग सकती थी। ये वे ही बच्चे थे क्योंकि उनके हाथ में सेब थे और लड़की की भौंह पर सितारा था।

उन्होंने तुरन्त ही आया को बुलाया और उससे पूछा — "इसका क्या मतलब है। क्या हमारे भानजे और भानजी अभी ज़िन्दा हैं।"

आया ने खिड़की से बाहर झाँक कर देखा और दोनों भाइयों को जाते हुए देखा। वह उनके घर उनसे मिलने गयी। वह घर में घुसी और बोली — "कैसी हो मेरी बच्ची। क्या तुम खुश हो। तुम्हारे पास तो सब कुछ है। पर क्या तुम्हें मालूम है कि खुश रहने के लिये क्या बहुत जरूरी है। वह है नाचता पानी। अगर तुम्हारे भाई तुम्हें बहुत प्यार करते हैं तो वे तुम्हें नाचता पानी जरूर ला कर देंगे।"

इतना कह कर वह दो पल रुकी फिर वहाँ से चली गयी।

लड़की के दोनों भाइयों में से जब एक भाई वापस घर आया तो लड़की ने उससे कहा — "भैया अगर तुम मुझे प्यार करते हो तो मुझे नाचता पानी ला कर दो।"

भाई तैयार हो गया। अगले दिन ही उसने अपना घोड़ा कसा आर उस पर सवार हो कर चल दिया। रास्ते में उसको एक साधु मिला तो उसने पूछा — "ओ घुड़सवार किधर जा रहे हो।"

लड़के ने जवाब दिया — "मैं नाचता पानी लेने जा रहा हूँ।"

साधु बोला — "मेरे बेटे तुम अपनी मौत के पास जा रहे हो। पर तुम तब तक चलते जाना जब तक तुम्हें मुझसे ज़्यादा बूढ़ा साधु न मिल जाये।"

सो वह आगे चल दिया और फिर उसे एक और बूढ़ा मिला। उसने भी उस लड़के से वही सवाल पूछा। बताने पर उसने उससे भी यही कहा कि वह तब तक चलता जाये जब तक कि उसको एक और बूढ़ा साधु न मिल जाये जो उससे भी बूढ़ा हो।

वह वहाँ से भी चल दिया तो रास्ते में उसे तीसरा साधु मिला जो पहले दोनों साधुओं से ज़्यादा बूढ़ा था। उसकी सफेद दाढ़ी थी जो उसके पैरों तक लटक रही थी। उसने उससे कहा कि "तुम उस पास वाले पहाड़ पर चढ़ जाओ। उसकी चोटी पर तुमको एक बहुत बड़ा मैदान मिलेगा जहाँ एक घर बना होगा जिसका एक बहुत सुन्दर दरवाजा होगा।

उस दरवाजे से पहले वहॉ चार बड़े शरीर वाले आदमी[24] खड़े होंगे। उनके हाथों में तलवार होगी। ध्यान रखना गलती नहीं करना क्योंकि अगर तुमने गलती की तो समझ लो बस तुम्हारा अन्त हो गया।

जब वे बड़े शरीर वाले लोग अपनी ऑखें बन्द कर लें तब उस मकान के अन्दर नहीं घुसना। जब वे अपनी ऑखें खोल लें तब उस मकान के अन्दर घुसना।

तुम फिर एक दरवाजे के पास आओगे। अगर तुम उसको खुला देखो तो उसके अन्दर मत घुसना। जब तुम उसको बन्द देखो तो उसको धक्का मार कर उसके अन्दर घुस जाना।

वहॉ तुमको चार शेर मिलेंगे। जब उनकी ऑखें बन्द हों तब तुम उसमें अन्दर मत घुसना। जब उनकी ऑखें खुली हों तभी उसके अन्दर घुसना। तुमको वहॉ नाचता पानी मिल जायेगा।"

लड़के ने उससे विदा ली और अपने रास्ते चल दिया।

इस बीच बहिन अंगूठी को बराबर देखती रही कि उसमें लगे पत्थर का रंग बदलता है या नहीं। पर उसने देखा कि उसका रंग तो नहीं बदला था सो वह सन्तुष्ट ही रही।

साधु से विदा ले कर वह पहाड़ की तरफ चल दिया। कुछ ही दिनों में वह पहाड़ की चोटी पर पहुॅच गया। वहॉ उसने एक महल देखा जिसके सामने चार बड़े साइज़ के आदमी खड़े हुए थे।

[24] Translated for the word "Giant"

उनकी ऑखें बन्द थीं और दरवाजा खुला हुआ था तो लड़के ने सोचा "नहीं अभी नहीं।"। सो वह वहीं खड़ा खड़ा उन आदमियों की ऑखों के खुलने का इन्तजार करता रहा।

जब उन चारों आदमियों ने अपनी ऑखें खोलीं तो दरवाजा बन्द हो गया। बस उसने दरवाजे को थोड़ा सा धक्का मारा और दरवाजा खुल गया। वह अन्दर चला गया।

अन्दर जा कर उसको चार शेर मिले। वहॉ भी शेर ऑखें बन्द किये हुए थे। सो इसने उनके ऑखें खुलने तक का इन्तजार किया और फिर अन्दर चला गया।

वहॉ उसको नाचता हुआ पानी मिल गया। उसने अपने साथ लाई हुई बोतलें उसके पानी से भर लीं और फिर जब उन्होंने अपनी खोल लीं तब वह बच कर वहॉ से भाग निकला।

इस बीच उसकी मौसियॉ तो बहुत खुश थीं क्योंकि उनका भानजा अभी तक लौटा नहीं था। पर वह कुछ ही दिनों में लौट आया और अपनी बहिन को गले लगा लिया। तब उन्होंने दो सोने के बर्तन बनाये जिनमें उन्होंने वह नाचता पानी रख दिया। नाचता पानी एक बर्तन में से दूसरे बर्तन में जा रहा था।

जब उनकी मौसियों ने यह देखा तो वे फिर आश्चर्य से चिल्ला पड़ीं — "अरे इसने यह पानी कैसे पा लिया।" उन्होंने फिर आया को बुलाया और फिर उससे कहा तो उसने फिर से दोनों भाइयों के घर से चले जाने का इन्तजार किया।

जब एक दिन दोनों भाई घर पर नहीं थे तो वह फिर से उनकी बहिन के पास गयी। बहिन ने उसको देखते ही कहा — "यह देखो नाचता पानी।"

आया ने कहा — "कितना सुन्दर है यह नाचता पानी पर बेटी इससे ज़्यादा तो तुम तब खुश होगी जब तुम्हारे पास गाता हुआ सेब होगा।"

यह कह कर वह वहॉ से चली गयी। शाम को जब उसका भाई घर लौट कर आया तो उसने उससे कहा — "भैया अगर तुम मुझे प्यार करते हो तो मुझे गाता हुआ सेब ला दो।"

भाई बोला — "हॉ हॉ बहिन क्यों नहीं। मैं तुम्हें गाता हुआ सेब भी ला कर दूँगा।"

अगले दिन वह अपने घोड़े पर चढ़ा और अपनी बहिन के लिये गाता हुआ सेब लेने चल दिया। कुछ दूर तक चलने के बाद उसको एक साधु मिला जिसने उससे पूछा कि वह कहॉ जा रहा था। लड़के ने जवाब दिया "गाता हुआ सेब लेने।"

तो उसने उसे बताया कि वह कुछ दूर और आगे जायेगा तो उसको उससे भी बूढ़ा एक और साधु मिलेगा। वह उसको बतायेगा कि उसे क्या करना है।

लड़का और आगे चला तो उसको पिछले वाले साधु से भी ज़्यादा बूढ़ा एक साधु मिला। उसने भी लड़के ने पूछा कि वह कहॉ जा रहा था। लड़के ने जवाब दिया "गाता हुआ सेब लेने।"

साधु बोला कि यह तो बहुत मुश्किल काम है पर सुनो तुम यह करना जो मैं तुम्हें बता रहा हूँ। तुम इस पहाड़ पर चढ़ जाओ। हॉ बड़े साइज़ के आदमियों शेरों और दरवाजे से सावधान रहना।

वहॉ तुमको एक महल मिलेगा जिसमें एक बहुत छोटा सा दरवाजा होगा। वहॉ पास में एक कैंची मिलेगी। अगर कैंची खुली हो तो तुम दरवाजे में घुस जाना और अगर बन्द रखी हो तो दरवाजे में घुसने का खतरा मोल नहीं लेना।

लड़का अपने रास्ते चल दिया। पहाड़ पर पहुँच कर उसे महल दिखायी दिया। उसमें एक छोटा सा दरवाजा था और उसके पास ही एक कैंची रखी थी। कैंची खुली हुई थी सो वह उस दरवाजे से अन्दर घुस गया।

वहॉ उसने सब कुछ अपने अनुकूल पाया। वहॉ एक कमरे में उसने देखा कि एक बहुत ही सुन्दर पेड़ खड़ा हुआ है और उस पर एक आश्चर्यजनक सेब लगा हुआ है। वह सेब तोड़ने के लिये पेड़ पर चढ़ गया और उसको तोड़ने की कोशिश करने लगा पर वह बार बार इधर उधर हिलता रहा।

वह उसके एक जगह ठहरने का इन्तजार करता रहा। फिर जब वह एक पल के लिये ठहरा तो उसने उसकी शाख पकड़ ली और सेब तोड़ लिया। फिर वह महल में से सुरक्षित रूप से निकल आया। अपने घोड़े पर सवार हुआ और घर वापस आ गया। जितनी देर वह सेब पकड़े रहा सेब कुछ कुछ बोलता रहा।

बच्चों की मौसियॉ फिर से खुश थीं कि लड़के को आने में देर हो रही थी पर जब उन्होंने उसे वापस आते हुए देखा तो उनको लगा जैसे सारा घर उनके सिर पर गिर पड़ा हो।

उन्होंने आया को फिर बुलाया और उससे फिर कहा — "अरे ये बच्चे तो अभी भी यहीं हैं।"

सो आया फिर से उनके घर गयी। लड़की ने उसका स्वागत किया और उसको अपना नया गाता हुआ सेब दिखाया। इस पर आया बोली — "यह सब तो ठीक है पर तुम तब ज़्यादा खुश रहोगी जब तुम्हारे पास बात करने वाली चिड़िया भी होगी। उसके बाद फिर तुम्हें और किसी चीज़ को देखने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी।"

लड़की बोली — "ठीक है। मैं देखती हूॅ कि मेरा भाई मेरे लिये इसे ला सकता है या नहीं।"

जब उसका भाई घर आया तो उसने उससे बात करने वाली चिड़िया लाने की बात की तो उसने उससे कहा कि वह वैसी चिड़िया अपने बहिन को ला कर जरूर देगा।

अगले दिन वह फिर अपने घोड़े पर सवार हुआ और बात करने वाली चिड़िया की खोज में चल दिया। उस दिन भी उसको पहले की तरह से एक साधु मिला जिसने उसको दूसरे साथु के पास भेज दिया रि दूसरे ने तीसरे साधु के पास भेज दिया।

तीसरे साधु ने उसको बताया कि — "तुम उस महल तक चले जाओ। महल में तुमको बहुत सारी मूर्तियॉ दिखायी देंगी। उसके बाद तुम एक बागीचे में आओगे। वहॉ तुम्हें एक फव्वारा दिखायी देगा। उस फव्वारे के ऊपर वह चिड़िया बैठी है।

अगर वह तुमसे कुछ कहे तो उसको कोई जवाब नहीं देना। चिड़िया के पंखों में से एक पंख ले लेना और उसको एक शीशे के बर्तन में डुबोना जो वहीं पास में ही रखा हुआ है और उससे सारी मूर्तियों के ऊपर मल देना। अपनी ऑखें खुली रखना भगवान सब भली करेंगे।"

लड़के को रास्ता पता था सो वह उसी रास्ते पर चल दिया और जल्दी ही महल में पहुॅच गया। उसको बागीचा भी दिखायी दे गया मूर्तियॉ भी दिखायी दे गयीं। फव्वारा भी दिखायी दे गया और उसमें चिड़िया भी दिखायी दे गयी।

जैसे ही चिड़िया ने लड़के को देखा तो बोली — "सर क्या आप मेरे लिये आये हैं। आप गलत आ गये हैं। आपकी मौसियों ने आपको यहॉ मरने के लिये भेज दिया है और अब आपको यहीं रहना होगा। आपकी मॉ को ट्रैडमिल में भेज दिया गया है।"

सुनते ही लड़का चिल्लाया — "क्या? मेरी मॉ को ट्रैडमिल में भेज दिया गया है?" जैसे ही ये शब्द उसके मुॅह से निकले कि दूसरों की तरह वह भी मूर्ति बन गया।

इधर उसकी बहिन ने देखा कि अँगूठी के पत्थर का रंग नीला पड़ गया है। उसने अपने दूसरे भाई को अपने पहले भाई को देखने के लिये भेजा।

वह भी तीनों साधुओं से मिला। तीनों साधुओं ने उसे रास्ता बताया। वह भी महल में पहुँचा। उसको भी बागीचा मूर्तियाँ फव्वारा और चिड़िया मिल गयीं।

इस बीच बच्चों की मौसियों ने देखा कि उनके दोनों भानजे अभी तक घर वापस नहीं लौटे हैं तो वे बहुत खुश हुईं। इधर बहिन ने देखा कि अँगूठी का पत्थर फिर से साफ हो गया है तो वह भी बहुत खुश हो गयी।

जब बोलती हुई चिड़िया ने लड़के को देखा तो बोली — "तुम्हारे भाई को क्या हुआ? तुम्हारी माँ को तो ट्रैडमिल में भेज दिया गया है।"

यह सुन कर उसके भी मुँह से निकला — "बड़े अफसोस की बात है कि मेरी माँ ट्रैडमिल में है।" और जैसे ही वह यह बोला तो वह भी पत्थर की मूर्ति बन गया।

लड़की ने देखा कि उसकी अँगूठी का पत्थर तो काला पड़ गया है। उस बेचारी ने एक नौकर का रूप बनाया और अपने भाइयों को ढूँढने चल दी। अपने भाइयों की तरह से उसको भी तीन साधु मिले। उन्होंने उसको भी वैसे ही रास्ता दिखाया जैसे उन्होंने उसके भाइयों को दिखाया था।

पर तीसरे ने उससे यह भी कहा — "अगर तुम चिड़िया की बात का जवाब दोगी तो तुम अपनी जान गॅवा बैठोगी।"

सो वह अपने रास्ते पर चल दी।

चलते चलते वह भी महल में आयी और साधुओं की बात मानती हुई बागीचे तक सुरक्षित पहुॅच गयी। जब चिड़िया ने उसको देखा तो वह बोली — "अरे तुम भी यहॉ तक आ पहुॅचीं? अब तुम्हारा भी वही हाल होगा जो तुम्हारे भाइयों का हुआ था।

क्या तुम उन्हें देख सकती हो? एक और दो और तुमको मिला कर तीन। तुम्हारे पिता लड़ाई पर गये हुए हैं तुम्हारी मॉ को ट्रैडमिल में भेज दिया गया है। तुम्हारी मौसियॉ खुश हो रही हैं।"

लड़की ने साधु की बात याद कर के चिड़िया की बात पर ध्यान नहीं दिया और उसे गाने दिया। जब चिड़िया का बात खत्म हो गयी तो वह उड़ी और नीचे की तरफ आयी। लड़की ने उसे पकड़ लिया और उसका एक पंख निकाल कर पास में रखे एक शीशे के बर्तन में डुबोया और उसको अपने भाइयों के नथुनों पर लगा दिया। उसके भाई तुरन्त ही ज़िन्दा हो गये।

उसने फिर ऐसा ही दूसरी मूर्तियों के साथ और बड़े साइज़ के आदमियों और शेरों के साथ भी किया। अब सब ज़िन्दा हो चुके थे। अब वे सब राजकुमारों और कुलीन लोगों के साथ लौटे।

अब क्योंकि वहॉ के सभी लोग ज़िन्दा हो चुके थे तो वह महल गायब हो गया। वे तीनों साधु भी गायब हो गये क्योंकि वे तो वे तीन परियॉ थीं जिन्होंने उन तीनों बच्चों को वरदान दिये थे।

जिस दिन वे भाई बहिन अपने घर लौटे जहॉ वे रहते थे तो उन्होंने एक सुनार को बुलवाया और उससे एक सोने की जंजीर बनाने के लिये कहा जिससे उन्होंने उस चिड़िया को बॉध दिया।

अगली बार जब उनकी मौसियों ने महल के बाहर देखा तो उनको अपने महल के सामने नाचता पानी गाता हुआ सेब और बोलती हुई चिड़िया देखी। वे आपस में बोलीं — "असली मुसीबत तो अब आने वाली है।"

चिड़िया ने भाइयों और बहिन से कहा कि वे अब एक बहुत ही बढ़िया गाड़ी खरीदें, राजा की गाड़ी से भी बढ़िया जिसमें **24** नौकर हों। इसके अलावा अपने महल के लिये बहुत सारे दास और दासियॉ जो राजा के महल में लगे दास दासियों से भी ज़्यादा हों और अच्छे हों।

दोनों भाइयों ने जल्दी से वैसा ही किया। लकिन जब उनकी मौसियों ने यह देखा तो वे तो जलन के मारे मर ही गयीं।

आखिर राजा युद्ध से लौटा तो उसके लोगों ने उसको उसके राज्य की सब खबरें बतायीं पर उसको उसकी पत्नी और बच्चों के बारे में कुछ भी नहीं बताया।

एक दिन राजा ने महल के बाहर देखा तो उसे अपने महल के सामने ही एक और बहुत ही शानदार महल दिखायी दिया। उसने बहुत लोगों से पूछा कि उस महल में कौन रहता था पर उसको उसका कोई पता न चला।

उसने उस महल की तरफ फिर देखा तो अबकी बार उसको दो भाई और एक बहिन दिखायी दी। उसने देखा कि दोनों भाइयों के हाथ में सेब था और लड़की की भौंह पर एक सितारा था।

उसके मुँह से निकला — "अगर मुझे यह पता नहीं होता कि मेरी पत्नी ने तीन कुत्तों के बच्चों को जन्म दिया है तो मैं कहता कि ये तीनों मेरे ही बच्चे हैं।"

एक और दिन वह खिड़की पर जा कर खड़ा हो कर नाचते हुए पानी और गाते हुए सेब का आनन्द ले रहा था पर चिड़िया चुप थी। सारे संगीत का आनन्द लेने के बाद चिड़िया ने राजा से पूछा — "राजा साहब। आप इसके बारे में क्या सोचते हैं।"

राजा ने जब चिड़िया को बोलते हुए सुना तो वह तो आश्चर्यचकित रह गया फिर भी उसने चिड़िया से पूछा — "मुझे क्या सोचना चाहिये। मैं तो यह सोचता हूँ कि यह सब कुछ बहुत बढ़िया है।"

चिड़िया बोली — "ज़रा रुकिये। अभी तो और बढ़िया बाकी है।"

तब चिड़िया ने अपनी मालकिन से कहा कि वह अपने भाइयों को बुलाये और उन सबसे कहा — "देखो ये राजा साहब हैं हमको इनको इतवार को शाम को खाने के लिये बुलाना चाहिये। है न।"

सब बोले — "हॉ हॉ क्यों नहीं।"

सो राजा ने उनका बुलावा स्वीकार कर लिया।

सो अगले इतवार को चिड़िया ने राजा के लिये बहुत बढ़िया खाना तैयार करवाया। राजा आया। जब उसने उन तीनों बच्चों को देखा तो उसने ताली बजायी — "मैं अब यह कहे बिना नहीं रह सकता कि ये तीनों मेरे बच्चे हैं।"

वह महल में चारों तरफ घूम कर आया तो उसकी वेशकीमती चीज़ों को देख कर आश्चर्यचकित रह गया। उसके बाद वे सब खाना खाने गये।

खाना खाते समय राजा ने कहा — "चिड़िया। हर एक बात कर रहा है तुम अकेली ही चुप हो।"

चिड़िया बोली — "ओह राजा। मैं थोड़ी बीमार हूँ पर अगले इतवार मैं बिल्कुल ठीक हो जाऊँगी और बात करने के लायक हो जाऊँगी। तब मैं आपके महल इन दोनों भले लोगों के साथ खाना खाने के लिये आऊँगी।"

अगले इतवार चिड़िया ने अपनी मालकिन से कहा कि वह खुद और उसके भाई सब अपने सबसे अच्छे कपड़े पहनें। सो उन्होंने

शाही कपड़े पहने चिड़िया को अपने साथ लिया और राजा के महल चल दिये।

राजा ने भी उनका रस्मों के साथ स्वागत किया और उनको अपना महल दिखलाया। उनकी मौसियॉ तो डर के मारे कॉप रही थीं। जब वे सब खाने की मेज पर बैठ गये तो राजा ने चिड़िया से कहा — "आओ चिड़िया आओ। तुमने वायदा किया था कि तुम आज बात करोगी। आओ कुछ बोलो। क्या तुम्हारे पास मुझसे कहने के लिये कुछ भी नहीं है।"

तब चिड़िया ने राजा को शुरू से ले कर आखीर तक, उसके घर पर बातें सुनने से ले कर अब तक, सब कुछ बता दिया। उसके बाद बोली — "राजा साहब। ये तीनों आपके ही बच्चे हैं। आपकी पत्नी को मिल में भेज दिया गया था। वह अब मर रही है।"

यह सुन कर राजा अपने बच्चों को गले लगाने के लिये दौड़ा फिर वह अपनी पत्नी के पास गया जो अब केवल खाल और हड्डियों का ढॉचा ही रह गयी थी। वह अब मरने के कगार पर ही खड़ी थी।

वह उसके सामने घुटने टेक कर बैठ गया और उससे माफी मॉगी। फिर उसने उसकी दोनों बहिनों को बुलाया और चिड़िया के सामने ही कहा — "चिड़िया। तुमने मुझे सब कुछ बता दिया है अब इनकी सजा भी बता दो।"

चिड़िया बोली कि आया को खिड़की से बाहर फेंक दिया जाये और दोनों बहिनों को उबलते हुए तेल में फेंक दिया जाये। यह काम तुरन्त ही कर दिया गया। राजा अपनी पत्नी को गले लगाते लगाते नहीं थक रहा था।

उसके बाद चिड़िया वहॉ से चली गयी। राजा रानी और उनके बच्चे सुख से रहे।

अब हम यहॉ से एक और तरह की कहानियों की तरफ बढ़ते हैं जिनमें बच्चों के माता पिता उनको किसी जादूगरनियों या किसी बुरी आत्मा को दे देते हैं। ये बच्चे जो इस तरह से किसी जादूगरनी या बुरी आत्मा को दिये जाते हैं ये अक्सर पैदा होने से पहले ही दे दिये जाते हैं। माता पिता यह वायदा अक्सर किसी खतरे से बचने के लिये करते हैं जो उन्हें कोई जादूगरनी या राक्षस से होता है या फिर यह काम वे पैसे के बदले में करते हैं।

कभी कभी इसमें गलतफहमी भी हो जाती है जैसे ग्रिम्स[25] की कहानियों में उनकी "हाथ कटी लड़की"[26] कहानी में जिसमें चक्की वाला बुरी आत्मा को वह देने का वायदा करता है जो उसकी चक्की के पीछे है। उसका मतलब था कि उसकी चक्की के पीछे एक सेब का पेड़ है वह उसे देता है पर गलती से वह अपनी बेटी दे बैठता है जो यह सौदा करते समय उसकी चक्की के पीछे खड़ी थी और जिसका उसे उस समय पता नहीं होता।

इस तरह की इटली की सबसे ज़्यादा लोकप्रिय कहानी यह है – कि एक स्त्री को बच्चे की आशा होती है तो उसको एक तरह की सब्जी या फल, अक्सर पार्सले, खाने की इच्छा होती है जो एक जादूगरनी के बागीचे में हो रहा है। एक दिन जादूगरनी उसे अपना पार्सले खाते पकड़ लेती है और उसको केवल इस शर्त पर छोड़ती है कि जब उसका बच्चा एक निश्चित उम्र का हो जायेगा तब वह अपना बच्चा उसको दे देगी। लौरा गौन्ज़ैनबाक की सिसिली टापू[27] की यह लोक कथा इस तरह की कथा को ज़्यादा अच्छी तरह से समझा पायेगी।

---

[25] Grimm Brothers – two brothers of early 19th century who are supposed to be one of the earliest folktale writers.

[26] Handless Maiden. By Grimms

[27] Laura Gonzenbach (1842-1878) was a Swiss, active in Mesina area of Sicily Island, a great folktale collector who collected many fairy tales from several Sicily dialect. This story is her No 53.

5 सुन्दरी ऐन्जिओला[28]

एक बार की बात है कि सात स्त्रियॉ थीं। वे पास पास रहती थीं सो वे आपस में पड़ोसिनें थीं। एक बार उन सबको जुजूबे फल[29] खाने की इच्छा हुई। जुजूबे के पेड़ जहॉ वे रहती थीं उनके घरों के सामने ही लगे हुए थे और वह बागीचा जिसमें वे लगे हुए थे वह एक जादूगरनी का था।

इस जादूगरनी के पास एक गधा था जो इसके बागीचे की रखवाली करता था और जब भी उसके अन्दर कोई घुसता था तो वह जादूगरनी को बता देता था।

अब इन सातों पड़ोसिनों का मन जुजूबे खाने का इतना ज़्यादा था कि वे उसके बागीचे में जुजूबे खाने के लिये जा पहुॅचीं। उन्होंने गधे को थोड़ी सी नर्म घास फेंकी और बागीचे के अन्दर चली गयीं। जब गधा घास खा रहा था उन सबने अपने अपने ऐप्रन जुजूबे से भर लिये और जादूगरनी के आने से पहले ही वहॉ से भाग गयीं।

ऐसा कई बार हुआ तो जादूगरनी को शक हुआ कि कोई उसके जुजूबे चुरा रहा है। उसने गधे से पूछा पर क्योंकि उसको नर्म नर्म

---

[28] The Fair Angiola. (Tale No 5)
This tale is by Laura Golzenbach – No 53.

[29] Jujube fruit, or Red Dates a kind of fruit like a date fruit. See its picture above.

घास खाने को मिल गयी थी सो उसको इस बात का पता ही नहीं था।

तीसरे दिन जादूगरनी ने खुद बागीचे की रखवाली करने का निश्चय किया। बागीचे के बीच में एक गड्ढा था। वह उसमें जा कर छिप गयी और अपने आपको पत्तों और टहनियों के नीचे छिपा लिया। उसने अपना एक लम्बा कान जमीन के बाहर छोड़ दिया।

सातों पड़ोसिनें एक बार फिर जुजूबे खाने गयीं कि उनमें से एक ने जमीन बाहर निकला एक कान देखा। उन्होंने सोचा कि यह मुशरूम है सो उन्होंने उसका जमीन में से उखाड़ना चाहा। जैसे ही उसने उसको हाथ लगाया कि जादूगरनी उस गड्ढे में से बाहर आ कर खड़ी हो गयी।

उसको देख कर वे सब स्त्रियॉ वहॉ से भाग लीं। छह स्त्रियॉ तो उनमें से भाग जाने में सफल हो गयीं पर एक उनमें से पकड़ी गयी। जादूगरनी उसको खाने ही वाली थी कि उसने जादूगरनी से माफी मॉगी और वायदा किया कि वह अब फिर कभी उसके बागीचे में नहीं घुसेगी।

आखिर जादूगरनी ने उसे इस शर्त पर माफ कर दिया कि वह अपने होने वाले बच्चे को जब वह सात साल का हो जायेगा उसको दे देगी चाहे वह लड़का हो या लड़की। बचाव का कोई और रास्ता न देख कर स्त्री ने उससे वायदा किया कि वह ऐसा ही करेगी। तभी जादूगरनी ने उसे जाने दिया।

समय आने पर स्त्री ने एक सुन्दर बेटी को जन्म दिया जिसका नाम उसने एन्जिओला[30] रख दिया। जब ऐन्जिओला छह साल की हो गयी तो उसकी मॉ ने उसको सिलाई और बुनाई सीखने के लिये स्कूल भेजा। जब वह स्कूल से वापस आती थी तब वह उस जुजूबे के बागीचे से हो कर ही आती थी जहॉ वह जादूगरनी रहती थी।

एक दिन जब वह करीब करीब सात साल की होने को आयी तो उसने देखा कि जादूगरनी अपने बागीचे के सामने ही खड़ी हुई है।

उसने ऐन्जिओला को अपने पास बुलाया उसे कुछ पके हुए फल खाने को दिये और कहा — "देखो सुन्दर ऐन्जिओला। मैं तुम्हारी चाची हूॅ। तुम अपनी मॉ से कहना कि तुम अपनी चाची से मिली हो और वह अपना वायदा याद रखे।"

ऐन्जिओला बेचारी घर चली गयी और वह सब अपनी मॉ से कहा कि जो जादूगरनी ने उससे कहा था। मॉ बोली — "आह। अब समय आ गया है जब मुझे अपनी प्यारी ऐन्जिओला को दे देना चाहिये।"

सो उसने ऐन्जिओला से कहा — "जब तुम्हारी चाची कल तुमसे उसके जवाब के लिये पूछे तो तुम कहना कि मैं अपनी मॉ से यह कहना भूल गयी।"

[30] Angiola – name of the daughter of the woman

अगले दिन जैसा उसकी मॉ ने कहा था ऐन्जिओला ने वैसा ही जादूगरनी से कह दिया। जादूगरनी बोली "कोई बात नहीं। तुम आज वह बात उससे कह देना। देखना भूलना नहीं।"

इस तरह से कई दिन गुजर गये। जब भी ऐन्जिओला स्कूल जाती वह ऐन्जिओला पर कड़ी निगरानी रखती हमेशा ही इस कोशिश में रहती कि वह उसकी मॉ का जवाब पा ले। पर ऐन्जिओला भी उससे हमेशा ही यही कहती कि वह मॉ से कहना भूल गयी।

एक दिन जादूगरनी को बहुत गुस्सा आया। वह बोली — "क्योंकि तुम इतनी भुलक्कड़ हो इसलिये मुझे तुम्हें कोई ऐसी निशानी देनी चाहिये जिससे तुम्हें उस बात को कहने की याद रह सके।" कह कर उसने ऐन्जिओला की छोटी उँगली में इतनी ज़ोर से काटा कि उसकी उँगली का एक छोटा सा टुकड़ा ही काट लिया।

जब मॉ ने यह देखा कि तो उसे लगा कि अब और कोई रास्ता नहीं है। मुझे उस जादूगरनी को अपनी बच्ची देनी ही होगी। सो अगले दिन जब एन्जिओला स्कूल जाने लगी तो उसने अपनी बेटी से कहा — "बेटी उससे कह देना कि वह जो चाहे करे।"

ऐन्जिओला ने उससे जा कर वही कह दिया तो वह बोली — "तब तुम मेरे साथ आओ क्योंकि अब तुम मेरी हो।"

इस तरह जादूगरनी सुन्दर ऐन्जिओला को अपने साथ ले गयी। वह उसको एक मीनार में ले गयी जिसका कोई दरवाजा नहीं था

सिवाय एक खिड़की के। अब ऐन्जिओला वहॉ उस जादूगरनी के साथ रहने लगी। जादूगरनी ऐन्जिओला को बहुत अच्छे से रखती थी वह उसको बहुत प्यार करती थी जैसे वह उसकी अपनी बच्ची हो।

जब जादूगरनी घूमघाम कर बाहर से आती तो खिड़की के नीचे खड़ी हो कर चिल्लाती — "ऐन्जिओला मेहरबानी कर के तुम अपने लम्बे बाल नीचे लटकाओ और मुझे ऊपर खींचो।" यह सुन कर एन्जिओला अपने लम्बे बाल नीचे लटका देती और उनसे वह जादूगरनी को ऊपर खींच लेती।

दिन बीतते गये और अब ऐन्जिओला बड़ी हो कर एक बहुत सुन्दर नौजवान स्त्री बन गयी। एक दिन एक राजा का बेटा शिकार खेलते खेलते उधर आ निकला। उसने वहॉ एक ऐसा घर देखा जिसका कोई दरवाजा नहीं था। उसको देख कर वह आश्चर्य करने लगा कि ऐसे घर में कौन रहता होगा।

इत्तफाक से उसी समय जादूगरनी बाहर से आयी और चिल्लायी — "ओ ऐन्जिओला सुन्दर ऐन्जिओला अपने बाल फेंक मुझे ऊपर आना है।" तुरन्त ही सुन्दर ऐन्जिओला ने अपने लम्बे बाल नीचे फेंक दिये और जादूगरनी उन बालों को पकड़ कर ऊपर चढ़ गयी।

राजकुमार को यह देख कर बड़ा मजा आया। फिर वह एक पेड़ के पीछे छिप गया जब तक के लिये जब तक कि वह बूढ़ी जादूगरनी फिर से बाहर नहीं चली गयी। जादूगरनी के जाने के बाद

वह खुद उस खिड़की के नीचे खड़ा कर हो कर बोला — "ऐन्जिओला सुन्दर ऐन्जिओला। तुम अपने सुन्दर बाल नीचे लटकाओ और मुझे ऊपर खींच लो।"

ऐन्जिओला ने सोचा कि शायद यह जादूगरनी होगी सो वह खिड़की पर आयी उसने अपने लम्बे बाल नीचे लटकाये और उसे ऊपर खींच लिया।

पर जब उसने एक राजकुमार देखा तो वह तो बहुत डर गयी पर जब राजकुमार ने उससे प्रेम से बात की तो वह कुछ ठीक हुई। राजकुमार ने उससे कहा कि वह उसके साथ चले फिर वे दोनों आपस में शादी कर लेंगे।

आखिर वह राजी हो गयी और जादूगरनी को यह पता न चले कि वह कहॉ गयी है उसने सारी कुर्सियों मेजों आलमारियों को कुछ न कुछ खाने के लिये दिया। क्योंकि वे सब ज़िन्दा थीं और बाद में उसको धोखा दे सकती थीं। झाड़ू दरवाजे के पीछे खड़ी थी सो वह उसको दिखायी नहीं दी और इसी लिये उसने उसे खाने के लिये कुछ भी नहीं दिया।

फिर उसने जादूगरनी के तीन जादू के धागे के गोले उठाये और राजकुमार के साथ भाग गयी।

उनके भाग जाने के कुछ ही देर बाद जादूगरनी आयी और उसने पुकारा — "ऐन्जिओला सुन्दर ऐन्जिओला। तुम अपने सुन्दर बाल नीचे लटकाओ और मुझे ऊपर खींच लो।"

पर किसी ने भी अपने बाल नीचे नहीं लटकाये।

कई बार पुकारने पर भी जब किसी ने अपने लम्बे बाल नीचे नहीं लटकाये तो उसने एक लम्बी सी सीढ़ी ली और ऊपर पहुँच गयी। ऊपर पहुँच कर उसने ऐन्जिओला को घर में सब जगह ढूँढा पर वह उसे कहीं नहीं मिली।

तो उसने घर की कुरसियों मेजों और आलमारियों से पूछा कि ऐन्जिओला कहाँ गयी पर उनमें से कोई उसका जवाब नहीं दे सका। तभी झाड़ू कोने में से बोली — "सुन्दर ऐन्जिओला एक राजकुमार के साथ भाग गयी है जहाँ राजकुमार उससे शादी कर लेगा।"

जादूगरनी ने तुरन्त ही उनका पीछा किया और उन्हें पकड़ लिया। पर ऐन्जिओला ने तुरन्त ही एक जादू का सूत का गोला अपने पीछे फेंक दिया तो वहाँ एक बहुत बड़ा साबुन का पहाड़ खड़ा कर दिया।

अब जब भी जादूगरनी उस साबुन के पहाड़ पर चढ़ने की कोशिश करती तो वह पीछे फिसल जाती। पर उसने अपना चढ़ाने की कोशिश जारी रखी और उसे पार कर ही लिया। वह फिर उन भगोड़ों को पकड़ने के लिये उनके पीछे दौड़ी।

इस पर ऐन्जिओला ने दूसरा सूत का गोला फेंक दिया। इस गोले को फेंकते ही वहाँ छोटी बड़ी सुइयों से बिंधा हुआ एक बहुत बड़ा पहाड़ खड़ा हो गया। इस बार भी जादूगरनी को उस पहाड़ को पार करने में बहुत मुश्किल पड़ी पर फिर भी उसने वह पहाड़ पार

कर ही लिया। जब उसने पहाड़ पार कर लिया तो वह फिर उनके पीछे दौड़ पड़ी और उन्हें पकड़ लिया।

ऐन्जिओला ने जब देखा कि जादूगरनी उसके फिर बहुत पास आ गयी तो उसने तीसरा और आखिरी सूत का गोला भी अपने पीछे फेंक दिया। उसने दोनों के बीच बहुत सारा पानी बना दिया। जादूगरनी ने उसे तैर कर पार करना चाहा पर वह पानी की धारा तो और चौड़ी होती जा रही थी। आखिर उसे वापस लौटना पड़ा।

गुस्से में भर कर उसने ऐन्जिओला को शाप दिया — "भगवान करे तुम्हारा चेहरा एक कुत्ते के जैसा हो जाये।" बस ऐन्जिओला का चेहरा एक कुत्ते का जैसा हो गया।

राजकुमार यह देख कर बहुत दुखी हुआ। वह बोला — "अब मैं तुम्हें अपने माता पिता के पास कैसे ले जाऊँ। वे मुझे एक कुत्ते के मुँह वाली लड़की से शादी करने पर कभी राजी नहीं होंगे।" सो वह उसको एक छोटे से घर में ले गया जहाँ उसको तब तक रहना था जब तक उसके ऊपर का शाप नहीं हट जाता।

वह खुद अपने माता पिता के पास लौट गया पर वह जब भी शिकार के लिये जाता वह बेचारी ऐन्जिओला से मिलने जरूर जाता। वह अपनी बदकिस्मती पर अक्सर रोती रहती।

एक दिन एक छोटा कुत्ता जो जादूगरनी के घर से उसके पीछे पीछे यहाँ तक आ गया था बोला — "सुन्दर ऐन्जिओला मत रो। मैं

उस जादूगरनी के पास जाऊँगा और उससे विनती करूँगा कि वह अपना शाप वापस ले ले।"

सो कुत्ता वहाँ से जादूगरनी के पास चल दिया।

जादूगरनी के पास पहुँच कर वह उसके ऊपर चढ़ गया और उसको सहलाने लगा। उसको देख कर जादूगरनी बोली — "ओ बेवफा जानवर तू यहाँ फिर आ पहुँचा।" और उसे एक तरफ को धक्का देती हुई बोली — "ओ बेवफा जानवर क्या तू मुझे छोड़ कर उस बेवफा ऐन्जिओला के पास चला गया था।"

पर कुत्ता उसके पीछे लगा रहा जब तक कि वह उससे खुश नहीं हो गयी और उसने उसे अपनी गोद में नहीं बिठा लिया। कुत्ता बोला — "माँ। ऐन्जिओला ने आपको नमस्ते भेजी है। वह बहुत दुखी है क्योंकि राजकुमार अब उसको इस कुत्ते के चेहरे के साथ महल नहीं ले जा सकता और वह राजकुमार के साथ शादी नहीं कर सकती।"

जादूगरनी बोली — "उसके साथ ऐसा ही होना चाहिये।"

पर कुत्ते ने बहुत ईमानदारी से उससे विनती की कि अब उसको काफी सजा मिल चुकी है वह काफी सह चुकी है अब तो आप ही उसके ऊपर दया कर दें।

आखिर जादूगरनी ने उसको एक बोतल में कुछ पानी दिया और उससे कहा — "लो यह पानी की बोतल उसके पास ले जाओ वह फिर से सुन्दर ऐन्जिओला बन जायेगी।"

कुत्ते ने उसे धन्यवाद दिया और उस बोतल को ले कर ऐन्जिओला की तरफ दौड़ लिया। वह उसे सुरक्षित रूप से ऐन्जिओला के पास ले आया।

जैसे ही उसने उस पानी से अपना चेहरा धोया तो लो वह तो फिर से पुरानी वाली ऐन्जिओला बन गयी। बल्कि उससे भी ज़्यादा सुन्दर हो गयी जितनी वह पहले थी।

राजकुमार तो यह देख कर बहुत खुश हो गया। वह उसे ले कर अपने घर गया जहॉ उसके माता पिता अपनी बहू को देख कर बहुत खुश हुए। उन्होंने उनकी बहुत शानदार शादी की और उसके बाद वे बहुत दिनों तक खुश खुश जिये।

6 बादल[31]

एक और मजेदार किस्म की कहानी वह है जिसमें कहानी का हीरो जुड़वॉ भाई होता है या फिर तीन भाई होते हैं जो उसी समय जन्म लेते हैं पर उनके जन्म लेने का तरीका सामान्य नहीं होता। जैसे उनकी मॉ अगर कोई जादुई फल या मछली खा ले तब वे बच्चे हों। उनमें से एक कोई मुश्किल काम करने का बीड़ा उठाता है, जैसे किसी राजकुमारी को आजाद कराना, और फिर किसी बड़े खतरे में पड़ जाता है। दूसरा भाई किसी चीज़ की सहायता से यह जान जाता है कि उसका भाई खतरे में पड़ गया है सो वह उसको छुड़ाने के लिये जाता है। नीचे लिखी यह कहानी इटली के पिसा शहर से ली गयी है जो आपको इस तरह की कहानी समझायेगी।[32]

एक बार की बात है कि एक मछियारा था जिसके परिवार में एक पत्नी थी और कई बच्चे थे। अब कुछ ऐसा हुआ कि कुछ दिनों तक मछियारा कोई मछली नहीं पकड़ सका। वह नहीं जानता था कि अब वह अपने परिवार का पेट पालन कैसे करे।

पर एक दिन उसने पानी में अपना जाल फेंका और एक बहुत बड़ी सी मछली पकड़ ली। पर वह मछली उससे आदमी की आवाज में बोली — "मेहरबानी कर के मुझे छोड़ दो तो तुम जितनी तुम चाहो उतनी मछलियॉ पकड़ पाओगे।"

मछियारे ने उसे छोड़ दिया और फिर इतनी सारी मछलियॉ पकड़ कर घर ले गया जितनी कि वह पहले कभी नहीं ले गया था।

---

[31] The Cloud. Tale No 6.

[32] This story is written by Domenico Comparetti. Domenico Comparetti was the "Brother Grimm" of Italy. In 1897 he published his "Novelline Popolari Italiane" – the collection of many Italian folktales. This story is No 32 in it.

वे मछलियॉ कुछ दिन चलीं फिर उसे मछलियों की जरूरत पड़ी तो उसने फिर से अपना जाल फेंका। उसने वही मछली फिर से पकड़ ली।

अबकी बार मछली बोली — "मुझे लगता है कि अब मुझे मरना ही पड़ेगा। सो तुम मुझे मार दो और टुकड़ों में काट दो। आधा हिस्सा राजा को दे देना एक टुकड़ा अपनी पत्नी को दे देना एक टुकड़ा अपने कुत्ते को दे देना और एक टुकड़ा अपने घोड़े को दे देना।

जो मेरी हड्डियॉ बचेंगी उनको अपने रसोईघर में ऊपर की शहतीर से बॉध कर लटका देना। तुम्हारी पत्नी के बच्चे होंगे। उनमें से अगर किसी एक को भी कोई परेशानी होगी तो मेरी हड्डियों में से खून टपकेगा।"

मछियारे ने वैसा ही किया जैसा उस मछली ने उससे करने के लिये कहा था। समय आने पर उसकी पत्नी तीन लड़कों को जन्म दिया उसकी कुतिया ने तीन बेटों को जन्म दिया और उसके घोड़े ने भी तीन घोड़ों को जन्म दिया।

उसके बेटे बड़े होते गये। अब वे स्कूल जाने लगे थे। वह बहुत पढ़े लिखे और बड़े हो कर बहुत अमीर भी हो गये। एक दिन सबसे बड़े भाई ने कहा — "मैं थोड़ा बाहर घूमना चाहता हूॅ दुनियॉ देखना चाहता हूॅ।"

उसने एक घोड़ा लिया एक कुत्ता लिया कुछ पैसे लिये और अपने माता पिता का आशीर्वाद साथ ले कर वहॉ से चला गया। चलते चलते वह एक जंगल में आ पहुँचा। वहॉ उसको एक शेर एक गरुड़ और एक चींटी दिखायी दिये।

वे तीनों आपस में कुछ फैसला नहीं कर पा रहे थे। उनको कहीं से एक मरा हुआ गधा मिल गया था। वे उसको आपस में बॉटना चाहते थे इर वे उसे कैसे बॉटें यह वे नहीं जानते थे इसी लिये परेशानी में थे।

उन्होंने एक नौजवान उधर से जाता देखा तो उन्होंने उसे बुलाया और उसे अपनी समस्या समझायी।

पहले तो वह डर गया पर फिर हिम्मत बटोर कर उसने पतला मॉस तो गरुड़ को दे दिया उसका दिमाग चींटी को दे दिया और बाकी बचा हिस्सा उसने शेर को दे दिया। सब उसके इस बॅटवारे से बहुत सन्तुष्ट थे। यह कर के वह आगे चल दिया।

वह अभी कुछ कदम दूर ही गया होगा कि उसने पीछे से किसी की आवाज सुनी। वे जानवर थे जो उसको पुकार रहे थे। जब वह उनके पास पहुँचा तो शेर बोला — "तुमने हमारा झगड़ा सिलटाया है तो हम तुम्हें इसका कुछ इनाम देना चाहते हैं। जब तुम शेर बनना चाहो तो बस तुम यह कहना "अब आदमी नहीं बस शेर और वह भी **100** शेरों की ताकत वाला।"

गरुड़ बोला — "जब तुम्हें कभी गरुड़ बनना हो तो बस यह कहना "अब आदमी नहीं बस गरुड़ और वह भी **100** गरुड़ों की ताकत वाला।"

चींटी ने उसको अपने आपको बदलने की ताकत दी। चींटी बोली — "जब तुम्हें कभी चींटी बनना हो तो बस यही कहना "अब आदमी नहीं बस चींटी और वह भी **100** चींटियों की ताकत वाली।"

नौजवान ने उन तीनों जानवरों को धन्यवाद दिया और आगे चल दिया। आगे चल कर उसे एक डौग मछली मिली जो पानी के बाहर पड़ी थी। उसने उसको उठा कर फिर से समुद्र में फेंक दिया। मछली बोली — "जब कभी तुम्हें मेरी जरूरत पड़े तो समुद्र के पास आना और कहना "डौग मछली मेरी सहायता करो।"

नौजवान फिर आगे बढ़ गया। चलते चलते वह एक शहर में आया जहॉ सब लोगों के चेहरे उदास थे और लटके हुए थे। उसने पूछा कि क्या बात है आप सब इतने उदास क्यों हैं।

तो लोगों ने बताया कि वहॉ पर एक बादल परी थी[33] जिसको हर साल एक सुन्दर लड़की खाने के लिये चाहिये थी। इस साल राजा की बेटी की बारी है। अगर वे उसे उस परी को नहीं देंगे तो बादल हमारे शहर में बहुत सारी चीज़ें फेंकेगा जिनसे हम सब मर जायेंगे।

[33] A Fairy can be both a male or a female and good and bad. This Cloud was a bad female fairy.

नौजवान ने पूछा — "क्या में यह सब अपनी ऑखों से देख सकता हूँ।" उन्होंने कहा "हॉ हॉ क्यों नहीं।"

यह रस्म शुरू हुई ढोल बजा कर और सिपाहियों के साथ। राजा और रानी अपनी बेटी के साथ आये। उनकी बेटी को एक कुर्सी पर बिठा कर एक पहाड़ पर ले जाया गया और वहॉ अकेले छोड़ दिया गया।

नौजवान उन लोगों के पीछे पीछे गया और पहाड़ की चोटी पर पहुँच कर अपने आपको एक झाड़ी के पीछे छिपा लिया।

बादल परी आयी और उसको अपनी गोद में उठा कर ले गयी। उसने फिर उसकी एक उँगली ली और उसका खून चूसना शुरू किया। इसी पर वह बादल परी ज़िन्दा रहती थी। राजकुमारी अधमरी सी हो गयी। फिर वह उसको उड़ा कर ले गयी।

नौजवान जो यह सब वहीं खड़ा खड़ा देख रहा था जोर से चिल्ला पड़ा — "अब आदमी नहीं बस गरुड़ और वह भी **100** गरुड़ों की ताकत वाला।"

यह कहते ही वह एक गरुड़ के रूप में बदल गया और बादल के पीछे भागने लगा। वे एक महल पर आये। महल का दरवाजा खुला। बादल उड़ी और राजकुमारी के साथ उस महल में घुस कर उसे सीढ़ियों से ऊपर ले गयी।

गरुड़ बाहर एक पेड़ पर बैठ गया। वहॉ से उसने देखा कि उस कमरे में बहुत सारी सुन्दर लड़कियॉ एक बिस्तर में भरी हुई हैं। जब

बादल परी घुसी तो लड़कियॉ चिल्लायीं — "देखो मामा हमारी मॉ यहॉ है।

वे बेचारी लड़कियॉ हमेशा बिस्तर में ही लेटी रहतीं क्योंकि बादल ने उन्हें अधमरा कर रखा था। वहॉ ले जा कर उसने राजकुमारी को भी एक बिस्तर पर लिटा दिया और बोली — "देखो मैं तुम्हें कुछ दिनों के लिये छोड़ कर जा रही हूॅ।" इतना कह कर वह उनको वहीं अकेला छोड़ कर चली गयी।

नौजवान पास में ही था इसलिये उसने सब सुन लिया था। अब वह बोला "अब आदमी नहीं बस चींटी और वह भी **100** चींटियों की ताकत वाली।"

इस तरह से वह उस महल में चींटी बन कर अदृश्य रूप से महल में घुस गया और उस कमरे में पहुॅच गया जिसमें वे सब लड़कियॉ बन्द थीं। वहॉ जा कर उसने फिर से अपना आदमी का रूप ले लिया। लड़कियॉ तो अपने कमरे में एक आदमी को देख कर आश्चर्य में पड़ गयीं।

फिर एक बोली — "अपना ख्याल रखना। यहॉ एक परी रहती है। जब वह वापस आयेगी और तुम्हें देखेगी तो तुम्हें तो वह मार ही देगी।"

वह बोला — "चिन्ता न करो। क्योंकि मेरी इच्छा है कि मैं तुम लोगों को यहॉ से आजाद करा दूॅ।"

फिर वह राजकुमारी के पलंग की तरफ गया और राजकुमारी से पूछा कि क्या उसके पास कोई चीज़ है जिसे वह अपनी पहचान के लिये अपनी मॉ के लिये दे सके। उसने उसको अपनी अॅगूठी दी। नौजवान ने उसे लिया और उसकी मॉ के पास गया।

वहॉ जा कर उसने रानी को बताया कि उसकी बेटी कहॉ थी और उससे उसके लिये कुछ खाना भेजने के लिये कहा। रानी ने उसको कुछ खाना दिया और वह खाना ले कर उसी जगह वापस चल दिया।

वहॉ पहुॅच कर उसने लड़कियों से कहा — "जब परी आये तो उससे पूछना कि जब वह मर जायेगी तब तुम्हारा क्या होगा। इससे तुम लोगों को यह पता चल जायेगा कि वह कैसे मरेगी।"

लड़कियों को यह समझा कर वह छिप गया। जब परी आयी तो लड़कियों ने उससे वही सवाल पूछा तो वह बोली "मैं कभी नहीं मरूॅगी।"

उन्होंने उससे बहुत विनती की तो अगले दिन वह उनको बाहर एक छज्जे पर ले गयी और वहॉ से एक ओर इशारा करते हुए बोली — "वह पहाड़ देख रही हो। उस पहाड़ पर एक मादा चीता रहती है जिसके सात सिर हैं। अगर तुम चाहती हो कि मैं मरूॅ तो एक शेर को उस मादा चीते से जरूर लड़ना चाहिये और उसके सातों सिर तोड़ देने चाहिये।

उसके शरीर में एक अंडा है अगर कोई मुझे उस अंडे से मेरे माथे के बीच में मारे तो मैं मर जाऊँगी। पर अगर वह अंडा मेरे हाथ में आ जायेगा तो मादा चीता ज़िन्दा हो जायेगी। उसके सारे सिर उसके शरीर पर लग जायेंगे और मैं ज़िन्दा रहूँगी।"

लड़कियाँ खुशी से बोलीं — "यह तो बड़ा अच्छा है। इस तरह से तो हमारी मामा कभी मरेगी ही नहीं।"

पर अपने अपने दिलों में वे सब बहुत निराश महसूस कर रही थीं। जब परी चली गयी तो नौजवान अपनी छिपी हुई जगह से बाहर निकला। लड़कियों ने उसे सब बता दिया। नौजवान ने उनको तसल्ली दी कि उनको इतना घबराने की जरूरत नहीं है।

उन सबको तसल्ली दे कर तुरन्त ही वह राजा के पास गया और उससे एक कमरा, एक बड़ा बर्तन भर कर रोटी, एक बैरल बढ़िया शराब और एक सात साल का लड़का लिया और खुद को इन सबके साथ उस कमरे में बन्द कर लिया।

उसने बच्चे से पूछा — "क्या तुम कुछ देखना चाहते हो। देखो मैं अब एक शेर में बदलता हूँ। जब मैं वापस लौट कर आऊँ तो तुम मुझे कुछ खाने को दे देना। समझे।"

कह कर वह एक शेर में बदल गया। उसको देख कर बच्चा डर गया पर नौजवान ने उसे समझाया कि वह तो केवल नौजवान ही था और कोई नहीं। फिर वह मादा चीते से लड़ने चलने गया।

इस बीच परी वापस आ गयी और आ कर बोली — "मुझे कुछ अच्छा नहीं लग रहा है।" लड़कियों ने अपने मन में सोचा कि यह तो बड़ी अच्छी बात है।

नौजवान उस मादा चीते से रात तक लड़ता रहा और उसका एक सिर तोड़ दिया। दूसरे दिन उसने उसका दूसरा सिर तोड़ दिया। इस तरह से रोज वह उसका एक एक सिर तोड़ता रहा जब तक कि उसने उसके सारे सिर नहीं तोड़ दिये।

जैसे जैसे उसके सिर टूटते जाते थे परी कमजोर पड़ती जा रही थी। उसका आखिरी सिर तोड़ने से पहले नौजवान ने दो दिन आराम किया और फिर लड़ाई शुरू की।

उसका आखिरी सिर शाम को टूटा तो वह मादा चीता गायब हो गयी पर नौजवान तब तक उसके अन्दर से अंडा नहीं निकाल पाया सो वह उसके शरीर से निकल कर लुढ़कता हुआ समुद्र में गिर गया। डौग मछली ने उसे तुरन्त ही निगल लिया।

यह देख कर नौजवान समुद्र के किनारे गया और बोला — "डौग मछली मेरी सहायता करो।"

मछली ऊपर आयी और उसने पूछा — "बोलो मैं तुम्हारे लिये क्या करूँ।"

"क्या तुमने कोई अंडा देखा है।"

"हॉ।"

"वह मुझे दे दो।"

मछली ने उसे अंडा दे दिया। अंडा ले कर वह अब परी की खोज में चल दिया। अचानक ही वह अपने हाथ में अंडा लिये हुए उसके सामने ही खड़ा था। परी चाहती थी कि वह वह अंडा उसको दे दे पर उसने कहा कि पहले वह उन सब लड़कियों की ज़िन्दगी वापस कर दे और उन सबको सुन्दर गाड़ियों में उनके घर भेज दे।

उसके बाद उसने वह अंडा परी के माथे के बीच में मार कर फोड़ दिया। अंडे के फूटते ही परी मर कर नीचे गिर पड़ी। जब नौजवान ने यह पक्का कर लिया कि परी सचमुच में ही मर गयी तब वह राजकुमारी के साथ उसकी गाड़ी में बैठ गया और उसको ले कर राजा के पास पहुँचा।

जब राजा और रानी ने अपनी बेटी को सकुशल आते देखा तो उनकी ऑखों में खुशी के ऑसू आ गये। उन्होंने उसकी शादी उसी नौजवान से कर दी। शादी बहुत शानदार ढंग से हुई। सारे शहर में बहुत खुशियॉ मनायी गयीं।

कुछ दिन बाद पति ने खिड़की से बाहर देखा तो देखा कि सड़क के आखीर में एक बहुत बड़ा और घना सा कोहरा है। उसने अपनी पत्नी से कहा — "मैं ज़रा देख कर आता हूँ कि वह कोहरा कैसा है।"

सो उसने अपने शिकारियों वाले कपड़े पहने और अपने घोड़े पर सवार हो कर अपने कुत्ते को ले कर चल दिया। जब उसने वह

कोहरा पार कर लिया तो उसे एक पहाड़ दिखायी दिया जिस पर दो स्त्रियॉ थीं।

वे उससे मिलने के लिये आयीं और उसे अपने महल में ले गयीं। वह उनको साथ चला गया। उन्होंने उसको एक कमरे में बिठा दिया। उनमें से एक स्त्री ने उससे पूछा कि क्या वह एक बाज़ी शतरंज[34] की खेलना चाहेगा।

"हॉ हॉ क्यों नहीं।"

उन्होंने खेलना शुरू किया। वह तो पहली ही बाज़ी हार गया। उसके बाद वे उसको एक बागीचे में ले गयीं जहॉ बहुत सारी मूर्तियॉ खड़ी हुई थीं। वहॉ उन्होंने उसको उसके घोड़े और कुत्ते को भी पत्थर की मूर्ति में बदल दिया।

ये स्त्रियॉ उस परी की बहिनें थीं जिसको यह नौजवान मार कर आया था। इस तरह से इन्होंने अपनी बहिन के खून का बदला लिया।

इस बीच राजकुमारी अपने पति का इन्तजार करती रही पर उसका पति नहीं लौटा। एक सुबह इस नौजवान के पिता और भाइयों ने देखा कि रसोईघर में मछली की हड्डियों से निकल निकल कर खून बह रहा है।

उन्होंने आपस में कहा — "लगता है उसको कुछ हो गया है।"

---

[34] Game of Chess. A very popular indoor game.

कह कर दूसरा भाई अपने बड़े भाई की खोज में निकला। उसने भी अपना एक घोड़ा और एक कुत्ता लिया और चल दिया। चलते चलते वह राजकुमारी के महल की खिड़की के नीचे से गुजरा। राजकुमारी उस समय अपनी खिड़की पर बैठी हुई थी।

जब उसने दूसरे भाई को देखा तो उसको लगा कि उसका पति वहॉ से गुजर रहा था सो उसने उसको आवाज दी। दूसरा भाई उसके बुलाने पर ऊपर गया तो राजकुमारी ने उससे कोहरे की बात की।

पर वह क्योंकि उसका पति नहीं था इसलिये उसको राजकुमारी की कोई बात समझ में नहीं आयी। सो वह चुप ही रहा और उसने उसी को बात करने दी। उसको समझ में आ गया था कि वह गलती से उसे अपना पति समझ बैठी थी।

अगली सुबह वह उठा तो अपने घोड़े और कुत्ते के साथ कोहरा देखने चल दिया। वह भी कोहरा पार कर गया। कोहरा पार कर के उसको भी एक पहाड़ मिला जिस पर दो स्त्रियॉ थीं। उसके साथ भी वही घटा जो उसके बड़े भाई के साथ घटा था। वह भी अपने घोड़े और कुत्ते के साथ पत्थर बन गया।

रानी बेचारी उसका फिर इन्तजार करती रही और उसके पिता की रसोईघर में खून और ज़्यादा तेज़ी से बहने लगा। यह देख कर तीसरा भाई भी बचे हुए घोड़े और कुत्ते को ले कर अपने दोनों भाइयों की खोज में निकल पड़ा।

वह भी उसी महल के नीचे आ पहुँचा जिसमें उसकी भाभी रहती थी। इत्तफाक से उस दिन भी राजकुमारी अपनी खिड़की में बैठी थी सो जैसे ही उसने तीसरे भाई को देखा तो उसे लगा कि उसका पति वापस आ गया।

उसने उसको भी ऊपर बुलाया और अबकी बार उसको इतना ज़्यादा इन्तजार करवाने के लिये डॉटा। पर यह भाई भी क्योंकि उसका पति नहीं था सो उसकी कही हुई बातें नहीं समझ सका।

पर फिर भी वह बोला — "जब मैं उस कोहरे में गया तब मुझे कोहरे में क्या था कुछ साफ दिखायी नहीं दिया। मैं अब दोबारा जाना चाहता हूँ।"

यह कह कर वह अपना घोड़ा और कुत्ता ले कर वहॉ से चला गया। अबकी बार इसे कोहरे से निकलने के बाद एक बूढ़ा मिला।

बूढ़े ने पूछा — "बेटा तुम कहॉ जा रहे हो। तुम्हारे भाई तो पत्थर की मूर्ति बना दिये गये है। यहॉ से निकल कर तुमको दो स्त्रियॉ मिलेंगी। अगर वे तुमसे शतरंज खेलने के लिये कहें तो लो ये दो प्यादे[35] लो और तुम उनसे कहना कि तुम केवल अपने ही प्यादों से खेल सकते हो।

[35] Translated for the word "Pawn". A chess piece smallest in size. See the front line of each color, cream and brown, pieces. They are all pawns. In total there are 16 pawns in chess.

उसके बाद उनसे एक समझौता करना कि अगर तुम जीत गये तो तुम उनके साथ जो चाहे कर सकते हो और अगर वे जीत गयीं तो वे तुम्हारे साथ कुछ भी कर सकती हैं।

अब अगर तुम जीत गये तो वे तुमसे दया की भीख माँगेंगी। उस समय तुम उनसे कहना कि वे सारी पत्थर की मूर्तियों को ज़िन्दा कर दें जिनसे उनका महल भरा हुआ है। और जब वे ऐसा कर दें तो फिर तुम उनके साथ जो चाहे कर सकते हो।"

नौजवान ने बूढ़े को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और वहाँ से चल दिया। आगे चल कर उसने वैसा ही किया जैसा उस बूढ़े ने उससे करने के लिये कहा था। वह जीत गया।

दोनों स्त्रियों ने उससे दया की भीख माँगी तो उसने उनकी विनती स्वीकार कर ली इस शर्त पर कि वह अपने महल की सारी मूर्तियों को ज़िन्दा कर दें। उन्होंने एक जादू की छड़ी उठायी और उससे सब मूर्तियो को छू कर उन सबको ज़िन्दा कर दिया।

पर जैसे ही वे सब ज़िन्दा हुए उन सबने मिल कर उन दोनों स्त्रियों के छोटे छोटे टुकड़े कर दिये।

इस तरह तीनों भाई आपस में मिल गये। तीनों ने एक दूसरे को अपनी अपनी कहानियाँ सुनायीं और महल लौट आये। राजकुमारी तो उन तीनों की एकसी शक्ल देख कर बहुत ही आश्चर्यचकित रह गयी। वह तो पहचान ही नहीं सकी कि उन तीनों में से उसका पति कौन है।

पर उसके पति ने उसे खुद ही बता दिया कि वह उसका पति है और दूसरे दो उसके छोटे भाई थे। फिर उन्होंने अपने माता पिता को भी बुला लिया और वे सब खुशी खुशी रहने लगे।

अब हम कहानियों की एक ऐसी किस्म की तरफ चलते हैं जिसमें किसी काम को करने में कई भाइयों में से केवल एक भाई सफल होता है और दूसरे भाई वह काम नहीं कर पाते जिसकी वजह से सफल होने वाला भाई बाकी भाइयों की नफरत का निशाना बनता है। नफरत की वजह से वे उसको या तो किसी गुफा में छोड़ देते हैं या फिर मार डालते हैं और उसकी लाश को कहीं छिपा देते हैं। यह लाश बाद में किसी संगीत के वाद्य की सहायता से मिलती है जो या तो हड्डी का बनाया गया होता है या फिर कब्र के ऊपर उगे हुए सरकंडे का बनाया गया होता है।

इस कहानी "तालाब" में इसकी पहली तरह की कहानी की तरह यानी हड्डी का बना वाद्य इस्तेमाल किया गया है। यह कहानी जियूसैप्पे पित्रे की लिखी हुई कहानियों में से उसकी नम्बर **80** की कहानी है।[36]

[36] Giuseppe Pitre. "The Cistern". Story No 80.

7 तालाब[37]

एक बार की बात है कि एक राजा के तीन बेटे थे। उनमें से उसके दो बेटे शिकार के लिये जाने लगे। तीसरे बेटे को उसकी विनती करने के बाद भी वे उसको अपने साथ ले कर नहीं गये। उनकी मॉ ने उनसे कहा भी कि वे उसको अपने साथ ले जायें पर वे नहीं माने।

पर सबसे छोटा भाई भी कुछ अड़ियल था सो वह उनके पीछे पीछे चल दिया सो उनको उसे साथ ले जाना ही पड़ा।

चलते चलते वे एक मैदान में निकल आये। वहॉ एक बहुत सुन्दर तालाब भी था। उन्होंने वहॉ अपना खाना खाया। जब उन्होंने खाना खत्म कर लिया तो दोनों भाइयों ने आपस में विचार किया कि वे अपने छोटे भाई को तालाब में फेंक देते हैं क्योंकि हम उसको अपने साथ नहीं ले जा सकते।

तब उन्होंने अपने भाई से कहा — "साल्वातोर। इस तालाब में एक खजाना छिपा हुआ है तो क्या तुम इस तालाब में उतरना चाहोगे।"

छोटा भाई राजी हो गया और उन्होंने उसे तालाब में उतार दिया। जब वह तालाब की तली तक पहुँचा तो वहॉ उसको तीन सुन्दर कमरे दिखायी दिया। वहॉ एक बुढ़िया भी थी।

---

[37] The Cistern. Tale No 7. By Giuseppe Pitre. (Tale No 80)

बुढ़िया ने उससे पूछा — "तुम यहॉ क्या कर रहे हो।"

लड़का बोला — "मैं यहॉ से बाहर जाने का रास्ता ढूँढ रहा हूँ। आप मुझे बताऐं कि मैं यहॉ से बाहर कैसे जा सकता हूँ।"

बुढ़िया बोली — "यहॉ तीन राजकुमारियॉ हैं जो एक जादूगर के कब्जे में हैं। तुम्हें पहले उन्हें छुड़ाना होगा। अपना ख्याल रखना।"

लड़का बोला — "आप चिन्ता मत कीजिये बस यह बता दीजिये कि मुझे करना क्या है। मैं डरता नहीं हूँ।"

बुढ़िया ने कहा "दरवाजा खटखटाओ।"

लड़के ने वैसा ही किया तो दरवाजे पर एक राजकुमारी आयी और बोली "तुम यहॉ क्यों आये हो।"

"मैं तुमको यहॉ से आजाद कराने के लिये आया हूँ। मुझे बताओ कि मैं क्या करूँ।"

बोली — "लो यह सेब लो और उस दरवाजे में से चले जाओ। मेरी बहिन वहॉ है यह बात वही तुम्हें मुझसे ज़्यादा अच्छी तरीके से बतायेगी।"

राजकुमारी ने एक सेब उसको निशानी के तौर पर दे दिया। उसने दूसरा दरवाज खटखटाया तो एक और राजकुमारी ने दरवाजा खोला। उसने अपनी यादगार के लिये उसे एक अनार दिया और कहा कि वह एक और दरवाजा खटखटाये।

उसने वह दरवाजा खटखटाया तो तीसरी राजकुमारी ने दरवाजा खोला। दरवाजा खोल कर राजकुमारी बोली — "आह साल्वातोर। तुम यहॉ क्यों आये हो।"

लड़का बोला — "मैं तुम्हें आजाद कराने आया हूॅ। मुझे बताओ मुझे क्या करना होगा।"

राजकुमारी ने उसको एक ताज दिया और कहा — "इसे लो और जब भी तुम किसी जरूरत में हो तो इस ताज से कहना "मैं तुम्हें हुक्म देता हूॅ मैं तम्हें हुक्म देता हूॅ।" तो यह ताज वैसा ही करेगा जो तुम इससे करने के लिये कहोगे।

अब तुम अन्दर आ जाओ और कुछ खा पी लो। यह बोतल लो। जादूगर बस अब उठने ही वाला है। जैसे ही वह जागेगा तो वह तुम्हारे बारे में पूछेगा कि "तुम यहॉ किसलिये आये हो।"

तो तुम जवाब देना "कि मैं आपसे लड़ने आया हूॅ पर मैं आपके घोड़े से छोटा वाला घोड़ा और आपकी तलवार से छोटी वाली तलवार लूॅगा क्योंकि मैं आपसे छोटा हूॅ।"

तुमको वहॉ एक फव्वारा दिखायी देगा जो तुमको पानी पीने के लिये बुलायेगा पर तुम यह खतरा मोल मत लेना। क्योंकि वहॉ तुम जितनी भी मूर्तियॉ देखोगे वह सब आदमी लोगों की हैं जो उस फव्वारे का पानी पी कर मूर्ति बन गये हैं। जब तुम्हें प्यास लगे तब तुम छिप कर इस बोतल से पानी पी लेना।"

इन सब निर्देशों के साथ नौजवान वहॉ से गया और एक और दरवाजा खटखटाया। जादूगर उसी समय उठ गया और पूछा — "तुम यहॉ क्यों आये हो।"

"मैं आपसे लड़ने आया हूॅ।" उसने उससे वह भी कहा जो राजकुमारी ने उससे कहने के लिये कहा था। राजकुमारी ने जैसा कहा था फव्वारे ने उसको पानी पीने के लिये बुलाया पर उसी का कहना मान कर वह वहॉ पानी पीने भी नहीं गया।

उन दोनों में लड़ाई शुरू हुई। पहली ही बार में नौजवान ने जादूगर की गर्दन काट दी। उसने सिर और तलवार उठायी और उनको राजकुमारी के पास ले गया और उससे कहा — "चलो। जल्दी से अपना सामान बटोर लो और यहॉ से चलो क्योंकि मेरे भाई अभी भी तालाब के किनारे मेरा इन्तजार कर रहे होंगे।"

अब हम भाइयों के पास चलते हैं। अपने सबसे छोटे भाई को तालाब में नीचे उतारने के बाद वे अपने शाही महल में वापस लौट गये।

राजा ने पूछा — "तुम्हारा भाई कहॉ है।"

वे बोले — "वह जंगल में खो गया। ढूॅढने पर भी वह हमें मिला नहीं।"

राजा बोला — "जल्दी करो। मेरे बेटे को ढूॅढ कर लाओ वरना मैं तुम्हारे हाथ कटवा दूॅगा।"

सो वे वहॉ से चल दिये। चलते चलते उनको एक आदमी मिला जिसके पास एक रस्सी और एक घंटी थी। इन्होंने उसको अपने साथ ले लिया और तालाब पर आ पहुँचे। वहॉ पहुँच कर उन्होंने रस्सी में घंटी बॉध कर तालाब में नीचे गिरायी।

वे आपस में कहने लगे — "कि अगर वह ज़िन्दा है तो घंटी की आवाज जरूर सुन लेगा और रस्सी पकड़ कर ऊपर आ जायेगा। पर अगर कहीं वह मर गया तो हम अपने पिता से क्या कहेंगे।"

जब उन्होंने रस्सी लटकायी तो साल्वातोर ने एक एक कर के राजकुमारियों को ऊपर चढ़ा दिया। जैसे ही पहली वाली राजकुमारी ऊपर पहुँची जो सबसे बड़ी थी सबसे बड़े भाई के मुँह से निकला "ओह कितनी सुन्दर है यह। यह मेरी पत्नी बनेगी।"

जब दूसरी राजकुमारी ऊपर आयी तो दूसरे भाई के मुँह से निकला — "अरे यह मेरी पत्नी बनेगी।"

सबसे छोटी राजकुमारी साल्वातोर से पहले ऊपर जाना नहीं चाहती थी। उसने साल्वातोर से कहा — "साल्वातोर पहले तुम ऊपर जाओ क्योंकि अगर तुम नीचे रह गये तो तुम्हारे भाई लोग तुम्हें नीचे ही छोड़ जायेंगे।"

उसने कहा कि नहीं वह पहले ऊपर नहीं जायेगा। पहले वह उसी को भेजेगा। आखिर नौजवान की जीत हुई और राजकुमारी को पहले ऊपर आना पड़ा। जब वह बाहर निकली तो दोनों भाइयों

ने उसे लिया साल्वातोर को तालाब में ही छोड़ा और महल चले गये।

जब वे अपने पिता के पास पहुँचे तो उन्होंने अपने पिता से कहा कि उन्होंने साल्वातोर को ढूँढने की बहुत कोशिश की पर वह उनको नहीं मिला। हाँ हमको ये तीन लड़कियाँ जरूर मिल गयीं। अब हम इनसे शादी करना चाहते हैं।"

सबसे बड़े भाई ने सबसे बड़ी वाली राजकुमारी की तरफ देखते हुए कहा "मैं इससे शादी करूँगा।" दूसरे ने दूसरी राजकुमारी की तरफ इशारा करते हुए कहा "मैं इससे शादी करूँगा।" तीसरी राजकुमारी के लिये उन्होंने कहा कि वे उसकी शादी किसी और से करवा देंगे।

X X X X X X X

अब हम साल्वातोर के पास चलते हैं। साल्वातोर ने जब देखा कि वह अकेला ही रह गया है तो उसने अपनी जेब में रखे सेब को छुआ और कहा — "ओ सेब। मुझे यहाँ से बाहर निकालो।"

तुरन्त ही उसने अपने आपको तालाब के बाहर खड़ा पाया। वह वहाँ से अपने शहर गया जहाँ वह रहता था। वहाँ उसने एक चाँदी का काम करने वाले को ढूँढा। वह खाने कपड़े पर उसके यहाँ काम करने लगा।

जब वह वहाँ काम कर रहा था तब राजा ने चाँदी का काम करने वाले को हुक्म दिया कि वह उसके सबसे बड़े बेटे के लिये एक ताज बनाये जिसकी अभी शादी होने वाली थी। राजा का हुक्म था कि वह उसके बेटे के लिये बनाये ताज को अगले दिन शाम तक ही उसके पास ले कर आये।

उसने ताज बनाने वाले को **10** औंस दे दिये और वापस भेज दिया। जब चाँदी का काम करने वाला घर पहुँचा तो वह बहुत ही परेशान हुआ क्योंकि ताज बनाने के लिये उसके पास समय बहुत कम था।

उसको परेशान देख कर साल्वातोर बोला — "बाबा आप इतने परेशान क्यों है?"

चाँदी का काम करने वाला बोला — "लो यह **10** औंस लो क्योंकि मैं अब चर्च में शरण लेने जा रहा हूँ। क्योंकि अब मेरे करने के लिये कुछ भी नहीं है।"[38]

साल्वातोर बोला — "पर हुआ क्या है। मुझे कुछ बताइये तो सही।

"राजा ने मुझे एक चाँदी का ताज बनाने के लिये कहा है और कहा है कि मैं उसे कल शाम तक उनके पास ले जाऊँ। अब तुम्हीं बताओ कि इतनी जल्दी यह ताज कैसे बन सकता है।"

[38] For in the olden times the Church had the privilege that whoever robbed or killed fled to the Church because they could not do anything with him.

राजकुमार बोला — "मुझे देखने दीजिये अगर मैं यह ताज बना सकता हूँ तो। क्या मेरा मालिक इतनी छोटी सी बात के लिये चर्च की शरण लेगा?"

सो उसने ताज बनाना शुरू किया। उसने क्या किया? उसने अपना सेब निकाला और उससे कहा कि वह उसके लिये एक सुन्दर सा ताज बना दे। उसने उसे दो चार बार हथौड़ी मारी और सेब ने उसका ताज बना दिया।

जब वह ताज बन गया तो वह ताज उसने मालकिन को दे दिया। मालकिन उस ताज को ले कर अपने पति के पास ले गयी। मालिक ने जब देखा कि उसका ताज बन गया है तो उसने सोचा कि अब उसे चर्च भागने की जरूरत नहीं है। वह उसको ले कर राजा के पास गया। राजा उस ताज को देख कर बहुत खुश हुआ और उसने उसे शाम को दावत में बुलाया।

जब उसने यह बात घर जा कर बतायी तो साल्वातोर बोला — "बाबा मुझे भी दावत में ले चलिये।"

मालिक बोला — "बेटा मैं तुम्हें वहाँ कैसे ले चलूँ तुम्हारे पास तो वहाँ पहनने लायक कपड़े तो हैं ही नहीं। मैं पहले तुम्हारे लिये कपड़े खरीदूँगा फिर तुम्हें किसी दूसरी दावत में ले चलूँगा।"

जब दो बजे तो चाँदी का काम करने वाला तैयार हो कर दावत में चल दिया। उसके जाने के बाद साल्वातोर ने अपना सेब निकाला और उससे कहा — "मुझे बहुत अच्छे कपड़े दो। एक बढ़िया गाड़ी

दो और गाड़ी पर खड़े होने वाले आदमी दो क्योंकि मैं अपने भाई की शादी में जा रहा हूँ।"

तुरन्त ही वह एक राजकुमार जैसा सज गया और अपनी गाड़ी में बैठ कर राजा के महल गया और वहाँ जा कर राजा के रसोईघर में जा कर छिप गया। वहीं से उसने अपने भाई की शादी देखी। फिर उसने एक डंडी ली और उससे अपने मालिक को बहुत पीटा।

जब चाँदी के काम करने वाला घर पहुँचा तो चिल्लाता गया "मैं मर गया। मैं मर गया।"

साल्वातोर ने पूछा — "क्या हुआ मालिक?"

मालिक ने उसे बताया कि क्या हुआ था।

सुन कर वह बोला — "अगर आप मुझे साथ ले गये होते तो आपके साथ ऐसा न हुआ होता।'

कुछ दिन बाद राजा ने चाँदी के काम करने को फिर बुलाया और फिर उससे **24** घंटे के अन्दर अन्दर एक और ताज बनाने के लिये कहा। सब कुछ पहले की तरह से हुआ। साल्वातोर ने इस बार पहले वाले ताज से भी अच्छा ताज बनाया। यह उसने अबकी बार अनार की सहायता से बनाया।

चाँदी का काम करने वाला उसको राजा के पास ले कर गया तो राजा ने उसे फिर से शाम को दावत में बुलाया। वह फिर से साल्वातोर को वहाँ ले कर नहीं गया तो इस बार वह अपना कन्धे पर पिटाई से नील डलवा लाया।

कुछ समय बाद वे तीसरी बहिन की शादी करना चाहते थे तो उसने कहा — "जो भी मुझसे शादी करना चाहता है उसे एक साल एक महीना और एक दिन इन्तजार करना पड़ेगा।"

क्योंकि वह इस बात से बहुत परेशान थी कि उसके राजकुमार के पास सेब था अनार था ताज था फिर भी वह क्यों नहीं आया। जब एक साल एक महीना और एक दिन बीत गया तब उसकी शादी का इन्तजाम किया गया।

राजा ने चॉदी के काम करने वाले को एक और ताज बनाने के लिये कहा जो पहले दोनों ताजों से भी ज़्यादा सुन्दर हो। ऐसा इसलिये किया गया था ताकि उसे ऐसा न लगे कि वह कोई दूसरी लड़की है और उसके प्रति कोई भेद भाव हो रहा है।

चॉदी का काम करने वाले को फिर से परेशानी हो गयी। साल्वातोर ने अबकी बार अपने ताज की सहायता ली और पिछले दोनों ताजों से ज़्यादा बड़ा और सुन्दर बनाया।

राजा तो उस सुन्दर ताज को देख कर आश्चर्य में पड़ गया। उसने फिर से चॉदी का काम करने वाले को शाम को दावत में बुलाया। इस बार चॉदी का काम करने वाला बहुत उदास घर लौटा। उसको लग रहा था कि वह राजा के घर से फिर से पिट कर लौटेगा पर वह अपने इस नौकर को नहीं ले जायेगा।

साल्वातोर ने जब देखा कि उसका मालिक चला गया तो उसने अपना जादू वाला ताज लिया और उससे बढ़िया कपड़े और गाड़ी

मॉगी। इस बार जब वह महल पहुँचा तो वह रसोईघर में नहीं गया बल्कि इसके पहले कि शादी में दुलहा और दुलहिन एक दूसरे को हॉ कहते वह बोला — "रुक जाओ।"

उसने सेब अपने हाथ में लिया और पूछा — "यह मुझे किसने दिया?"

सबसे बड़े भाई की पत्नी बोली — "यह तुम्हें मैंने दिया था।"

फिर उसने अनार दिखाते हुए पूछा — "और यह?"

उसके दूसरे भाई की पत्नी बोली — "यह तुम्हें मैंने दिया था देवर जी।"

उसके बाद उसने ताज निकाला और पूछा "यह मुझे किसने दिया था?"

तीसरी लड़की जिसकी शादी हो रही थी बोली — "मैंने मेरे पति।"

फिर उसने तुरन्त ही साल्वातोर से शादी कर ली। वह बोली — "क्योंकि इसी ने मुझे जादूगर की कैद से आजाद कराया था इसलिये मैं इसी से शादी करूँगी।"

इस तरह से तीसरी राजकुमारी का पति बेवकूफ बन गया और वहॉ से चला गया और चॉदी का काम करने वाला आश्चर्य से अपने नौकर के पैरों पर पड़ गया और उससे दया की भीख मॉगने लगा।

इस कहानी के कई रूपों में हीरो अपने भाइयों के द्वारा गुफा या तालाब में छोड़ देने के बाद एक गरुड़ के द्वारा ऊपर की दुनियॉ में ले जाया जाता है। इस तरह से ऊपर की दुनियॉ में ले जाते समय चिड़िया उससे समय समय पर मॉस मॉगती है। आखिर मॉस का वह भंडार जो हीरो के पास होता हे वह खत्म हो जाता है तो वह अपना कुछ मॉस काटने पर मजबूर हो जाता है। इसके एक रूप में वह पक्षी को अपनी टॉग देता है और यात्रा के खत्म होने पर चिड़िया उसको कुछ देती है जिसे वह अपनी टॉग में लगा लेता है और उसकी टॉग पूरी तरह से ठीक हो जाती है।

इन कहानियों के उस रूप में जिनमें भाई मारा जाता है उसकी मौत की सूचना किसी संगीत वाद्य को बजा कर दी जाती है जो खुद उसी के शरीर से बनाया जाता है इस बात को इस आने वाली कहानी में बताया गया है — "ग्रिफिन"।[39]

[39] Griffin. By Vittorio Imbriani in "Pomiglianesi". p 195

8 ग्रिफ़िन[40]

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसके तीन बेटे थे। उसकी ऑखों में कोई रोग था। डाक्टर को बुलाया गया तो उसने उसकी ऑखें देख कर कहा कि उसको ग्रिफ़िन का एक पंख चाहिये।

राजा ने अपने तीनों बेटों को बुलाया और उनसे कहा — "जो कोई भी मेरे लिये ग्रिफ़िन पक्षी का पंख ला कर देगा उसी को मेरा ताज मिलेगा।" उसके तीनों बेटे उसके लिये ग्रिफ़िन का पंख लाने के लिये चल दिये।

सबसे छोटा बेटा एक बूढ़े से मिला तो बूढ़े ने उससे पूछा — "बेटा तुम क्या करने जा रहे हो?"

उसने जवाब दिया — "मेरे पिता जी बीमार हैं। उनके इलाज के लिये ग्रिफ़िन का एक पंख बहुत जरूरी है। उन्होंने यह भी कहा है कि जो कोई भी उन्हें यह पंख ला कर देगा उनका राज्य उसी को मिलेगा।"

बूढ़ा बोला — "लो ये कुछ अनाज के दाने लो। जब तुम फलॉ फलॉ जगह पहुँच जाओ तो तुम इन्हें अपने टोप में रख लेना। ग्रिफ़िन आयेगा और इन दानों को खायेगा। तब तुम उसे पकड़

---

[40] The Griffin. Tale No 8. By Vittorio Imbriani in "Pomiglianesi". p 195
Its corresponding story is (1) Grimm – The Singing Bone. (Tale No 28),
Griffin, also spelled griffon or gryphon, composite mythological creature with a lion's body (winged or wingless) and a bird's head, usually that of an eagle.

लेना और उसका एक पंख निकाल लेना और अपने पिता के पास ले जाना।"

नौजवान ने ऐसा ही किया। उसने इस डर की वजह से कि कोई उससे उसे चुरा न ले उसने उसे अपने जूते में छिपा लिया। रास्ते में उसे उसके भाई मिले तो उन्होंने पूछा कि क्या उसको ग्रिफ़िन का पंख मिल गया।

उसने कहा "नहीं।" पर उसके भाइयों ने उस पर विश्वास नहीं किया उन्होंने उसको ढूँढना चाहा पर पंख उनको कहीं नहीं मिला। बाद में उन्होंने उसके जूते देखे तो उनको वह पंख वहॉ मिल गया। उन्होंने उसको मार कर पंख निकाल लिया और उसकी लाश को दफ़ना दिया।

उस पंख को ले कर वे पिता के पास गये तो उन्होंने कहा — "लीजिये पिता जी यह पंख हमें मिल गया है।" राजा की ऑखें उस पंख से ठीक हो गयी।

एक दिन एक गड़रिया अपनी भेड़ें चरा रहा था तो उसने देखा कि उसका कुत्ता रोज ही एक जगह खोदता रहता था। वह वहॉ देखने गया कि उसका कुत्ता वहॉ क्या खोदता है तो उसने देखा कि वहॉ से निकाल कर वह एक हड्डी चबा रहा है।

उसने उसे अपने मुँह पर रखा तो उसने देखा कि वह तो बज रही थी। वह गा रही थी — "ओ गड़रिये। तुम इसको अपने मुँह में ही रखो और मुझे कस कर पकड़े रहना और छोड़ना नहीं। क्योंकि

ग्रिफ़िन के केवल एक पंख के लिये मेरे भाई ने मुझे धोखा दे दिया। मेरे भाई ने मुझे धोखा दे दिया।"

एक दिन वह अपनी यह सीटी बजाते बजाते राजा के महल के पास से गुजर रहा था तो राजा ने उसका यह गाना सुना और उसको बुलाया कि "देखें यह क्या है और यह क्या बोल रहा है।"

गड़रिये ने उनको उसकी सारी कहानी बता दी कि उसको यह कैसे मिली। राजा उस सीटी को अपने मुँह के पास ले गया तो सीटी ने गाया — "पिता जी मुझे अपने मुँह में रखिये मुझे छोड़ना नहीं। ग्रिफ़िन के केवल एक पंख के लिये मेरे भाई ने मुझे धोखा दे दिया। मेरे भाई ने मुझे धोखा दे दिया।"

यह सुन कर राजा ने उसको अपने उस बेटे को मुँह मे रखने के लिये कहा जिसने उसको मारा था। जब उसने उसे मुँह में रखा तो उसने गाया — "भाई भाई। तुम मुझे अपने मुँह में रखो। मुझे छोड़ना नहीं। तुमने ग्रिफ़िन के केवल एक पंख के लिये मुझे धोखा दे दिया। तुमने मुझे धोखा दे दिया।"

यह सुन कर राजा सारी कहानी जान गया। उसने अपने दोनों बेटों को मरवा दिया। इस तरह से पहले उन्होंने अपने भाई को मारा फिर खुद भी मारे गये।

"वूट्स" यानी जिसमें "सबसे छोटा भाई सफल" हो जाता है की स्त्री लिंग वाली कहानी "सिन्डरैला" है।[41] इसमें तीन बहिनों में से सबसे छोटी बहिन को दोनों बड़ी बहिनें बुरा भला कहती रहती हैं और उससे बुरा व्यवहार करती हैं। साधारणतया इसके बैठने की जगह चिमनी के पास कोने में है। यह नाम इसको इसी लिये मिला है क्योंकि यह हमेशा राख के पास बैठी रहती है।

कोई न कोई परी इसकी सहायता करती रहती है। यह परी अलग अलग कहानियों में अलग अलग रूप में आती है। सिन्डरैला राजकुमार को अपने असली रूप में दिखाती है उसको आकर्षित करती है राजकुमार उसको उसके जूते से पहचान जाता है।

यह कहानी भी दो तरह की हैं — एक तो वे जैसी हमने आपको अभी ऊपर बतायीं और दूसरी तरह की वे जिनमें हीरोइन अपने पिता के डर से कि वह उसकी शादी किसी और से कर देगा एक अलग सा रूप लेती है। ये दूसरी तरह की कहानियॉ "ऐलरलीरौ"[42] जैसी कहानियॉ हैं। इसकी पहली तरह की कहानी हमने इटली के फ्लोरैन्स शहर से ली है जिसका नाम है — "सिन्डरैला"।

[41] Her name in German is "Aschenputtel"

[42] "Allerleirauh is the other kind of story, written by Grimm's Brothers.

9 सिन्डरैला[43]

एक बार की बात है कि एक आदमी के तीन बेटियॉ थीं। एक बार उसको किसी काम से बाहर जाना पड़ा तो उसने अपनी बेटियों से कहा — "मैं किसी काम से बाहर जा रहा हूॅ बोलो मैं तुम लोगों के लिये क्या ले कर आऊॅ।"

बड़ी वाली बेटी बोली — "पिता जी, मेरे लिये एक बहुत सुन्दर सी पोशाक ले कर आना।"

दूसरी ने कहा — "पिता जी, मेरे लिये एक बहुत अच्छा सा टोप और एक शाल ले कर आना।"

फिर उसने अपनी सबसे छोटी बेटी से पूछा — "और तुम्हारे लिये सिन्डरैला? तुम्हें क्या चाहिये?"

सब उसको सिन्डरैला ही कह कर पुकारते थे क्योंकि वह हमेशा चिमनी के पास वाले कोने में ही बैठी रहती थी।

वह बोली — "पिता जी, मेरे लिये एक छोटी वरडैलियो चिड़िया[44] ले कर आना।"

"बेचारी सीधी सादी लड़की। वह बेचारी तो यह भी नहीं जानती थी कि वह उस चिड़िया का करेगी क्या। बजाय किसी

[43] Cinderella. Tale No 9.

[44] Verdalio bird – a small bird

सुन्दर पोशाक मँगाने के या फिर कोई शाल मँगाने के उसने एक चिड़िया चुनी। किसी को पता नहीं कि वह उसका करेगी क्या।"

सिन्डरैला बोली — "चुप। वह मुझे अच्छी लगती है बस इसी लिये मैंने पिता जी से उसे लाने के लिये कहा।"

उनका पिता चला गया और जब वह लौटा तो सिन्डरैला की दोनों बड़ी बहिनों के लिये पोशाक, शाल और टोप और सिन्डरैला के लिये वरडेलियो चिड़िया ले कर आया।

उनका पिता शाही दरबार में काम करता था। एक दिन राजा ने उनके पिता से कहा — "मैं तीन दिन के नाच का इन्तजाम कर रहा हूँ। तुम अगर अपनी बेटियों को यहाँ लाना चाहते हो तो तुम भी उनको यहाँ ले कर आ सकते हो। वे भी शाही नाच का थोड़ा आनन्द लेंगी।"

उसने जवाब दिया — "जैसी आपकी इच्छा। बहुत बहुत धन्यवाद।"

और वह राजा की बात सुन कर घर आ गया।

जब वह घर गया तो उसने अपनी बेटियों से कहा — "लड़कियों तुम क्या सोचती हो? राजा ने तुम सबको अपने यहाँ नाच में बुलाया है।"

"देखा सिन्डरैला। अगर तूने भी एक बहुत सुन्दर सी पोशाक मँगवायी होती तो... । तुझे मालूम है कि आज शाम को हम सब राजा के यहाँ नाच में जा रहे हैं।"

सिन्डरैला बोली — "मुझे उससे कोई मतलब नहीं है। तुमको जाना हो तो जाओ मैं नहीं आ रही।"

शाम को जब नाच में जाने का समय आया तो सिन्डरैला की दोनों बहिनें खूब सजीं और गाड़ी में बैठते हुए सिन्डरैला से बोलीं — "आजा सिन्डरैला। तेरे लिये भी जगह है यहॉ।"

पर सिन्डरैला ने फिर वही जवाब दिया — "मुझे नहीं जाना तुमको जाना हो तो जाओ। मैं नहीं आ रही।"

पिता बोला — "चलो हम लोग चलते हैं। तैयार हो जाओ और चलो। अगर वह यहॉ रुकना चाहती है तो उसको रुकने दो। तुम लोग उससे जिद क्यों करती हो।" सो वे सब चले गये।

जब वे सब चले गये तो सिन्डरैला अपनी वरडैलियो चिड़िया के पास गयी और बोली — "ओ मेरी छोटी वरडैलियो चिड़िया, जैसी मैं हूॅ मुझे उससे भी और ज़्यादा सुन्दर बना दो।"

चिड़िया ने वैसा ही किया। उसको समुद्री हरे रंग की पोशाक पहनायी जिस पर इतने सारे हीरे लगे हुए थे कि उसकी तरफ देखने पर वे ऑखों को चौंधियाते थे।

चिड़िया ने उसके लिये पैसों के दो बटुए तैयार किये और उनको उसको देते हुए कहा — "लो ये दो बटुए लो, अपनी गाड़ी में बैठो और जाओ।"

वह गाड़ी में बैठी और राजा के महल में नाच के लिये चल दी। वरडैलियो चिड़िया को उसने घर में ही छोड़ दिया। वह नाच के

कमरे में घुसी। वहॉ बैठे किसी भी आदमी ने कभी मुश्किल से ही इतनी सुन्दर लड़की कहीं देखी होगी। वे सब उसी को देखे जा रहे थे।

जब राजा ने उसके साथ नाचना शुरू किया तो ज़रा सोचो क्या हुआ होगा। वह तो बस सारी शाम उसी के साथ ही नाचता रहा। सारी शाम नाचने के बाद ही राजा रुक सका। नाच के बाद सिन्डरैला अपनी बहिनों के पास जा कर खड़ी हो गयी।

जब वह अपनी बहिनों के पास खड़ी हुई थी तो उसने अपना रूमाल निकाला तो उसका एक ब्रेसलैट[45] नीचे गिर पड़ा। उसकी सबसे बड़ी बहिन बोली — "मैम, आपका यह ब्रेसलैट नीचे गिर गया।"

वह बोली — "कोई बात नहीं तुम रख लो।"

उसकी बड़ी बहिन ने सोचा — "ओह काश सिन्डरैला यहॉ होती। कौन जानता है कि उसको क्या नहीं हो गया होता।"

राजा उस लड़की से प्यार करने लगा था सो उसने अपने नौकरों को हुक्म दिया कि जब यह लड़की यहॉ से जाये तो उसका पता करो कि वह कहॉ रहती है। कुछ देर वहॉ ठहरने के बाद सिन्डरैला वहॉ से चली गयी।

तुम लोग सोच सकते हो कि जो नौकर उसका घर देखने के लिये लगाये गये थे उन्होंने क्या किया होगा।

---

[45] Bracelet – an ornament to be worn on wrist like a bangle. See its picture above.

वे उसके पीछे पीछे चले। सिन्डरैला ने देखा कि कुछ लोग उसके पीछे पीछे आ रहे हैं तो उसने अपना बटुआ निकाला और उसमें से कुछ पैसे निकाल कर गाड़ी की खिड़की से बाहर फेंकने शुरू कर दिये।

लालची नौकरों ने वे पैसे देख कर उस लड़की के बारे में तो सोचना छोड़ दिया और रुक कर वे पैसे उठाने लगे।

जब वे पैसे उठा रहे थे तो वह घर चली गयी और फिर ऊपर चली गयी। वहॉ जा कर वह फिर अपनी वरडैलियो चिड़िया के पास गयी और बोली कि वह उसको फिर से वैसी ही बना दे जैसी कि वह पहले थी। उस चिड़िया ने उसको फिर से वैसी ही बना दिया।

जब सिन्डरैला की बहिनें नाच से लौटीं तो बोलीं — "ओह सिन्डरैला।"

उसका पिता बोला — "उसको छोड़ दो। वह सो रही है। छोड़ दो उसको।"

पर वे ऊपर गयीं और उसको वह बड़ा सुन्दर ब्रेसलैट दिखाया और कहा — "देख रही है न इसे? ओ सीधी सादी लड़की। यह तुझे भी मिल सकता था।"

"मुझे इससे कुछ लेना देना नहीं है तुम रख लो इसको।"

उनके पिता ने कहा — "चलो खाना लगाओ।"

उधर राजा अपने नौकरों के लौटने का इन्तजार कर रहा था कि वे आयेंगे और उसको उस लड़की के घर का पता बतायेंगे। पर उनकी राजा के सामने जाने की हिम्मत ही नहीं पड़ रही थी।

तब उसने उनको खुद बुलाया और उनसे पूछा — "क्यों कैसा रहा? पता लगाया तुमने उस लड़की के घर का?"

वे सब उसके पैरों पर गिर पड़े और बोले — "मालिक, उसने इतना सारा पैसा फेंका कि ...।"

राजा चिल्लाया — "नीच, तुम लोग कुछ नहीं कर सकते। तुम लोगों को क्या यह लग रहा था कि तुम लोगों को इस तरह के काम का कोई इनाम नहीं मिलेगा?

कोई बात नहीं, कल शाम को ध्यान रखना, चाहे तुमको कितना भी तकलीफ क्यों न हो पर तुमको उसके घर का पता लगा कर ही लाना है।"

अगली शाम को दोनों बहिनों ने कहा — "तू भी आ रही है न सिन्डरैला हमारे साथ?"

सिन्डरैला बोली — "नहीं, मुझे तंग मत करो। मुझे नहीं जाना।"

उनका पिता चिल्लाया — "तुम लोग उसको बहुत तंग करती हो। उसे छोड़ दो न। क्यों उसके पीछे पड़ी हो जब वह नहीं जाना चाहती तो।"

सो वे दोनों तैयार होने चली गयीं, पहली शाम से भी ज़्यादा अच्छी तरह से। और तैयार हो कर वे नाच में चली गयीं — "बाई सिन्डरैला।"

उनके जाने के बाद सिन्डरैला फिर अपनी वरडैलियो चिड़िया के पास गयी और बोली — "ओ मेरी छोटी वरडैलियो चिड़िया, मुझे बहुत सुन्दर बना दो।"

चिड़िया ने उसको समुद्री हरे रंग की पोशाक में सजा दिया जिसके ऊपर बहुत सारी मछलियॉ कढ़ी हुई थीं और उसमें इतने हीरे लगे हुए थे जितने तुम सोच भी नहीं सकते।

फिर उसने सिन्डरैला को दो थैले रेत दिया और कहा — "ये दो थैले रेत ले जाओ। जब तुम देखो कि तुम्हारे पीछे लोग आ रहे हैं तो इस रेत को फेंक देना। इससे उनको कुछ दिखायी नहीं देगा।"

वह गाड़ी में बैठी और नाच के लिये चल दी। जब वह नाच वाले कमरे में पहुॅची और राजा ने उसे देखा तो बस वह तो फिर से सारी शाम उसी के साथ नाचता रहा जब तक वह थक नहीं गया। हालॉकि सिन्डरैला नहीं थकी थी।

नाच के बाद सिन्डरैला फिर से अपनी बहिनों के पास जा कर खड़ी हो गयी। वहॉ जा कर उसने फिर से अपना रूमाल निकाला तो इस बार उसका हार नीचे गिर गया।

इस बार उसकी दूसरी बहिन ने कहा — "मैम, आपका यह हार नीचे गिर गया।"

सिन्डरैला ने कहा — "कोई बात नहीं। तुम रख लो।"

"उफ़ अगर सिन्डरैला यहॉ होती तो कौन जाने उसके साथ क्या नहीं होता। कल उसको यहॉ जरूर आना चाहिये।"

कुछ देर बाद सिन्डरैला वहॉ से चली गयी। राजा के नौकर सावधान थे सो उसके वहॉ से जाते ही वे सब उसके पीछे पीछे चल दिये।

जब सिन्डरैला ने देखा कि लोग उसका पीछा कर रहे हैं तो उसने अपनी गाड़ी की खिड़की से पीछे की तरफ रेत फेंक दी जिससे राजा के आदमी कुछ देख नहीं सके और सिन्डरैला वहॉ से निकल गयी। राजा के आदमी फिर ऐसे ही वापस आ गये।

घर आ कर वह फिर ऊपर गयी और अपनी चिड़िया से बोली — "ओ मेरी छोटी वरडेलियो चिड़िया, मुझे पहले जैसा बना दो।" चिड़िया ने उसको फिर से वैसा ही बना दिया।

जब उसकी बहिनें नाच से वापस आयीं तो उन्होंने नीचे से ही उससे बात करना शुरू कर दिया — "ओह सिन्डरैला, अगर तू जानती कि उस लड़की ने मुझे क्या दिया।"

सिन्डरैला तुरन्त बोली — "मुझे इससे कोई मतलब नहीं कि उस लड़की ने तुमको क्या दिया।"

"नहीं नहीं, तुझको उसे देखना ही चाहिये।"

पिता बोला — "चलो खाना खाने चलें। उसको छोड़ो। तुम लोग तो वाकई बहुत ही बेवकूफ हो।"

अब हम मैजेस्टी के पास चलते हैं जो यह जानने के लिये अपने नौकरों का इन्तजार कर रहा था कि वह लड़की कहॉ रहती है। पर यह जानने के बदले में तो वे लोग रेत से अन्धे हो कर लौट आये थे।

राजा उन पर फिर चिल्लाया — "तुम लोग तो एक रोग हो। या तो यह लड़की खुद ही कोई परी है और या फिर कोई परी इसकी सहायता कर रही है।"

अगले दिन जब वे बहिनें फिर से नाच में जाने के लिये तैयार होने लगीं तो उन्होंने सिन्डरैला से कहा — "सिन्डरैला, चल आज तू भी चल। सुन आज की शाम आखिरी शाम है। आज तो तुझे हमारे साथ चलना ही चाहिये।"

पिता बोला — "तुम लोग उसको छोड़ दो न। तुम लोग हमेशा ही उसको क्यों तंग करती रहती हो।"

यह सुन कर वे तैयार होने चली गयीं और तैयार हो कर अपने पिता के साथ नाच के लिये चली गयीं।

जब वे सब चले गये तो सिन्डरैला फिर से अपनी चिड़िया के पास गयी और उससे बोली — "ओ मेरी छोटी वरडैलियो चिड़िया, तू मुझे आज बहुत सुन्दर बना दे।"

उस दिन चिड़िया ने उसको इन्द्रधनुषी रंगों की पोशाक में सजाया। उसकी इस पोशाक पर चॉद तारे बने हुए थे और सूरज उसकी भौंह पर था।

इस तरह वह नाच के कमरे में घुसी। आज कौन उसकी तरफ देख सकता था। उसकी भौंह पर लगा सूरज ही सबको चौंधा देने के लिये काफी था।

राजा ने उसके साथ नाचना तो शुरू किया पर आज तो वह उसकी तरफ देख ही नहीं सका। आज तो उसकी अपनी ऑखें ही चौंधिया रही थीं।

आज राजा ने अपने नौकरों को पहले से ही हुक्म दे रखा था कि वह उस लड़की का ध्यान रखें और आज वे उसका पैदल पीछा न करें बल्कि अपने अपने घोड़ों पर पीछा करें।

सिन्डरैला ने आज पहले दो दिनों के मुकाबले में ज़्यादा देर नाच किया। नाचने के बाद वह अपने पिता के पास जा कर खड़ी होगयी। वहॉ जा कर उसने फिर से अपना रूमाल निकाला तो पैसों से भरा हुआ एक सुँघनी का सोने का डिब्बा[46] नीचे गिर पड़ा।

उसका पिता बोला — "मैम, आपका यह सुँघनी का डिब्बा गिर पड़ा।"

सिन्डरैला बोली — "इसे आप अपने पास रख लें।"

अब ज़रा उस आदमी के बारे में सोचो जिसको यह डिब्बा मिला। उसने उस डिब्बे को खोला तो वह तो पैसों से भरा हुआ था।

[46] Translated for the words "Golden Snuffbox"

वह वहॉ कुछ देर तक खड़ी रही फिर वहॉ से घर चली गयी। राजा के नौकरों ने जल्दी ही उसका अपने घोड़ों पर पीछा किया। इस तरह उसका पीछा करने मे उनको कुछ खास परेशानी नहीं हो रही थी।

सिन्डरैला ने देखा कि आज भी लोग उसके पीछे पीछे आ रहे हैं पर आज उसके पास पीछे फेंकने के लिये कुछ भी नहीं था। वह बोली — "ओह अब मैं क्या करूँ।"

वह अपनी गाड़ी छोड़ कर नीचे उतर गयी और जल्दी जल्दी अपने घर की तरफ भागने लगी। इस जल्दी में उसका एक जूता निकल गया और नीचे गिर पड़ा। नौकरों ने वह जूता उठा लिया और उसके घर का नम्बर देख कर वापस आ गये।

सिन्डरैला झट से ऊपर गयी और अपनी चिड़िया से बोली — "ओ मेरी छोटी वरडैलियो चिड़िया, मुझे पहले जैसा बना दो।" पर इस बार चिड़िया ने उसको इसका कोई जवाब नहीं दिया।

सिन्डरैला ने जब यह तीन चार बार दोहराया तो वह बोली — "मुझे तुमको इस समय घरेलू लड़की तो नहीं बनाना चाहिये पर अगर तुम कहती हो तो... ।" और वह फिर से पुरानी सिन्डरैला बन गयी।

चिड़िया फिर बोली — "पर अब तुम क्या करोगी अब तो तुम पहचान ली गयी हो।" यह सुन कर सिन्डरैला रोने लगी।

जब उसकी बहिनें घर वापस लौटीं तो वे वहीं से चिल्लायीं — "सिन्डरैला।"

तुम सोच सकते हो कि उस शाम सिन्डरैला ने उनकी पुकार का उनको कोई जवाब नहीं दिया।

उसकी बहिनें फिर बोलीं — "सिन्डरैला, देख न कितना सुन्दर सुँघनी का डिब्बा है। अगर आज तू गयी होती तो यह डिब्बा तुझको मिल जाता।"

"मुझे चिन्ता नहीं है। मुझे वह चाहिये भी नहीं। चली जाओ यहाँ से।"

तभी उनके पिता ने उनको खाने के लिये आवाज लगायी।

उधर राजा के नौकर उस लड़की का जूता और उसके घर का नम्बर ले कर राजा के पास पहुँचे।

राजा बोला — "कल सुबह जैसे ही दिन निकलता है तुम उस लड़की के घर जाओ और उसको गाड़ी में बिठा कर यहाँ ले आओ।"

नौकरों ने वह जूता उठाया और वहाँ से चले गये। अगली सुबह वे सिन्डरैला के घर पहुँचे और जा कर उसके घर का दरवाजा खटखटाया।

उनके पिता ने बाहर झाँक कर देखा तो बोला — "ओह मेरे भगवान, यह तो योर मैजेस्टी की गाड़ी है। इसका क्या मतलब है।"

उसने दरवाजा खोला तो राजा के नौकर अन्दर आये। पिता ने पूछा — "तुम लोगों को मुझसे क्या चाहिये?"

"तुम्हारे कितनी बेटियॉ हैं?"

"दो।"

"दिखाओ।"

पिता ने अपनी दोनों बड़ी बेटियों को बुलाया तो राजा के नौकरों ने उनको बैठने के लिये कहा। उन्होंने उनमें से एक के पैर में वह जूता पहना कर देखा तो वह तो उसके पैर से दस गुना बड़ा था।

फिर उन्होंने दूसरी लड़की के पैर में उसको पहना कर देखा तो वह उसके लिये बहुत छोटा था।

उन्होंने उस आदमी से फिर पूछा — "क्या तुम्हारे और कोई बेटी नहीं है? ज़रा सोच समझ कर बोलना क्योंकि मैजेस्टी ऐसा चाहते हैं।"

इस पर वह आदमी बोला — "मेरे एक बेटी और है पर मैं उसको किसी को बताता नहीं हूॅ क्योंकि वह हमेशा राख और कोयलों में लिपटी रहती है। अगर तुम उसे देखोगे तब जानोगे कि मैं उसे अपनी बेटी कहते में भी शर्माता हूॅ।"

राजा के आदमियों ने कहा — "हम यहॉ उसकी सुन्दरता या उसके बढ़िया पहनावे के लिये नहीं आये हैं। हम तो उस लड़की को केवल यह जूता पहना कर देखना चाहते है।"

इस पर उसकी बहिनों ने उसको पुकारना शुरू किया — "सिन्डरैला। नीचे आ।" पर उसने कोई जवाब ही नहीं दिया।

कुछ देर बाद वह बोली — "क्या बात है?"

"तू नीचे आ। कुछ लोग तुझसे मिलने आये हैं।"

"मुझे नहीं आना।"

"पर तू आ तो सही।"

"ठीक है मैं आती हूँ। उनको कहो कि मैं अभी आती हूँ।"

वह अपनी छोटी चिड़िया के पास गयी और उससे बोली — "ओ मेरी छोटी चिड़िया वरडैलियो, मुझे बहुत सुन्दर बना दो।"

चिड़िया ने उसको पिछली शाम की तरह से सजा दिया – सूरज चॉद और सितारों के साथ। इसके साथ ही उसने उसके चारों तरफ सोने की जंजीरें भी लगा दीं।

यह कर के चिड़िया बोली — "सिन्डरैला, मुझे भी अपने साथ ले चलो। मुझे अपनी गोद में रख लो।"

सिन्डरैला ने उसको उठा कर अपनी छाती से लगा लिया और घर की सीढ़ियॉ उतरने लगी।

पिता ने राजा के आदमियों से कहा — "क्या तुमको कुछ सुनायी दे रहा है, देखो न वह अपने साथ चिमनी के कोने से जंजीरें घसीटती ला रही है। अब तुम सोच सकते हो कि वह कितनी डरावनी लग रही होगी।"

पर जब वह सीढ़ियों की आखिरी सीढ़ी पर आयी तब उसको सबने देखा कि वह कितनी सुन्दर लग रही थी। राजा के नौकरों ने उसको देखा तो उन्होंने उसको तुरन्त ही पहचान लिया कि यह तो वही लड़की थी जो राजा के महल में नाच में आयी थी।

तुम सोच सकते हो कि उसके पिता और उसकी बहिनों को कितनी शर्मिन्दगी उठानी पड़ी होगी। उन लोगों ने उसको बिठाया और उसको वह जूता पहना कर देखा तो वह तो उसके पैर में बहुत अच्छी तरह से और आसानी से आ गया।

यह देख कर उन्होंने उसको शाही गाड़ी में बिठाया और राजा के पास ले गये।

राजकुमार ने भी उसको पहचान लिया कि यह वही लड़की थी जो उसके नाच में आयी थी। वह उसके सामने घुटनों पर बैठ गया और उससे पूछा — "मुझसे शादी करोगी?"

अब तुम बस यह केवल सोच ही सकते हो कि उसने हॉ कर दी होगी। उसने फिर अपने पिता और बहिनों को बुलाया और उसकी और राजा की शादी बड़ी धूमधाम से हुई।

जिन नौकरों ने यह पता लगाया था कि सिन्डरैला कहॉ रहती है उनकी इनाम के तौर पर महल में तरक्की कर दी गयी।

10 सुन्दर मारिया वुड[47]

सिन्डरैला जैसी दूसरी तरह की कहानियों में हीरोइन अपना वेश बदल कर अपने पिता या भाई से शादी से बचने के लिये घर से भाग जाती है। बाकी की कहानी सिन्डरैला की कहानी से मिलती जुलती है — हीरोइन समय समय पर अपनी असली शक्ल दिखाती है और अन्त में अपना झूठा वेश उतार फेंकती है। यह कहानी इटली के विसैन्ज़ा क्षेत्र से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक पति पत्नी थे। उनके केवल एक ही बच्चा था – एक लड़की। अब ऐसा हुआ कि पत्नी बीमार पड़ी और इतनी बीमार पड़ी कि उसकी हालत मरने जैसी हो गयी।

मरने से पहले उसने अपने पति को बुलाया और उससे रोते हुए बोली — "मैं तो जा रही हूँ। आप तो अभी भी जवान हैं। अगर कभी भी आपकी इच्छा दोबारा शादी करने की हुई तो ध्यान रखियेगा कि आप वही लड़की चुनें जिसके हाथ में मेरी शादी की यह अँगूठी आ जाये। अगर यह अँगूठी उसे न आये तो उससे शादी मत कीजियेगा।"

उसके पति ने उससे वायदा किया कि वह ऐसा ही करेगा। जब वह मर गयी तो उसने उसके हाथ से शादी की अँगूठी निकाल ली और उसे सँभाल कर रख लिया जब तक वह दूसरी शादी करता।

कुछ समय बाद उसने दोबारा शादी करने की सोची।

[47] Fair Maria Wood. Tale No 10. From Vicenza area, Italy. By Francesco Corrazzini, 1877. p 484.

उसने एक लड़की देखी उसने दूसरी लड़की देखी पर वह अँगूठी किसी के भी हाथ में फिट नहीं हो रही थी। उसने बहुत सारी लड़कियॉ देखीं पर वह अँगूठी किसी की उँगली में ठीक आ ही नहीं पा रही थी।

एक दिन उसने अपनी बेटी को बुलाया और उससे उसके हाथ में वह अँगूठी पहन कर देखने के लिये कहा। बेटी बोली — "मेरा इसे पहनना बेकार है। आप मेरे साथ शादी तो कर नहीं सकते क्योंकि आप मेरे पिता हैं इसलिये इसे पहन कर देखने का क्या फायदा।"

आदमी ने अपनी बेटी की बात पर कोई ध्यान ही नहीं दिया। उसने अपनी बेटी की उँगली पर उसको पहना कर देखा। लो उसके हाथ में इतनी अच्छी तरह से फिट आ गयी कि वह उससे शादी करने के लिये तैयार हो गया।

उसने उनका विरोध नहीं किया बल्कि हॉ कर दी। शादी के दिन उसने अपने लिये चार सिल्क की पोशाक मॉगीं और वे भी बहुत बढ़िया सिल्क की। उसका पिता बहुत ही दरियादिल आदमी था। उसने उसकी इच्छा पूरी की और उसको चार पोशाकें दिलवा दीं। चारों एक दूसरे से अच्छी थीं।

उसने बेटी से पूछा कि उसे और क्या चाहिये तो उसने कहा कि उसको लकड़ी की पोशाक चाहिये ताकि वह उसमें छिप सके। तुरन्त

ही उसके लिये यह लकड़ी की पोशाक भी बनवा दी गयी। इसे देख कर वह बहुत खुश हो गयी।

उसने तब तक इन्तजार किया जब तक उसका पिता घर के बाहर गया। उसने फिर अपनी चारों सिल्क की पोशाकें पहनीं उनके ऊपर लकड़ी की पोशाक पहनी और एक नदी की तरफ चल दी जो उसके घर से बहुत दूर नहीं थी। वहॉ जा कर वह नदी में कूद गयी। उसकी लकड़ी की पोशाक ने उसको पानी पर तैरा दिया।

वह पानी में बहुत देर तक तैरती रही। एक जगह आ कर उसको किनारे पर एक भला आदमी खड़ा दिखायी दे गया। उसको देख कर उसने चिल्लाना शुरू किया — "यह सुन्दर मारिया वुड किसको चाहिये।"

भले आदमी ने जब एक लड़की को पानी पर तैरता देखा तो उसको अपने पास बुलाया। मारिया तैर कर उसके पास चली गयी। उसने पूछा — "यह तुम इस तरह से लकड़ी की पोशाक कैसे पहने हो। और यह तुम बिना डूबे पानी पर कैसे तैरती चली आ रही हो।"

मारिया ने उसे बताया कि वह एक गरीब लड़की है और उसके पास वही एक लकड़ी की पोशाक है। वह इसलिये बाहर निकली थी ताकि उसको कहीं काम मिल जाये।

भले आदमी ने पूछा — "तुम क्या कर सकती हो?"

मारिया बोली — "मैं घर के सारे काम जानती हूँ। अगर आप मुझे केवल दासी ही रख लेंगे तो आप मेरी सेवाओं से सन्तुष्ट रहेंगे।"

यह सुन कर वह आदमी उसको अपने घर ले गया जहाँ उसकी माँ भी रहती थी। आदमी ने उसको सारी बात बतायीं कि लड़की के साथ क्या कैसे हुआ था। फिर उसने कहा — "प्रिय माँ। अगर आप इसको अपनी दासी रख लेंगी तो हम इसकी देखभाल कर सकते हैं।"

माँ ने उसे अपने घर में दासी की तरह रख लिया। वह उस लकड़ी की पोशाक वाली लड़की से बहुत खुश थी।

एक बार वहाँ किसी जगह पर एक बहुत ही शानदार नाच हुआ जिसमें शहर के बहुत सारे कुलीन और भले लोग आये थे। तो वह आदमी जिसके घर में यह लकड़ी के कपड़े पहनने वाली दासी का काम करती थी वह भी वहाँ जाने के लिये तैयार हुआ।

जब वह घर से नाच में चला गया तो दासी ने उसकी माँ से कहा — "मेरे ऊपर कृपा कीजिये मालकिन। मुझे भी इस नाच में जाने दीजिये।"

माँ आश्चर्य से बोली — "क्या तू इस तरीके के कपड़े पहन कर जायेगी। वे लोग जैसे ही तुझे इन कपड़ों में देखेंगे तो वे तुझे वहाँ से बाहर निकाल देंगे।"

लड़की चुप रही पर जब उसकी मालकिन सोने चली गयी तो उसने अपनी एक सिल्क की पोशाक निकाली और उसे पहन कर वह दुनियॉ की सबसे सुन्दर लड़की बन गयी।

जब वह नाच में पहुँची तो सब लोगों को लगा कि जैसे सूरज अन्दर घुस आया हो। सब लोग चौंधिया गये।

वह जा कर अपने मालिक के पास बैठ गयी। मालिक ने उससे नाचने के लिये कहा और फिर उसके बाद तो वह किसी और के साथ नाचा ही नहीं। लड़की ने भी अपने मालिक को इतना खुश किया कि वह मारिया को प्यार करने लगा।

उसने मारिया से पूछा कि वह कौन थी और कहॉ से आयी थी। उसने बताया कि वह कुछ दूर से आयी थी पर इससे ज़्यादा उसने उसको और कुछ नहीं बताया।

एक निश्चित समय पर सबसे छिप कर वहॉ से निकली और अपने घर चली गयी। वह घर वापस लौटी उसने फिर से अपनी लकड़ी की पोशाक पहन ली।

सुबह को मालिक घर आया तो उसने अपनी मॉ से कहा — "ओह मॉ। काश आपने उस लड़की को देखा होता। वह सूरज की तरह चमक रही थी। वह बहुत सुन्दर थी और बहुत अच्छे कपड़े पहने थी। वह मेरे पास आ कर बैठ गयी और बस फिर केवल मेरे साथ ही नाची किसी और के साथ नहीं।"

उसकी मॉ बोली — "क्या तुमने उससे यह नहीं पूछा कि वह कौन थी और कहॉ से आयी थी।"

बेटा बोला — "मॉ पूछा था पर उसने केवल यही कहा कि कहीं दूर से आयी है। पर मुझे तो ऐसा लगा कि मुझे तो मर ही जाना चाहिये। मैं आज शाम को फिर से नाच में जाऊॅगा मॉ।"

दासी ने जो कुछ भी यह बात हुई सब सुनी पर चुप रही।

शाम को वह आदमी नाच में जाने के लिये तैयार हुआ तो दासी ने उससे कहा — "मालिक कल मैंने आपकी मॉ से नाच में जाने की इजाज़त मॉगी, क्योंकि मैंने कभी नाच नहीं देखा, पर उन्होंने मुझे इजाज़त नहीं दी। क्या आप मुझे मेहरबानी कर के वहॉ जाने देंगे?"

"ओ बदसूरत लड़की। वह नाच तेरे लिये नहीं है।"

मारिया रोते हुए बोली — "मेरे ऊपर मेहरबानी कीजिये। मुझे इजाज़त दे दीजिये। मैं कमरे के बाहर खड़ी रहूॅगी। या फिर किसी बैन्च के नीचे छिप जाऊॅगी या फिर किसी कोने में खड़ी रहूॅगी ताकि मुझे वहॉ कोई देख न सके। पर मेहरबानी कर के मुझे जाने की इजाज़त दे दीजिये।"

यह सुन कर वह गुस्सा हो गया और उस बेचारी दासी को डंडी से मारा। वह रोती रही पर बोली कुछ नहीं।

जब वह चला गया तो उसने मालकिन के सोने का इन्तजार किया और मालकिन के सोने के बाद उसने अपनी दूसरी सिल्क की पोशाक निकाली और उसको पहन कर नाच में चल दी।

जब वह नाच में पहुँची तो सभी उसकी तरफ देखे रह गये जैसे उन्होंने उससे सुन्दर कभी कोई देखा ही न हो। वहाँ पर जितने भी सुन्दर नौजवान बैठे हुए थे सभी उसके आसपास इकट्ठा होने लगे और उससे अपने साथ नाच के लिये कहने लगे।

पर वह अपने मालिक के अलावा किसी और के साथ नहीं नाची। मालिक ने उससे फिर पूछा कि वह कौन थी तो उसने कहा कि वह बाद में बतायेगी।

वे दोनों बहुत देर तक नाचते रहे पर अचानक वह गायब हो गयी। उसका मालिक उसको ढूँढने के लिये इधर उधर दौड़ा पर वह उसे कहीं नहीं मिली। लोगों से भी पूछा पर फिर भी कोई नहीं बता सका कि वह कहाँ गयी।

रात को जब वह घर लौटा तो उसने अपनी माँ को फिर बताया कि उसके साथ क्या हुआ था। वह बोली — "तुम्हें मालूम है कि तुम्हें क्या करना चाहिये। लो यह हीरे की अँगूठी लो और जब वह तुम्हारे साथ नाच रही हो तो उसके हाथ में पहना देना। अगर वह उसको ले लेती है तो इसका मतलब यह है कि वह तुम्हें प्यार करती है।"

कह कर उसने अपने बेटे को एक हीरे की अँगूठी दे दी। दासी ने सब कुछ सुना पर चुप रही।

तीसरी शाम मालिक फिर से नाच में जाने के लिये तैयार हुआ तो दासी ने उससे फिर से विनती की कि वह उसको भी नाच में ले चले। मालिक ने उसे फिर पीटा और नाच में चला गया।

जब आधी रात हुई तो पिछले दिनों की तरह से वह सुन्दर लड़की फिर से वहॉ आयी। आज तो वह पिछले दोनों दिनों से भी ज़्यादा सुन्दर लग रही थी। पहले की तरह से वह आज भी अपने मालिक के साथ ही नाची।

ठीक समय पर मालिक ने अॅगूठी निकाली और उससे पूछा कि क्या वह उसे स्वीकार थी। लड़की ने अॅगूठी उससे ले ली और उसे धन्यवाद दिया। मालिक यह देख सुन कर बहुत खुश हो गया। उसके बाद उसने उससे फिर पूछा कि वह कौन थी और किस देश की थी। उसने बताया कि वह उस देश की थी —

जहॉ जब नाच में जाने की बात होती है
तो वहॉ उनको उनके सिर पर मारा जाता है

इसके अलावा उसने और कुछ नहीं कहा। रोज के समय पर उसने अपना नाच रोक दिया और वहॉ से जाने लगी। वह उसके पीछे भागा पर वह तो हवा की तरह से वहॉ से उड़ गयी और बिना उसके जाने कि वह कहॉ गयी थी अपने घर पहुॅच गयी।

मालिक भी उसे ढूॅढने के लिये चारों तरफ भागा पर वह तो उसे कहीं दिखायी ही नहीं दी।

वह इतना परेशान था कि जब वह घर पहुँचा तो अधमरा सा ही जा कर अपने बिस्तर पर लेट गया। उसके बाद तो वह बीमार ही पड़ गया और दिन पर दिन उसकी हालत खराब ही होने लगी। सब लोगों को ऐसा लगने लगा जैसे वह तो बस अब मर ही जायेगा।

वह कुछ नहीं करता था सिवाय इसके कि वह अपनी माँ से और दूसरों से केवल यही पूछता रहता कि क्या उन लोगों को उस लड़की के बारे में कुछ मालूम था। अगर उसको उसके बारे में कुछ नहीं पता चला तो वह मर जायेगा।

दासी ने उसकी ये सब बातें सुन ली थीं।

एक दिन जब वह बहुत बीमार था तो लड़की ने क्या किया। उसने तब तक इन्तजार किया जब तक उसकी मालकिन वहाँ से नहीं चली गयी। उसने अपनी अँगूठी निकाली और मालिक के सूप के कटोरे में डाल दी।

किसी ने उसे ऐसा करते हुए नहीं देखा। माँ वह सूप का कटोरा अपने बेटे के लिये पीने के लिये ले गयी। उसने उसे चम्मच से खाना शुरू किया तो उसकी चम्मच किसी सख्त चीज़ से टकरायी। उसने उसे निकाला... तो एक चमकती हुई चीज़ निकली।

वह तो हीरे की अँगूठी थी। वही वाली जो उसने अपने साथ नाचने वाली लड़की को दी थी। उसने अपने हीरे की अँगूठी पहचान ली थी। अब तुम सोच सकते हो कि उसको वह अँगूठी देख कर कैसा लगा होगा।

लोगों ने सोचा कि वह तो पागल हो गया है। उसने अपनी मॉ से भी पक्का किया कि यह अॅगूठी वही थी या नहीं। उसकी मॉ ने भी कहा कि उसकी यह अॅगूठी वही थी। यह जान कर वह बहुत खुश हुआ क्योंकि अब उसे आशा हो गयी थी कि अब वह उसको जरूर पा जायेगा।

इस बीच दासी अपने कमरे में गयी अपनी लकड़ी की पोशाक उतारी और एक सारी सिल्क की पोशाक पहन ली जिससे वह बहुत सुन्दर दिखायी देने लगी। वे कपड़े पहन कर वह बीमार आदमी के कमरे में गयी।

मालकिन ने उसे देखा तो चिल्ला पड़ी — "यह है वह। यह है वह।"

लड़की अन्दर गयी और मुस्कुराते हुए उसको नमस्ते की। उसको देख कर तो वह आपे से बाहर हो गया और बिल्कुल ठीक हो गया। फिर उसने लड़की से उसकी कहानी बताने के लिये कहा – कि वह कौन थी कहॉ से आयी थी और उसको कैसे पता चला कि वह बीमार था।

लड़की बोली — "मैं लकड़ी की पोशाक पहनने वाली आपके घर आपकी दासी का काम करने वाली हूॅ। यह सच नहीं है कि एक गरीब लड़की हूॅ। पर यह पोशाक मैंने अपने आपको छिपाने के लिये बनवायी है। क्योंकि इसके नीचे मैं वैसी ही थी जैसी अब मैं आपके सामने खड़ी हूॅ।

मैं एक कुलीन ऊँचे घराने की लड़की हूँ जिसके साथ आपने इतने बुरे तरीके से बर्ताव किया। जब मैंने नाच में जाने के लिये कहा तो आपने मुझे पीटा। मुझे लग रहा था कि आप मुझे प्यार करते हैं इसलिये मैं अब आपकी जान बचाने आयी हूँ।"

वे लोग उसकी कहानी सुनते रहे।

फिर उन दोनों की शादी हो गयी और वे दोनों सुख से बहुत दिनों तक रहे। और अभी तक भी रह रहे हैं।

अब तक जो कहानियॉ कही गयीं उनमें सब में पारिवारिक सम्बन्धों का वर्णन था। हमने भाइयों की क्रूरता के उदाहरण देखे सौतेले बच्चों के साथ बुरा व्यवहार देखा। अब मॉ का अपने बच्चों के लिये या बहिन का अपने भाइयों के साथ क्रूरता का व्यवहर देखना बाकी है।

इस तरह की कहानियॉ जो हान[48] ने दी हैं वह कुछ इस तरह है कि "हीरो जो अपनी बहिन या मॉ के साथ भाग रहा है रास्ते में कई ड्रैगनों या बड़े साइज़ के लोगों को जीतता है। जो बच जाता है वही बहिन या मॉ से प्यार करता है। और फिर इस डर से कि कहीं इस बात का पता न चल जाये उससे उसके भाई या बेटे को ऐसी खतरनाक जगह भेजने के लिये कहता है जहॉ उसकी जान का खतरा होता है। बहिन या मॉ उससे बहाना बनती है कि वह बीमार है और उसको दवा चाहिये। हीरो सब खतरों का सामना करने में सफल हो जाता है। बाद में उसे पता चलता है कि उसको तो धोखा दिया गया था। वह फिर धोखा देने वालों को सजा देता है।

[48] Hahn in Tale No 19

इटली में इस विषय की कई कहानियों मिलती हैं।[49] पर इस विषय के अन्तार्गत केवल दो पूरी कहानियॉ आती हैं। पहली जियूसैप्पे पित्रे की लिखी हुई एक कहानी है और दूसरी डोमैनीको कोम्पारैत्ती की लिखी हुई कहानी है "सुनहरे बाल।"[50]

यह "सुनहरे बाल" वाली कहानी कुछ ऐसी कहानी है — "एक राजा है जिसके तीन बेटे हैं। वह बुढ़ापे में आ कर फिर से शादी करता है। राजा का सबसे छोटा बेटा अपने सोतेली मॉ को बहुत प्यार करता है। यह मालूम होने पर जलन से भरा राजा अपने पत्नी को जहर देना चाहता है पर उसकी पत्नी और बेटा दोनों वहॉ से भाग लेते हैं। रास्ते में वे कुछ डाकुओं के हाथों में पड़ जाते हैं पर वह डाकुओं को मार देते हैं। वे एक राजकुमारी को आजादी दिलाते हैं जो आखों और कई दूसरी बीमारियों का इलाज जानती है।

बाद में वे एक गुफा में आते हैं जिसमें बहुत सारे कमरे हैं और उनमें सुख सुविधाओं का सामान है पर वहॉ कोई प्राणी नहीं है। वे रात वहॉ गुजारते हैं और सुबह को नौजवान शिकार खेलने चला जाता है।

जैसे ही वह शिकार के लिये जाता है कि वहॉ एक बड़े साइज़ का आदमी आता है। वह सौतेली मॉ को अपना प्यार जताता है और कहता है कि अगर वह उससे शादी कर लेगी तो वह हमेशा तन्दुरुस्त और जवान रहेगी। पर सबसे पहले उसको अपने बेटे के सिर के सुनहरे बालों में से एक सुनहरा बाल निकालना होगा। इससे वह इतना कमजोर हो जायेगा कि फिर उसको एक झटके में ही मारा जा सकता है।

पहले तो लड़के की मॉ इस बात पर तैयार नहीं होती क्योंकि उसने उसकी जान बचायी है पर अन्त में वह मान जाती है। तो पहले तो वह उसको अपनी बीमारी का बहाना बना कर मारने की कोशिश करती है। इस कोशिश में वह अपने बेटे को एक खास फव्वारे से पानी लाने के लिये भेजती है। उस फव्वारे के पास एक शेर रहता है। बेटा उस फव्वारे का पानी ले कर सुरक्षित आ जाता है।

उसके बाद उसकी मॉ उसके सिर में कंघी करने के बहाने उसका एक बाल तोड़ लेती है। राक्षस उसको पैरों से पकड़ कर **50** मील दूर ले जाता है। फिर पहले तो उसको झाड़ियों में गिरा देता है और फिर उसे जमीन पर गिरा देता है। उसके सिर में घाव हो जाते हैं जिनकी वजह से वह अन्धा हो जाता है पर उस राजकुमारी की सहायता से जिसका जिक कहानी के

---

[49] see on p 52 - 18

[50] Giuseppe Pitre. "The Cyclops". (Tale No 71), and Domenico Comparetti, "The Golden Hair". (Tale No 54) from Monferrato, Piedmont

पहले हिस्से में किया गया है और जिससे उसने शादी की है वह अपनी ऑखों की रोशनी फिर से पा लेता है।

जब उसका टूटा हुआ सुनहरी बाल फिर से बढ़ जाता है तो वह एक गुफा में चला जाता है और उसे मार देता है। वह अपनी मॉ को उसके इस काम की सजा देता है वह उसकी तरफ देखे बिना ही उसे वहीं छोड़ देता है।

जियूसैप्पे पित्रे की कहानी "द साइक्लौप्स"[51] इस कहानी से ज़्यादा बड़ी कर के कही गयी है — "एक रानी को जो अपने पति के प्रति बेवफा है जेल में बन्द कर दिया जाता है। वह वहॉ एक बेटे को जन्म देती है और फिर बाद में उसी के सहारे वहॉ से निकल भी जाती है। रास्ते में उन्हें कुछ साइक्लोप्स मिलते हैं जिनमें से कइयों को तो उसका बेटा ही मार देता है पर उनमें से एक उसकी मॉ का प्रेमी बन जाता है।

अपने बेटे को मार डालने के लिये वह उसको एक खास फव्वारे से पानी लाने के लिये भेजती है। पर वह उस फव्वारे का पानी ले कर सुरक्षित आ जाता है। आखीर में मॉ बेटे को एक खेल खेलने के बहाने से कस कर बॉध देती है और साइक्लौप्स को सौंप देती है। साइक्लौप्स उसको मार देता है और उसको छोटे छोटे टुकड़ों में काट देता है। उन टुकड़ों को वह अपने घोड़े पर लाद देता है और घोड़े को खुला छोड़ देता है।

बेटे की जान उसी पानी से वापस आ जाती है जिसे वह अपनी मॉ के लिये ले कर आया था। फिर वह साइक्लौप्स और अपनी मॉ को मार देता है और उसी लड़की से शादी कर लेता है जिसने उसे ज़िन्दा किया था।

ऊपर लिखी हुई कहानियों से बिल्कुल अलग एक तरह की कहानी और है जिसमें एक बहिन अपने कई भाइयों को उन पर पड़े जादू से बचाती है। इन कहानियों में बहिन अपने भाइयों के ऊपर पड़े जादू से साधारण रूप से बेकुसूर है। वे घर से बहुत दूर रहते हैं और बहिन को उनके होने का बहुत समय तक भी पता नहीं होता। पर जब उसे पता चलता है तब वह घर छोड़ कर उनकी खोज में निकल पड़ती है। वह उन्हें ढूँढ लेती है और बहुत खतरे उठा कर उनको उस जादू या शाप से आजाद करा देती है।

---

[51] Giuseppe Pitre. No 71. "The Cyclops".
A Cyclops (meaning 'circle-eyed') is a one-eyed giant first appearing in the mythology of ancient Greece. The Greeks believed that there was an entire race of cyclopes who lived in a faraway land without law and order. Why did the Cyclopes had only one eye? According to the legend, the Cyclopes had only one eye because they traded one eye in order to see the future. The only future they were able to learn after that, was the day of their death.

इस तरह की कहानी के दो रूप इटली से प्रकाशित हो चुके हैं – एक तो नैपिल्स से प्रकाशित पैन्टामिरोन[52] में और दूसरी बलूनी से प्रकाशित[53]। यह कहानी हम यहॉ विस्तार से दे रहे हैं।

[52] Pentamerone. "The Seven Doves". (Day 4, Tale No 8). You may read this story in my Book "Pentamerone-2" under the title "Saat Fakhtayen"

[53] Coronedi-Berti. (Tale No 19).

11 सात बच्चों का शाप[54]

एक बार की बात है कि एक राजा और रानी थे जिनके छह बेटे थे। रानी के एक और बच्चा होने वाला था। राजा ने कहा कि अगर यह बच्चा लड़की नहीं हुई तो वह सातों बच्चों को शाप दे देगा।

इत्तफाक की बात कि उसी समय लड़ाई छिड़ गयी और राजा को लड़ाई के लिये जाना पड़ गया।

लड़ाई पर जाने से पहले राजा ने रानी से कहा — "देखो अगर तुम्हारे बेटा हो तो तुम खिड़की के ऊपर एक भाला लटका देना और अगर बेटी हो तो एक अटेरन[55] लटका देना।

इससे जैसे ही मैं लड़ाई से लौट कर आऊँगा तो मुझे पता चल जायेगा कि हमारे बेटा पैदा हुआ है या बेटी।"

यह कह कर राजा लड़ाई पर चला गया। राजा के जाने के एक महीने बाद रानी ने एक बहुत ही सुन्दर बेटी को जन्म दिया।

तुम सब सोच सकते हो कि उस बेटी को देख कर रानी कितनी खुश हुई होगी। वह अपनी खुशी छिपा नहीं सकी और उसने तुरन्त ही बाहर खिड़की पर एक अटेरन लटकाने का हुक्म दे दिया।

---

[54] The Curse of the Seven Children. Tale No 11.

[55] Translated for the word "Distaff". See its picture above.

पर इस खुशी में कहीं एक गलती हो गयी कि उसके नौकरों ने बाहर अटेरन की जगह भाला लटका दिया।

कुछ समय बाद जब राजा घर लौटा तो उसने देखा कि खिड़की पर तो भाला लटका हुआ है तो उसने अपने सातों बेटों को शाप दे दिया।

पर जब वह महल के अन्दर घुसा तो उसके सारे नौकर उसको बधाई देने के लिये आये और उसको उसकी सुन्दर सी बेटी के जन्म के बारे में बताया। यह सुन कर तो राजा बहुत आश्चर्यचकित हुआ और बहुत दुखी हुआ कि यह उसने क्या कर दिया। पर अब वह क्या कर सकता था। जो होना था वह तो हो गया।

वह रानी के कमरे में गया और बच्ची को देखा तो वह तो उसको वैसी ही एक मोम की गुड़िया लगी जैसी डिब्बों में रखी रहती हैं। और उसके छहों बेटों का तो कहीं कुछ पता ही नहीं था।

यह सब देख कर वह तो रो पड़ा क्योंकि उसके वे बेटे तो अब दुनियॉ में इधर उधर घूम रहे थे।

इस बीच उसकी बेटी बड़ी होती गयी। उसने देखा कि उसके माता पिता उसको प्यार से उसके ऊपर हाथ तो फेरते थे पर उनकी ऑखों में हमेशा ऑसू भरे रहते थे।

एक दिन उसने अपनी मॉ से पूछा — "मॉ क्या बात है कि मैं आपको हर समय रोता हुआ ही देखती हूॅ।"

तब रानी ने उसको सारी कहानी बतायी और बोली कि उसको डर है कि एक दिन वह भी उसकी ऑखों के सामने से गायब हो जायेगी।

जब लड़की यह सुना तो उसने क्या किया? एक रात वह चुपचाप उठी और अपने भाइयों को ढूँढने के लिये महल छोड़ कर चली गयी।

वह चलती गयी चलती गयी। चलते चलते उसे रास्ते में एक बूढ़ा मिला। उसने उस बच्ची से पूछा — "बेटी तुम ऐसी रात में कहॉ जा रही हो?"

वह बोली — "मैं अपने भाइयों को ढूँढने जा रही हूँ।"

वह बूढ़ा बोला — "बेटी उनको ढूँढना बहुत मुश्किल काम है क्योंकि उसके लिये तुमको सात साल सात महीने सात दिन सात घंटे और सात मिनट तक चुप रहना पड़ेगा।"

लड़की बोली "फिर भी मैं कोशिश करूँगी।"

उसने वहीं जमीन पर पड़ा हुआ एक कागज का टुकड़ा उठाया और कोयले के एक टुकड़े से उसके ऊपर उस समय का साल महीना दिन घंटा और मिनट लिखे और उस बूढ़े को वहीं छोड़ कर आगे अपने रास्ते पर चल दी।

बहुत देर तक चलने के बाद उसको एक रोशनी दिखायी दी। वह वहॉ पहुँची तो उसने देखा कि वहॉ तो एक महल खड़ा था जिसमें एक राजा रहता था।

वह उस महल के अन्दर चली गयी और थके होने की वजह से वहीं उसकी सीढ़ियों पर बैठ गयी और सो गयी। बाद में जब नौकर रोशनी बुझाने आये तो उन्होंने एक बहुत सुन्दर सी लड़की को पत्थरों की सीढ़ियों पर सोते पाया।

उन्होंने उसको जगाया और उससे पूछा कि वह वहॉ क्या कर रही थी। उसने उनसे इशारों से बात की और उसको वहॉ ठहरने की जगह देने की प्रार्थना की। उन्होंने उसकी इशारों की भाषा समझ ली और कहा कि वे राजा से उस बारे में बात करेंगे।

वे तुरन्त ही राजा से यह सब कहने गये और तुरन्त ही लौट भी आये। उन्होंने कहा कि राजा उसको उसके कमरे तक ले जाने से पहले उससे मिलना चाहता है।

जब राजा ने उस सुन्दर सुनहरे बालों वाली लड़की को देखा जिसका रंग दूध और शराब जैसा था दॉत मोती जैसे थे और उसके छोटे छोटे हाथ इतने कोमल थे कि कोई चित्रकार भी उतने सुन्दर हाथ नहीं बना सकता था तो उसको लगा कि वह तो किसी लौर्ड[56] की बेटी होनी चाहिये।

सो उसने उसको बहुत अच्छे से रखने का और उसकी हर तरह से अच्छी देखभाल करने का हुक्म दे दिया।

[56] Lord is a rank given to noble people in European countries.

उसके बाद वे उसको एक बहुत ही सुन्दर और आरामदेह कमरे में ले गये। वहॉ एक दासी आयी और उसके कपड़े उतार कर उसको सोने के लिये लिटा गयी।

अगले दिन जब वह उठी तो उसने अपने पास एक फ्रेम देखा जिसमें कढ़ाई के लिये कपड़ा लगा हुआ था तो उसने उस कपड़े पर कढ़ाई करनी शुरू कर दी।

राजा उसको देखने के लिये आया और उससे पूछा कि क्या उसको कुछ और चाहिये तो उसने उसको इशारों से बताया कि उसको और कुछ नहीं चाहिये।

राजा को वह लड़की इतनी ज़्यादा पसन्द आयी कि वह उससे प्यार करने लगा। और एक साल बाद तो वह उससे शादी करने की भी सोचने लगा।

पर रानी मॉ एक बहुत ही ईर्ष्यालु स्त्री थी। वह इस रिश्ते से खुश नहीं थी। उसका कहना था कि उस लड़की का तो यही पता नहीं था कि वह आयी कहॉ से है। इसके अलावा वह तो गूँगी भी है। इससे लोग सोचेंगे कि एक राजा ने ऐसी लड़की से शादी ही क्यों की।

पर राजा तो जिद्दी था सो उसने उससे शादी कर ली। जब रानी मॉ ने देखा कि अब उसका कुछ बस नहीं चल रहा तो वह चुप हो कर बैठ गयी।

कुछ समय बाद ही रानी मॉ को पता चला कि लड़ाई छिड़ने वाली है। तो उसने राजा को इस लड़ाई के बारे में बताते हुए कहा कि अगर वह लड़ाई पर नहीं गया तो उसके हाथ से उसका राज्य जा सकता था।

सो राजा को लड़ाई पर जाना ही पड़ा पर वह अपनी पत्नी को अकेला छोड़ कर जाते हुए बहुत दुखी था। इसलिये उसने रानी मॉ से प्रार्थना की कि उसके पीछे वह उसकी पत्नी का खास ख्याल रखें।

रानी मॉ ने कहा — "तू चिन्ता मत कर बेटे। मैं उसको खुश रखने के लिये उसका पूरा पूरा ध्यान रखूँगी।" राजा ने अपनी मॉ और पत्नी को गले लगाया और लड़ाई के लिये चला गया।

राजा लड़ाई पर गया ही था कि रानी मॉ ने एक राज[57] को बुलवाया और उससे रसोईघर के सिंक के पास एक दीवार बनाने के लिये कहा जिससे वह एक बक्सा जैसा बन गया।

डायना[58] को बच्चे की आशा थी सो रानी मॉ को यह बहाना मिल गया कि वह राजा को यह लिख दे कि उसकी पत्नी बच्चे को जन्म देते समय मर गयी।

उसने राजकुमारी को उस दीवार में रख दिया जो उसने रसोईघर के सिंक के चारों तरफ बनवायी थी। उसमें न तो रोशनी थी और न

[57] Translated for the word "Mason". He builds the buildings.
[58] Diana was the name of the Princess.

हवा थी तो उस नीच स्त्री ने सोचा कि वह वहॉ मर जायेगी। पर ऐसा नहीं हुआ।

बर्तन धोने वाला उसी सिंक में रोज बर्तन धोने आता था जहॉ डायना को दफ़नाया गया था। जब वह अपना काम कर रहा था तो उसने वहॉ कुछ कराहने की आवाज सुनी। उसने उसे ध्यान से सुनने की कोशिश की वह आवाज कहॉ से आ रही थी।

पहले तो उसको समझ में ही नहीं आया कि वह आवाज कहॉ से आ रही थी। फिर ध्यान से सुनने पर पता चला कि वह आवाज तो उस दीवार से आ रही थी जो अभी अभी नयी बनवायी गयी थी।

फिर उसने क्या किया? उसने दीवार में एक छेद किया तो देखा कि वहॉ तो राजकुमारी बन्द थी। उसने राजकुमारी से पूछा कि वह वहॉ कैसे आयी पर उसने केवल इशारों से उसे यह बताया कि वह एक बच्चे को जन्म देने वाली है।

उस गरीब काम करने वाले ने अपनी पत्नी से राजकुमारी के लिये एक सबसे ज़्यादा आरामदेह गद्दा बिछाने के लिये कहा और उसको उस पर लिटा दिया। वहॉ उसने एक बहुत ही सुन्दर लड़के को जन्म दिया।

इस बीच उस काम करने वाले की पत्नी उसको बार बार देखने के लिये आती रही। वह उसके लिये मॉस का सूप[59] भी बना कर लाती रही और उसके बच्चे की भी देखभाल करती रही।

थोड़े में कहो तो वह काम करने वाला और उसकी पत्नी दोनों राजकुमारी को आराम देने के लिये जो कुछ भी कर सकते थे करते रहे। वह भी उनको इशारों से समझाती रही कि उसको क्या चाहिये।

एक दिन डायना को याद आया कि वह यह देखे कि अभी उसको कितने दिन और चुप रहना है। उसने अपना वह कागज निकाला और देखा तो बस अब तो उसके चुप रहने के केवल दो मिनट ही रह गये थे।

दो मिनट तो जल्दी ही बीत गये। जैसे ही उसके दो मिनट बीते तो उसने उस काम करने वाले को सब कुछ बता दिया। तभी राजा भी लड़ाई से लौट कर आ गया। काम करने वाले ने भी राजकुमारी को उस छेद में से बाहर निकाल लिया और उसे राजा के पास ले गया।

तुम सोच सकते हो कि राजा डायना को फिर से देख कर कितना खुश हुआ होगा जिसको कि वह यह सोच चुका था कि वह

[59] Translated for the word “Broth”. Broth is the soup consisting of meat or vegetable chunks, and often rice.

मर गयी है। वह तो उन दोनों को देख कर ही पागल सा हो गया था। उसने डायना और अपने बेटे दोनों को गले लगाया।

डायना ने उसको सब बताया कि क्यों तो उसने अपना घर छोड़ा। क्यों वह इतने दिनों तक बोली नहीं। और रानी मॉ ने उसके साथ कैसा बर्ताव किया।

जब राजा ने यह सब सुना तो वह बोला "अब तुम सब मेरे ऊपर छोड़ दो। मै देखता हूँ।"

अगले दिन राजा ने अपने राज्य के सारे राजकुमारों और कुलीन लोगों को दावत के लिये बुलवाया।

उस दावत में नौकरों ने दूसरी प्लेटों के अलावा छह प्लेटें और लगायीं। जब सारे मेहमान बैठ गये तो छह सुन्दर नौजवान वहॉ आये और आ कर पूछा कि ऐसी बहिन को क्या दिया जाना चाहिये जिसने अपने भाइयों के लिये इतना सब कुछ किया हो।

यह सुन कर राजा अपनी सीट से उछल पड़ा और बोला — "और ऐसी मॉ के साथ क्या किया जाये जिसने अपने बेटे की पत्नी के साथ ऐसा किया?" और फिर उसने अपनी मॉ की सारी कहानी उनको सुना दी।

एक बोला — "उसको ज़िन्दा जला दो।"

दूसरा बोला — "उसको एक लकड़ी के बक्से में बन्द कर के लोगों से अपमानित होने के लिये चौराहे पर छोड़ दो

तीसरा बोला — "उसको चौराहे पर गर्म तेल में डाल कर भून दो।"

यह बात मान ली गयी।

उन छह नौजवानों ने राजा को बताया कि उनको उस बूढ़े ने ही बताया था कि उनकी बहिन कहॉ है और उसने उनके लिये क्या किया था। यह वही बूढ़ा था जो उनकी बहिन को रास्ते में मिला था। असल में वह बूढ़ा एक जादूगर था।

तब उन्होंने अपना परिचय दिया और डायना और अपने राजा बहनोई को गले लगाया। उसके बाद वे सब अपने माता पिता से मिलने गये।

सोचो ज़रा कि अपने उन सातों बच्चों को देख कर उन राजा और रानी को कितनी खुशी हुई होगी।

डायना उसका पति और बेटा वहॉ कुछ दिन रहे फिर वे सब अपने राज्य को चले गये जहॉ उन्होंने खुशी खुशी बहुत दिनों तक राज किया।

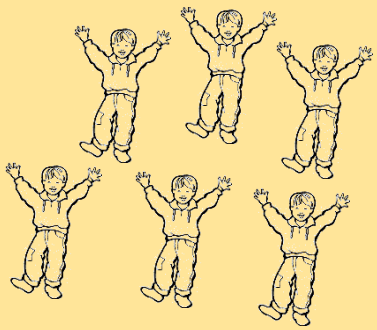

अब हम एक और तरह की कहानी की तरफ चलते हैं जो बहुत ही लोकप्रिय है जिसको हम "द ट्रू ब्राइड" के नाम से जानते हैं। हालॉकि ग्रिम की इस नाम की कहानी इसका सच्चा रूप नहीं है। इसका सबसे आसान रूप है ग्रिम की कहानी "द गूज़ गर्ल"[60]। इस कहानी में एक रानी की बेटी की शादी एक राजा के बेटे से पक्की हो जाती है जो बहुत दूर रहता है।

जब राजकुमारी बड़ी होती है तो उसको उसके दुलहे के पास भेज दिया जाता है। उसके साथ एक दासी भी भेज दी जाती है। रास्ते में दासी राजकुमारी की जगह ले लेती है और राजकुमारी बेचारी एक बतख चराने वाली बन कर रह जाती है। अन्त में सच्ची राजकुमारी का पता चल जाता है और नकली वाली को सजा दे दी जाती है।

उसी संग्रह की "द व्हाइट ऐन्ड द ब्लैक ब्राइड"[61] कहानी इसी रूप का थोड़ा जटिल रूप है। इस कहानी के पहले हिस्से में दो सौतेली बहिनों की कहानी है जिनको परियों से अलग अलग भेंट मिलती है। कहानी के दूसरे हिस्से में भाई अपनी बहिन की एक तस्वीर बनाता है तो राजा उससे शादी करना चाहता है। बहिन को बुलाया जाता है तो उसकी सौतेली बहिन रास्ते में उसको नदी में धक्का दे देती है और खुद उसकी जगह ले कर राजकुमार के पास जाती है। सच्ची दुलहिन एक हंस में बदल जाती है और अपनी जगह पहुॅच जाती है।

इन ऊपर वाली कहानियों में सच्ची दुलहिन का बदल जाना ही इसकी मुख्य घटना है पर ऐसी दूसरी कई और कहानियॉ हैं जिनमें यह घटना घटती है पर वहॉ वह मुख्य घटना नहीं है बल्कि नम्बर दो वाली घटना है। इस तरह की कहानी हम तब देंगे जब हम "द फौरगौटिन ब्राइड"[62] तक पहुॅचेंगे।

इनमें पहली तरह की कहानी इटली में दो रूप की हैं – इनमें से एक रूप हैं "टू सिस्टर्स" और "ट्रू ब्राइड" का और दूसरा रूप है "भाई का तस्वीर बनाना और राजा का उससे शादी करने की इच्छा प्रगट करना"।[63] पहले रूप की कहानी इसी पुस्तक में आगे दी गयी हैं – **कहानी नम्बर 24 – "तीन सन्तरों से प्यार"**। ऐसी ही एक और कहानी आगे दी हुई है – **कहानी नम्बर 15 – "बर्फ सी सफेद आग सी लाल"**।

इसके दूसरे रूप को दिखाने के लिये हमने यह कहानी फ्लोरैन्स की कहानियों से ली है – "ओरैजिओ और बियान्चीनैटा"।

---

[60] The Goose Girl. By Grimm

[61] The White Bride and the Black Bride. By Grimm. (Tale No 135) – read this story in HIndi

[62] The Forgotten Bride

[63] "Two Sisters", and "True Bride"

12 ओरैजियो और बियान्चीनैटा[64]

एक बार की बात है कि एक स्त्री के दो बच्चे थे – एक लड़का और एक लड़की। लड़के का नाम था ओरैजियो और लड़की नाम था बियान्चीनैटा।

उनके कुछ दिन खराब आये तो वे गरीब हो गये। सो यह सोचा गया कि ओरैजियो को अब बाहर कहीं पैसा कमाने के लिये निकल जाना चाहिये। भगवान का लाख लाख धन्यवाद कि उसको राजकुमार के कमरे में खड़े होने वाले नौकर की जगह मिल गयी।

कुछ समय बाद राजकुमार उस लड़की की सेवाओं से से बहुत खुश हुआ तो उसने उसकी जगह बदल कर उसे तस्वीरों वाले कमरे की सफाई के लिये रख लिया। उस कमरे में दूसरी तस्वीरों के साथ साथ एक बहुत सुन्दर लड़की तस्वीर भी लगी हुई थी। ओरैजियो हमेशा ही उस तस्वीर की बहुत तारीफ किया करता था और राजकुमार भी उस तस्वीर को अक्सर ही सराहा करता था।

एक दिन राजकुमार ने ओरैजियो से पूछ ही लिया कि वह अक्सर उस तस्वीर को क्यों देखता रहता है। ओरैजियो बोला कि यह तस्वीर उसकी बहिन की शक्ल से बहुत मिलती जुलती है। और

---

[64] Oraggio and Bianchnetta. Tale No 12.
Similar to this story is “Bejeweled Boot” (Ratn Jada Joota). Read it in Hindi in “Italy Ki Lok Kathayen-6” by Sushma Gupta. Another story is “The White Bride and the White One” by Grimm.

क्योंकि वह कुछ समय से उससे दूर रहा है उसके मन में इच्छा हो रही है कि वह उससे जा कर मिले।

राजकुमार बोला कि उसको तो यह विश्वास ही नहीं हो रहा कि उसकी बहिन की शक्ल उस तस्वीर वाली लड़की की शक्ल से इतनी मिलती जुलती होगी। क्योंकि उसने किसी ऐसी ही लड़की की खोज करवायी है पर उसको ऐसी लड़की कहीं नहीं मिली।

वह आगे बोला — "अच्छा तो तुम उसको यहॉ ले कर आओ और अगर वह इतनी ही सुन्दर ही जितना कि तुम कह रहे हो तो मैं उससे शादी कर लूँगा।"

ओरैजियो ने तुरन्त ही घर चिट्ठी लिखी और बियान्चीनैटा भी तुरन्त ही घर से भाई से मिलने के लिये चल दी। जब ओरैजियो उसको लेने के लिये बन्दरगाह गया और उसने जहाज़ को थोड़ी दूर पर देखा तो वह बार बार चिल्लाने लगा — "ओ समुद्र में चलने वाले नाविको। मेहरबानी कर के मेरी बहिन बियान्चीनैटा का ख्याल रखना कहीं धूप में उसका रंग सॉवला न पड़ जाये।"

उसी जहाज़ पर जिस पर बियान्चीनैटा थी एक मॉ बेटी और थीं जो बहुत प्रेम से रह रही थीं। जब वे बन्दरगाह के पास आये तो बेटी ने बियान्चीनैटा को एक धक्का दिया और वह समुद्र में गिर गयी।

जब वे बन्दरगाह पर उतरे तो ओरैजियो अपनी बहिन को नहीं पहचान सका। उस घरेलू बेटी ने उसे बताया कि वही उसकी बहिन थी पर बस धूप से उसका रंग थोड़ा सॉवला पड़ गया है।

राजकुमार ने जब उस घरेलू लड़की को देखा तो उसने ओरैजियो को बहुत डॉटा। उसने उसे उस नौकरी से निकाल दिया और उसको बतखें देखने भालने का काम सौंप दिया। अब वह रोज बतखों को ले कर समुद्र की तरफ जाता और रोज बियान्चीनैटा समुद्र से बाहर आती और उन बतखों को कई रंगों के फुॅदनों[65] से सजाती।

जब वे बतखें घर लौटतीं तो वे कहतीं —

को को हम समुद्र से आती हैं
हम वहॉ सोना और मोती खाती हैं
ओरैजियो की बहिन तो सुन्दर है
वह तो इतनी सुन्दर है जैसे सूरज
वह हमारे मालिक के लिये बहुत अच्छी है

राजकुमार ने ओरैजियो से पूछा कि ये बतखें बार बार यही क्यों गाती हैं। उसने राजकुमार को बताया कि उसकी बहिन को समुद्र में फेंक दिया गया है और एक मछली उसको पानी के नीचे एक बहुत सुन्दर महल में ले गयी है जहॉ वह जंजीरों में बॅधी है।

[65] Translated for the word “Tassels”. See its picture above.

पर उस जंजीर में बॅधी रहने पर भी उसको केवल किनारे तक ही आने की इजाज़त है जब जब मेरी बतखें वहॉ जाती हैं।

राजकुमार बोला — "अगर तुम जो बोल रहे हो ठीक निकला तो कल जब वह समुद्र की सतह पर आये तो उससे पूछना कि उसको वहॉ की जेल से कैसे आजाद किया जा सकता है।"

अगले दिन ओरैजियो ने अपनी बहिन से पूछा कि उसको वहॉ की जेल से कैसे आजाद किया जा सकता है और फिर कैसे उसे राजकुमार के पास ले जाया जा सकता है।

वह बोली — "मुझे यहॉ से ले जाना बिल्कुल असम्भव है। राक्षस हमेशा ही मुझसे यह कहता है कि इसके लिये एक तलवार की जरूरत पड़ेगी जो 100 को एक साथ काट दे और एक घोड़ा चाहिये जो हवा की तरह तेज़ दौड़ता हो। ये दोनों चीज़ें मिलना मुश्किल है सो यही मेरी किस्मत है कि मैं यहीं रहूॅ।"

ओरैजियो महल वापस लौट आया और आ कर राजकुमार को अपनी बहिन का जवाब बताया तो राजकुमार ने अपनी पूरी कोशिश लगा दी और एक तलवार जो सैकड़ों को काट सकती थी और एक हवा से भी तेज़ दौड़ने वाला घोड़ा दोनों चीज़ें पा लीं।

उसके बाद वे दोनों समुद्र के किनारे गये। वहॉ उनको बियान्चीनैटा मिल गयी जो वहॉ उनका इन्तजार कर रही थी। वे दोनों उसको महल ले आये। तलवार से उसकी जंजीरें काट दी गयीं। वह घोड़े पर चढ़ी और उनके साथ घर आ गयी।

जब वे घर पहुँचे तो राजकुमार ने उसे देखा तो वह तो सचमुच ही उसी तस्वीर जैसी सुन्दर थी जिसे ओरैजियो अक्सर घूरता रहता था। राजकुमार ने बियान्चीनैटा से शादी कर ली।

दूसरी घरेलू लड़की को चौराहे पर आग में जला दिया गया। और राजकुमार और बियान्चीनैटा फिर आराम से रहे।

हमने वैसी कुछ कहानियॉ पहले ही दी हुई हैं जिनमें उन जानवरों के बारे में दिया हुआ है जो अपना भला करने पर लोगों का उपकार करना चाहते हैं। ऊपर दी हुई इन कहानियों मे वे बस एक घटना हैं पर असल में जबकि दूसरी कहानियों में वे उस कहानी का मुख्य केन्द्र हैं। उन्हें "ऐनीमल ब्रदर्स–इन–ला" की श्रेणी में रखा जा सकता है।

साधारणतया इन कहानियों का विषय यह है — "तीन राजकुमार जानवर में बदल दिये जाते हैं और हीरो की बहिनों से शादियॉ करते हैं। हीरो बारी बारी से उनसे मिलने जाता है। वे उसको उसके कुछ मुश्किल कामों को पूरा करने में सहायता करते हैं। बाद में वे हीरो द्वारा उस जादू से आजाद कर दिये जाते हैं।

हालॉकि हर कहानी में यह विषय थोड़ा थोड़ा अलग रहता है जैसे कभी कभी केवल दो बहिनें ही होती हैं और उनके पति इस जादू से हीरो की बजाय किसी और तरीके से आजाद कराये जाते हैं। ऐसी कहानी का एक बहुत अच्छा नमूना यह नीचे लिखी कहानी है – "सुन्दर फ़िओरीता"।

13 सुन्दर फ़िओरीता[66]

एक बार एक राजा था जिसके चार बच्चे थे – तीन बेटियॉ और एक बेटा। एक दिन राजा ने राजकुमार से कहा — "मैंने तुम्हारी तीनों बहिनों की शादी जो भी दिन के **12** बजे हमारे महल के सामने से पहला आदमी गुजरेगा उसी से करने का इरादा किया है।"

उसी समय वहॉ से एक सूअरों की देखभाल करने वाला गुजरा। फिर वहॉ से एक शिकारी गुजरा और उसके बाद एक कब्र खोदने वाला गुजरा।

सो राजा ने उन तीनों को अपने पास बुलाया और जब राजा ने उनके सामने अपना प्रस्ताव रखा तो वे तो हक्का बक्का रह गये। उनको लगा कि वे कहीं सपना तो नहीं देख रहे पर जब राजा ने उनको विश्वास दिलाया कि वह सचमुच ही ऐसा चाहता था तो वे कुछ परेशान तो हुए पर खुश भी बहुत हुए।

उन्होंने कहा — "योर मैजेस्टी की इच्छा का पालन होगा।"

राजकुमार अपनी सबसे छोटी बहिन को बहुत प्यार करता था। वह यह देख कर बहुत ही दुखी हुआ कि उसकी वह प्यारी सी बहिन एक कब्र खोदने वाले को ब्याह दी जायेगी। उसने राजा से

---

[66] The Fair Fiorita. Tale No 13.
Similar tales – (1) Marya Morevna. A Russian tale. Read it in the book "Roos Ki Lok Kathayen-2" by Sushma Gupta. To get its e-text version write to her.

विनती की वह यह शादी न करे पर राजा ने उसकी कोई बात सुन कर नहीं दी।

बेटा अपने पिता के इस फैसले पर बहुत दुखी हुआ। वह इस शादी में शामिल नहीं हुआ और बाहर महल के नीचे वाले बागीचे में घूमता रहा।

जब पादरी नीचे के कमरे में तीनों दुलहिनों को आशीर्वाद दे रहा था तो बागीचे में बहुत सुन्दर सुन्दर फूल खिल गये। एक सफेद बादल आ गया और बोला — "वही खुश रहेगा जो सुन्दरी फ़िओरीता के होठ चूमेगा।"

यह सुन कर राजकुमार इतना कॉप गया कि उसको तो खड़े रहने में भी मुश्किल होने लगी। उसने वहीं पास में खड़े एक औलिव के पेड़ का सहारा ले लिया। फिर वह रोने लगा। उसको अपनी बहिनों के इस तरह से ब्याहे जाने का बहुत दुख था। वह बहुत देर तक इन्हीं विचारों में डूबा रहा।

फिर जैस वह सपने से जागा तो बोला "मुझे अपने पिता का घर छोड़ कर भाग जाना चाहिये। मै सारी दुनियॉ घूमूॅगा और तब तक चैन से नहीं बैठूॅगा जब तक कि मैं सुन्दर फ़िओरीता के होठ नहीं चूम लूॅगा।"

वह धरती पर चला वह समुद्र पर चला वह पहाड़ों पर चला पर कोई उसे ऐसा नहीं मिला जो उसको सुन्दर फ़िओरीता के बारे में

बताता। तीन साल गुजर गये कि एक दिन जंगल छोड़ कर एक मैदान से गुजर रहा था कि उसको वहॉ एक बहुत ही शानदार महल दिखायी दिया।

उसको बहुत प्यास लगी थी। वहॉ पहुँच कर उसने देखा कि उस महल के सामने तो एक फव्वारा लगा है सो उसने वहॉ से पानी पिया। उस फव्वारे के पास एक दो साल का बच्चा खेल रहा था। वह उसको देखते ही डर गया और अपनी मॉ को पुकारने लगा।

मॉ ने भी जब राजकुमार को अपने बच्चे के पास देखा तो वह भी दौड़ी हुई वहॉ आ गयी। उसने राजकुमार को अपने गले से लगा लिया और चूम कर स्वागत किया।

फिर वह बोली — "आओ भैया आओ।

राजकुमार ने पहले तो उसको पहचाना नहीं पर फिर उसको चेहरे की तरफ ध्यान से देखा तब उसने पहचाना कि वह तो उसकी सबसे बड़ी बहिन थी। वह भी बोला — "ओह बहिन। आज मैं तुम्हें देख कर कितना खुश हूँ।"

दोनों आपस में मिल कर बहुत खुश थे। बहिन अपने भाई को अपने पति के पास ले गयी। अब क्या था तीनों मिल कर बहुत ही खुश थे।

राजकुमार ने तब अपनी दूसरी दो बहिनों के बारे में पूछा। तब उसके जीजा ने बताया कि वे दोनों भी खुश थीं और बहुत ही शाही ढंग से रह रही थीं।

राजकुमार को यह सुन कर आश्चर्य हुआ पर उसके जीजा ने उसे बताया कि अब जबसे उनके ऊपर जादू डाला गया है उन सबकी तकदीर बदल चुकी है।

राजकुमार ने पूछा — "क्या मैं उन्हें देख सकता हूँ?"

जीजा ने कहा — "हॉ हॉ क्यों नहीं। तुम कल सुबह ही उधर की तरफ चले जाना। एक दिन चलने के बाद तुम्हें तुम्हारी बड़ी बहिन दिखायी दे जायेगी और दो दिन के बाद तुम्हें तुम्हारी दूसरी बहिन भी मिल जायेगी।"

"पर मुझे सुन्दर फ़िओरीता के घर का रास्ता भी तो ढूँढना है और मुझे नहीं मालूम कि वह जिधर से सूरज उगता है उधर है या फिर जिधर सूरज डूबता है उधर है।"

"वह तो पक्का जिधर सूरज निकलता है उधर ही है। पर इस मामले तो तुम बहुत ही किस्मत वाले हो कि तुम्हारी दोनों बहिनें भी उधर ही हैं। तुम उनसे भी मिल लोगे। इसके अलावा तुम अपनी तीसरी बहिन से फ़िओरीता के बारे में कुछ समाचार भी पा लोगे।

पर तुम्हारे जाने से पहले मैं तुमको एक भेंट देना चाहता हूँ। लो ये कुछ सूअर के बाल रख लो। पहली बार अगर तुम कभी कोई खतरा महसूस करो तो और उसे खुद न सुलझा सको तो इन्हें जमीन पर फेंक देना और मैं तुम्हें खतरे से आजाद कर दूँगा।"

राजकुमार ने वे बाल लिये और अपनी यात्रा पर चल दिया। अगले दिन वह अपनी दूसरी बहिन के महल में आया। उसकी इस

बहिन ने भी उसका खूब ज़ोर शोर से स्वागत किया। उसके इस जीजा ने भी उसको वहॉ से जाने से पहले कुछ देना चाहा।

क्योंकि वह एक शिकारी था तो उसको चिड़िया के कुछ पंख दिये और उससे वही कहा जो उसके पहले जीजा ने उससे कहा था। उसने उसको भी धन्यवाद दिया और अपनी यात्रा पर आगे बढ़ गया।

तीसरे दिन वह अपने तीसरे जीजा के घर आया। यह बहिन तो उसको अपनी दोनों बहिनों से बढ़ कर प्यार करती थी। इसने अपने भाई का उन दोनों बहिनों से भी अच्छा स्वागत किया। साथ में उसके पति ने भी उसका वैसा ही स्वागत किया।

वहॉ से चलते समय उसके इस जीजा ने एक आदमी की एक हड्डी दी और वही कहा जो उससे उसके दूसरे जीजाओं ने कहा था। उसकी बहिन ने बताया कि सुन्दर फ़िओरीता वहॉ से एक दिन की दूरी पर रहती है। फिर उसने उसे एक बुढ़िया के पास भेजते हुए कहा कि "तुम पहले इस बुढ़िया से मिल लेना क्योंकि यह बुढ़िया उसकी ऋणी है तो यह उसके बारे में बहुत कुछ जानती है।"

जब राजकुमार सुन्दर फ़िओरीता के देश आया तो वह पहले बुढ़िया के घर गया। बुढ़िया उससे मिल कर बहुत खुश हुई क्योंकि जब उसने उससे यह सुना कि वह फलॉ फलॉ का भाई है तो वह तो

उसके उपकारों के बदले और दब गयी। उसने उसे अपना बेटा समझा।

खुशकिस्मती से बुढ़िया का झोंपड़ा राजा के महल की उस तरफ के बिल्कुल ही सामने था जिसमें एक खिड़की भी थी जहॉ सुबह सुबह फ़िओरीता आ कर बैठा करती थी।

एक सुबह जब फ़िओरीता ने वह खिड़की खोली तो वह सफेद परदे के पीछे थी। जब राजकुमार ने उसकी सुन्दरता देखी तो वह तो गिर ही जाता अगर बुढ़िया ने उसे न सॅभाल लिया होता।

बुढ़िया ने उससे बहुत मना किया कि वह इस राजकुमारी से शादी करने का विचार छोड़ दे क्योंकि राजा अपनी बेटी की शादी केवल उससे ही करेगा जो एक छिपी हुई जगह को ढूॅढ लेगा। इसके अलावा जो भी उसे नहीं ढूॅढ पाता था वह उसे मरवा देता था। बहुत सारे राजकुमार इस कोशिश में मारे गये।

पर राजकुमार मानने वाला कहॉ था। उसने कहा कि अगर उसे फ़िओरीता नहीं मिली तो वह मर जाना ज़्यादा पसन्द करेगा।

बाद में बुढ़िया से उसे यह भी पता चला कि राजा ने अपनी बेटी के लिये बहुत कीमती कीमती संगीत के वाद्य खरीद कर रखे हुए हैं।

तो अब सुनो कि उसने क्या सोचा?

वह एक मंजीरा बनाने वाले के पास गया और उससे कह कि वह उसके लिये एक ऐसा मंजीरा बना दे जिससे तीन धुन निकलें।

और हर धुन एक दिन तक रहे। इसके अलावा उसमें एक आदमी छिप कर बैठ सके। मैं इसके लिये तुम्हें 1000 डकैट दूँगा। जब वह बन जायेगा तो मैं उसमें बैठ जाऊँगा और तुम उसको ले जा कर राजा की बेटी के महल के सामने बजाना।

अगर राजा उसको खरीदना चाहे तो तुम उसे राजा को इस शर्त पर बेचना कि तुम हर तीन दिन के बाद उसे मरम्मत के लिये लेने आओगे।

मंजीरा बनाने वाला इस बात पर तैयार हो गया और जैसा राजकुमार ने उससे कहा था उसने उसे वैसा ही बना दिया। राजा ने वह मंजीरा खरीद लिया और मंजीरा बनाने वाले ने उसे इसी शर्त पर बेच दिया कि वह हर तीन दिन बाद उसको मरम्मत करने के लिये वहाँ से अपने घर ले जायेगा।

राजा ने उसको ले जा कर अपनी बेटी के कमरे में रखवा दिया और उससे कहा — "देख मेरी बेटी। मैं नहीं चाहता कि तेरे पास किसी चीज़ की कोई कमी रह जाये। यहाँ तक कि जब तू अपने बिस्तर में हो और तुझे नींद न आ रही हो।"

सुन्दर फ़िओरीता के कमरे के बराबर वाले कमरे में उसकी खास नौकरानियाँ सोती थीं। रात को जब सब लोग सोये हुए थे और राजकुमार मँजीरे में छिपा हुआ था तो वह बोला — "सुन्दर फ़िओरीता सुन्दर फ़िओरीता।"

अपना नाम सुन कर राजकुमारी डर से जाग गयी और उसने अपनी नौकरानियों को ज़ोर ज़ोर से पुकारा — "यहॉ आओ यहॉ आओ। देखो मुझे कोई पुकार रहा है।"

उसकी नौकरानियॉ तुरन्त ही दौड़ कर वहॉ आयी पर किसी को देख नहीं पायीं क्योंकि राजकुमार तो अचानक ही मंजीरे में जा कर छिप गया था। ऐसा दो बार हुआ कि उसकी नौकरानियॉ वहॉ आयीं पर उन्होंने वहॉ किसी को नहीं देखा।

सुन्दर फ़िओरीता बोली — "हो सकता है कि यह मेरा सपना हो। अगर मैं तुम्हें फिर से बुलाऊॅ तो तुम यहॉ मत आना। यह मेरा हुक्म है।"

मंजीरे में बैठे हुए राजकुमार ने यह सब सुना। जैसे ही राजकुमारी की नौकरानियॉ सो गयीं राजकुमार राजकुमारी के बिस्तर के पास गया और उससे कहा — "सुन्दर फ़िओरीता। मेहरबानी कर के मुझे अपने होठों का चुम्बन दे दो। अगर तुम ऐसा नहीं करोगी तो मैं मर जाऊॅगा।"

वह तो यह सुन कर कॉप गयी। उसने तुरन्त ही अपनी नौकरानियों को बुलाया पर उनमें से कोई भी नहीं आया क्योंकि राजकुमारी ने उनसे वहॉ आने के लिये पहले ही मना कर रखा था।

तब राजकुमारी ने राजकुमार से कहा — "तुम बहुत खुशकिस्मत हो तुम जीत गये। आओ मेरे पास आओ।" जब वह उसके पास गया तो उसने उसे चूम लिया।

राजकुमार के होठों पर एक गुलाब का फूल रह गया। वह बोली — "यह गुलाब ले जाओ और इसे अपने दिल पर रखना क्योंकि यह तुम्हारे लिये अच्छी किस्मत ले कर आयेगा।"

राजकुमार ने उसे अपनी छाती पर रख लिया और फिर उसको तब से अपनी सारी कहानी सुना दी जबसे उसने अपने पिता का घर छोड़ा था तब तक जब तक मंजीरों की सहायता से वह राजकुमारी से पहली बार मिला था।

सुन्दर फ़िओरीता यह सब सुन कर बहुत खुश हो गयी उसने कहा कि वह उससे शादी जरूर करेगी। पर इसमें सफलता पाने के लिये उसे कई मुश्किल काम करने पड़ेंगे जो राजा उसको करने के लिये देगा।

पहले तो उसको वह रास्ता खोजना पड़ेगा जो एक ऐसी छिपी हुई जगह को जाता है जहॉ उसके पिता ने उसे **100** सुन्दर लड़कियों के साथ कैद कर रखा है। और उसको राजकुमारी को उन सब लड़कियों में से पहचानना होगा। वे सब लड़कियॉ एक से कपड़े पहने होंगी और सबके चेहरे पर परदा पड़ा होगा।

वह आगे बोली — "पर तुम्हें इस सबको करने की कोई जरूरत नहीं क्योंकि वह गुलाब जो तुमने मेरे होठों से लिया है और जिसे तुम हमेशा अपनी छाती पर रखोगे वह तुम्हें एक भारी पत्थर की तरह खींचता रहेगा – पहले तो मेरे छिपने की जगह और फिर मेरी बॉहों में।

पर राजा तुमको कुछ और काम देगा जो बहुत मुश्किल होंगे। उनके बारे में तुम्हें खुद सोचना होगा। अब हमको बाकी चीज़ें भगवान पर छोड़ देनी चाहिये।"

राजकुमार राजा के पास गया और बोला कि वह उसकी बेटी से शादी करना चाहता है। राजा ने उसको अपनी बेटी देने से मना नहीं किया पर उसके लिये कुछ शर्तें लगा दीं – वही शर्तें जो राजकुमारी ने उसे बतायी थीं। राजकुमार तैयार हो गया और गुलाब की सहायता से उसने अपने पहले काम खत्म कर लिये।

जब राजकुमार ने सुन्दर फ़िओरीता को पहचान लिया तो राजा बोला — "बहुत अच्छे। पर यह अभी काफी नहीं है।"

फिर उसने उसे एक कमरे में बन्द कर दिया जो सारा का सारा फलों से भरा हुआ था। उसने राजकुमार से कहा कि वह किसी भी तरह से उन सब फलों को एक दिन में खा कर खत्म कर दे।"

राजकुमार तो यह सुन कर बहुत निराश हो गया पर फिर तभी उसे अपने बड़े जीजा के दिये हुए सूअर के बाल ध्यान आये तो उसने उन्हें जमीन पर फेंक दिया। अचानक ही बहुत सारे सूअर आ गये और उस कमरे में रखे सारे फल खा गये।

इस तरह से यह काम तो पूरा हो गया पर राजा ने उसको एक और काम सौंप दिया। उसने कहा कि वह अपनी दुलहिन को अपने कमरे में ले जा सकता है पर उसको उसे बहुत ही सुन्दर और बहुत ही मीठा गाने वाली चिड़ियों के संगीत से सुलाना पड़ेगा।

इस काम के लिये अबकी बार उसे अपने दूसरे जीजा के दिये हुए पंखों की याद आयी तो उसने वे पंख जमीन पर फेंक दिये कि तभी बहुत सारी चिड़ियें वहॉ आ कर राजकुमारी को अपना गीत सुना कर सुलाने लगीं। उन्होंने सबने इतना अच्छा गाया कि राजकुमार खुद भी सो गया।

पर एक नौकर ने उसे तभी उठा दिया और कहा कि राजा ने कहा है कि वह अब अपने प्यार का पूरा पूरा आनन्द उठा सकता है। पर कल सुबह जब वह उठे तो राजा को एक दो साल का बच्चा दे जो बोल सके और उसे उसका नाम ले कर पुकार सके। नहीं तो वे दोनों जान से मार दिये जायेंगे।

राजकुमार सुन्दर फ़िओरीता से बोला — "चलो अब चल कर सोते हैं। आज और कल सुबह के बीच कोई भला आदमी ही अब हमारी सहायता कर सकता है।"

अगली सुबह राजकुमार को अपने सबसे छोटे वाले जीजा की दी हुई हड्डी याद आयी तो उसने वह हड्डी निकाली और उसे जमीन पर फेंक दिया। लो वहॉ तो एक बहुत ही सुन्दर बच्चा अपने दॉये हाथ में सुनहरा सेब लिये हुए "मम्मा पप्पा" कहता हुआ निकल आया।

राजा ने बच्चे को चूमा दोनों को आशीर्वाद दिया और अपना ताज अपने सिर से उतार कर अपने दामाद को पहना दिया।

वह बोला — "लो अब यह ताज तुम्हारा है।"

उसके बाद तो बहुत बढ़िया बढ़िया दावतें हुईं। राजा ने उनमें राजकुमार की तीनों बहिनों को भी उनके पतियों सहित बुलवाया।

जब राजकुमार के पिता ने अपने बेटे के बारे में यह खबर सुनी तो वह भी बहुत खुश हुआ क्योंकि वह तो यह सोच ही चुका था कि अब शायद वह उसे कभी नहीं देख पायेगा। उसने भी अपना ताज उतार कर अपने बेटे के सिर पर रख दिया।

इस तरह राजकुमार और सुन्दर फ़िओरोता दोनों दो राज्यों के राजा रानी बन गये और फिर बहुत दिनों तक आनन्द से रहे।

इस ऊपर वाली कहानी में दुलहा अपनी पत्नी को खुद मुश्किल काम कर के जीतता है। ऐसी ही एक और तरह की कहानी भी हैं जिनमें दुलहा अपनी दुलहिन को कोई पहेली बूझ कर पाता है। इसी तरह से कोई पहेली और या यों कहो कि केई मुश्किल सवाल दुलहिन से भी पूछा जा सकता है या किसी और दूसरे की तरफ से भी। जो भी उम्मीदवार इस पहेली को नहीं बूझ पाता उसे मार दिया जाता है।

या फिर यह पहेली उम्मीदवार खुद ही पूछता है और दुलहिन इसका जवाब देती है। अगर दुलहिन उसका जवाब दे देती है तो उम्मीदवार मारा जाता है और अगर वह जवाब नहीं दे पाती तो वह दुलहे से शादी कर लेती है।

इनमें इटली में पहले तरीके की कहानियॉ तीन पायी जाती हैं जिनमें से दो आपस में बहुत ही मिलती जुलती हैं।

पैन्टामिरोन में पहले दिन की कहानी नम्बर **5** "द फ्ली"[67] में एक राजा को एक पिस्सू काट लेता हैउसको वह बहुत सुन्दर और शाही लगता है तो वह उसको मारता नहीं है। वह उसको एक बोतल में बन्द कर लेता है और रोज अपनी बॉह से निकला हुआ खून पिलाता है। वह छोटा सा जानवर इतनी तेज़ी से बढ़ता है कि सात महीने बाद राजा को उसके रहने की जगह बदलनी पड़ती है। अब वह धीरे धीरे एक भेड़ जितना बड़ा हो जाता है।

जब वह बड़ा हो जाता है तो राजा उसको मरवा देता है और उसकी खाल निकलवाा लेता है। उसके बाद वह सारे शहर में यह ढिंढोरा पिटवा देता है कि जो कोई यह बतायेगा कि यह खाल किस जानवर की है तो वह अपनी बेटी की शादी उसके साथ कर देगा।

एक ओगरे इस सवाल का जवाब दे देता है तो बजाय अपने वायदे को तोड़ने के वह अपनी बेटी उसको दे देता है। एक बुढ़िया के सात बेटे जिनके हर एक के पास कोई न कोई ताकत है सो वे इस लड़की को बचा लेते हैं।

गौन्ज़ेनबाक की कहानी नम्बर **32** में – "डाकू जिसके एक जादूगरनी का सिर था"[68] एक राजा जिसकी तीन बेटियॉ हैं एक जूँ को बहुत मोटा करता है और फिर जैसे पैन्टामिरोन में राजा करता है वैसे ही वह भी उसको दरवाजे पर टॉग देता है।

एक डाकू है जिसके पास एक जादूगरनी का सिर है जो डाकू को सब कुछ बता सकता है जो वह जानना चाहता है, वह डाकू राजा के सवाल का जवाब देता है और इसके बदले में उसकी बड़ी बेटी ले लेता है। वह उसको घर ले जाता है और वहॉ कुछ दिनों के लिये अकेला छोड़ देता है। जब वह वापस आता है तो उस जादूगरनी के सिर से पता चलता है कि उसकी पत्नी ने उसे धोखा दिया है तो वह उस राजकुमारी को मार देता है।

उसके बाद वह राजा की दूसरी बेटी से शादी करता है। उसको भी वह उसी वजह से मार देता है और तब वह शादी करता हे राजा की तीसरी बेटी से। यह बहुत अच्छी लड़की थी और जादूगरनी के सिर ने इसकी बहुत तारीफ की। एक दिन उसको जादूगरनी का सिर मिल जाता है तो वह उसे ओवन में फेंक देती है। और डाकू जिसकी ज़िन्दगी किसी तरह से उस सिर से जुड़ी हुई थी मर जाता है।

उसके बाद वह अपनी बहिनों को ज़िन्दगी के पानी से नहला कर ज़िन्दा करती है। फिर तीनों वापस अपने पिता के घर आती हैं। उसके बाद उनका पिता उनकी शादी तीन सुन्दर राजकुमारों से कर देता है।

---

[67] The Flea. Day 1, Tale No 5. You may read this tale in my book "Pentamerone-1" in Hindi entitled as "Pissoo", (Tale No 1-5).

[68] Gonzenbach. "The Robber Who Had a Witch's Head". (Tale No 22).

इसकी तीसरी कहानी श्नैलर की लिखी हुई है – "द डैविल्स वाइफ़"।[69] यह "ब्ल्यूबीयर्ड" जैसी कहानी है जिसे हम बाद में बतायेंगे।

"एक राजा और रानी थे जिनके एक अकेली बेटी थी जो बहुत सुन्दर थी और उसको पोशाकों का बहुत शौक था। एक दिन उसको एक जूँ मिल गयी। अब बच्ची को तो पता नहीं था कि यह क्या जानवर है वह उसको ले कर अपनी मॉ के पास दौड़ी गयी और उससे पूछा — "मॉ यह क्या है।"

उसकी मॉ ने कहा — "इसे ले जा कर एक बक्से में बन्द कर दो और इसे खाना खिलाओ। जब यह बड़ी हो जायेगी तब हम तुम्हारे लिये इसकी खाल के दस्ताने बनवा देंगे। इन्हें हम दिखायेंगे और तुम्हारे लिये आने वाले जो भी उम्मीदवार इस जानवर का नाम बतायेंगे हम उसी से तुम्हारी शादी कर देंगे।"

अब जो उम्मीदवार इस खाल के जानवर का नाम बताने में सफल हुआ वह शैतान था। वह राजकुमारी को ब्याह कर अपने घर ले गया और उससे कहा कि वह एक खास कमरे को न खोले। एक दिन जब वह बाहर गया हुआ था तो राजकुमारी ने वह खास कमरा खोल दिया। उसमें से लपटें निकल रही थीं और पापी आत्माऐं थीं। उनसे उसे पता चला कि उसका पति कौन था।

वह इतना डर गयी कि वह बीमार पड़ गयी पर किसी तरह से एक कबूतर के द्वारा वह अपने पिता के पास यह सन्देश भेज पायी। राजा यह सन्देश पाते ही अपनी बेटी को आजाद करवाने के लिये अपने बहुत सारे सैनिकों को ले कर अपने राज्य से चल पड़ा। रास्ते में उसे तीन नौजवान मिले जिनके पास आश्चर्यजनक ताकतें थीं – दूर का देखने की, हल्की से हल्की आवाज सुनने की और असाधारण ताकत की। उन तीनों की सहायता से वह अपनी बेटी को बचाता है।

आगे वाली कहानी "बीयर्ड" बाद वाली कहानी का एक रूप है —

[69] Schnellar. "The Devil's Wife". (Tale No 31). This tale is from Italy's Tyrol area.

14 बीयर्ड[70]

एक बार की बात है कि एक मॉ थी जिसके एक बेटा था जो स्कूल जाया करता था। एक दिन वह स्कूल से घर लौटा तो मॉ से बोला — "मॉ मैं बाहर जा कर अपनी किस्मत आजमाना चाहता हूॅ।"

मॉ बोली — "अरे बेटा तू कहीं पागल तो नहीं हो गया है। तू अपनी किस्मत कहॉ ढूॅढेगा।"

बेटा बोला — "मॉ मैं सारी दुनियॉ घूमूॅगा जहॉ भी वह मुझे मिल जाये।"

उसके पास एक कुत्ता था जिसका नाम बीयर्ड था। बेटा बोला — "मॉ कल सुबह मेरे लिये थोड़ी सी डबल रोटी बना देना, उसे एक थैले में रख देना और मुझे लोहे के एक जोड़ी जूते दे देना। मैं और बीयर्ड जायेंगे और अपनी किस्मत आजमायेंगे।"

मॉ ने उसे बहुत समझाया — "बेटा मत जा। तू अगर चला गया तो फिर में तुझे कभी नहीं देख पाऊॅगी।"

और वह ऐसे रो पड़ी जैसे वह अभी मर गया हो। जब वह थोड़ी शान्त हुई तो बोली — "ठीख है कल मैं तेरे लिये डबल रोटी भी बना दूॅगी और ब्रैड केक भी बना दूॅगी।"

अगले दिन जब उसने उसके लिये ब्रैड केक बनायी तो उसने उसमें जहर मिला दिया। उसने डबल रोटी और ब्रैड केक दोनों एक

[70] Bierde. Tale No 14. Bierde is pronounced as "Beard"

थैले में रखीं और उसको दे दीं। उसने अपने बीयर्ड को साथ लिया और वहॉ से चला गया।

वह चलता रहा चलता रहा जब तक कि उसको भूख नहीं लग आयी। उसने अपने कुत्ते से कहा — "बीयर्ड। तुम तो मुझे बहुत थके हुए लगते हो और साथ में भूखे भी। अभी हम थोड़ी दूर और चल लें फिर खाना खायेंगे।"

कह कर वह और आगे चल दिया। आखिर वह एक पेड़ के नीचे बैठ गया। उसका कुत्ता उसके पास ही बैठ गया। वह बोला — "अब हम खाना खाते हैं। ठहरो बीयर्ड। मैं तुम्हें केक निकाल कर देता हूॅ ताकि तुम भी केक खा सको।"

कह कर उसने ब्रैड केक का एक बड़ा सा टुकड़ा तोड़ा और उसे कुत्ते की तरफ फेंक दिया। कुत्ता इतना ज़्यादा भूखा था कि वह उसको तुरन्त ही खा गया। पर यह क्या। केक खा कर उसने तीन चार चक्कर काटे और अपनी जबान बाहर निकाल कर शान्त लेट गया। वह मर गया था।

लड़का बेचारा उसे इस तरह देख कर बहुत दुखी हुआ और "हाय बीयर्ड हाय बीयर्ड" कह कह कर रोने लगा। "तुमको तो जहर दिया गया है और यह मेरी मॉ ने किया है। वह बहुत ही बुरी है। उसने केक में जहर इसलिये मिलाया था ताकि वह मुझे मार सके।"

वह रोता रहा और कहता रहा — "ओह बेचारे बीयर्ड। तुम तो मर गये हो पर तुम मेरी ज़िन्दगी बचा गये हो।"

जब वह इस तरह रो रहा था तो वहॉ से तीन कौए उड़े जा रहे थे। कुत्ते को मरा देख कर वे नीचे उतरे और उन्होंने उसकी जीभ में अपनी चोंचें मारीं। कुछ पल में वे तीनों भी मर गये। वह बोला — "मरे हुए बीयर्ड ने तीन कौए मारे। मैं इन्हें अपने साथ ले जाता हूॅ।" सो उसने उन्हें उठाया और आगे चल दिया।

आगे चल कर उसने देखा कि एक बहुत बड़ी आग जल रही है और उसे वहॉ से कुछ लोगों के बात करने और गाने की आवाज आ रही है। पास पहुॅच कर उसने देखा तो सात डाकू बैठे बैठे कई चिड़ियें तो खा गये हैं फिर भी उनके पास काफी मॉस अभी भी बचा पड़ा है।

उनको देख कर वह डर गया। उसने सोचा कि अब तो वे लोग उसको पकड़ लेंगे और उसे मार डालेंगे। पर फिर उसने सोचा कि इतना डरने की क्या जरूरत है चलो चलते हैं। जैसे ही उन डाकुओं ने उसे देखा तो वे सब एक साथ चिल्लाये — "रुक जाओ। या तो हमें अपना सारा पैसा दो या फिर मरने के लिये तैयार हो जाओ।"

लड़का बेचारा बोला — "तुम लोग मुझसे क्या लेना चाहते हो। पैसा मेरे पास है नहीं। मुझे तो बहुत भूख लगी है। मेरे पास तो केवल यही तीन चिड़ियें हैं। हॉ अगर तुम्हें ये चाहिये तो मैं तुम्हें दे देता हूॅ।"

वे बोले — "ठीक है। खाओ और खुश रहो। तुम्हारी ये चिड़ियें हम खा लेंगे।"

उन्होंने उससे चिड़ियें ले ली। उनके पंख नोचे उनको खाने के लिये तैयार किया और कोयले के ऊपर भुनने के लिये रख दिया। उन्होंने नौजवान से कहा — "हम तुम्हें इन चिड़ियों में से कुछ नहीं देंगे इन्हें हम खायेंगे तुम दूसरा मॉस खाना।"

सो उन्होंने वे तीनों चिड़ियें खा लीं और खाते ही वे मर भी गये। जब नौजवान ने देखा कि अब उनमें से कोई हिल भी नहीं रहा बल्कि वे मर गये थे तो उसके मुँह से निकला — "मरे हुए बीयर्ड ने तीन को मारा और तीन ने सात को मारा।"

फिर उसने खाना खाया और वहॉ से चला दिया। रास्ते में उसको फिर भूख लगी तो वह फिर से एक पेड़ के नीचे बैठ गया और खाना शुरू कर दिया। खाना खा कर उठा तो उसने एक दूसरे पेड़ पर कैनैरी चिड़िया बैठी देखी।

उसने एक पत्थर उठाया और उसको मारा तो वह उड़ गयी। पेड़ के पीछे एक बड़ा खरगोश[71] अपने बच्चे के साथ था। बेचारा वह मारा गया।

जब नौजवान उस जगह गया जहॉ वह पत्थर गिरा था तो उसने देखा कि वहॉ तो एक बड़ा खरगोश मरा पड़ा है। तो उसके मुँह से

[71] Translated for the word "Hare". Hare is like rabbit but is a little bigger that that. See its pictue there.

निकला — "मैंने तो पत्थर को एक कैनेरी चिड़िया पर फेंका पर उसने तो एक बड़ा खरगोश मार दिया। मैं इसको ले जाता हूँ और अगर जो आग डाकुओं ने जलायी थी वह अभी भी बाकी होती तो में इसे उस पर भून लेता।"

उसने बड़ा खरगोश उठाया और आगे चल दिया। चलते चलते वह एक चर्च के पास आया तो उसने देखा कि वहाँ एक लैम्प जल रहा है और उसके पास ही पूजा की किताब रखी हुई है।

सो उसने बड़े खरगोश की खाल उतारी और किताब जला कर आग जलायी। उस आग पर उसने उसे भूना और खा लिया। उसने फिर अपनी यात्रा जारी रखी जब तक वह एक पहाड़ की तलहटी में नहीं आ गया। वहाँ समुद्र भी था।

समुद्र के किनारे उसने दो आदमी देखे जो एक नाव चलाते थे जिसमें वे सवारियों को दूसरे किनारे तक ले जाते थे। लोग पैदल नहीं जा सकते थे क्योंकि वहाँ धूल बहुत थी जिससे आदमी का दम घुटता था। पार करने की कीमत तीन सोल्दी थी।[72]

लड़के ने पूछा — "पार कराने का क्या लोगे?"

तो उन्होंने जवाब दिया "तीन सोल्दी।"

लड़के ने बोला — "मुझे पार करा दो भाई। मैं तुम्हें दो सोल्दी दूँगा क्योंकि मेरे पास केवल इतना ही है।"

[72] Soldi. This must be some kind of the currency in those times

उन्होंने जवाब दिया कि दो से काम नहीं बनेगा जब तक तीन नहीं होंगे। उसने फिर से उनसे वही विनती की और उन्होंने भी उसे वही जवाब दिया। उसने कहा कि वह वहीं ठहरेगा। और वह वहीं रहा।

कुछ ही देर में थोड़ी सी बारिश हो गयी सो धूल दब गयी और वह वहॉ से पार चला गया। चलते चलते वह एक शहर में पहुँचा जो एक बहुत बड़ी परेशानी में था।

उसने पूछा — "क्या बात है। इतने सारे लोग यहॉ क्यों जमा हैं।"

उन्होंने कहा — "गवर्नर की बेटी है जो सब कुछ अन्दाज लगा लेती है। उससे वही शादी करेगा जिसकी पहेली को वह अन्दाज नहीं लगा पायेगी। जिसकी पहेली को वह बूझ देगी वह जान से मारा जायेगा।"

नौजवान बोला — "क्या मैं भी जा सकता हूँ उसके पास?"

वे बोले — "हॉ हॉ क्यों नहीं। पर क्या तुम वहॉ सचमुच ही जाना चाहते हो? क्या तुम पागल तो नहीं हो गये हो? तुम तो एक बेवकूफ लड़के लगते हो। कितने कितने होशियार लोग वहॉ गये हैं और वापस नहीं आये हैं और तुम बेवकूफ वहॉ जाना चाहते हो। तुम तो वहॉ निश्चित रूप से मारे जाओगे।"

नौजवान बोला — "मेरी मॉ ने कहा है कि वह मुझे अब ज़िन्दा नहीं देखेगी सो मैं वहॉ जाता हूँ।"

वह गवर्नर के पास गया और बोला — "सर गवर्नर। मैं आपकी बेटी से मिलना चाहता हूँ और देखना चाहता हूँ कि वह वह बता पाती है या नहीं जो मैं उससे पूछना चाहता हूँ।"

गवर्नर बोला — "क्या तुम अपनी मौत के पास जाना चाहते हो। कितने लोगों ने यहाँ आ कर अपनी जानें गँवायी हैं। क्या तुम भी अपनी जान गँवाना चाहते हो।"

वह बोला — "मैं कोशिश करना चाहता हूँ।"

वह खुद वहाँ जा कर देखना और कोशिश करना चाहता था। वह उस कमरे में गया जहाँ गवर्नर की बेटी बैठी हुई थी। गवर्नर ने और लोगों को भी वहाँ उनकी बातचीत सुनने के लिये बुला लिया था।

जब सब लोग वहाँ इकट्ठे हो गये तो गवर्नर ने लड़के से फिर कहा कि इस बारे में वह एक बार फिर सोच ले क्योंकि अगर उसकी बेटी ने उसकी पहेली सुलझा दी तो उसको मरना पड़ जायेगा।

लड़के ने कहा कि "मैं जानता हूँ।"

कमरा बहुत अक्लमन्द लोगों से भरा हुआ था। नौजवान ने वहाँ अपना परिचय दिया और बोला —

मरे हुए बीयर्ड ने तीन को मारा

राजकुमारी ने सोचा एक मरा हुआ तीन को कैसे मार सकता है। यहाँ तो एक मरा हुआ है और तीन मारे गये हैं और तो कोई है

ही नहीं। अब मैं क्या करूँ। वह तो परेशान हो गयी और अपने आपको बेचैन महसूस करने लगी। नौजवान आगे बोला —

मैंने फेंका जहाँ मैंने देखा और वह वहाँ पहुँच गया जहाँ मुझे आशा नहीं थी
मैंने वह खाया जो पैदा हुआ था और जो पैदा नहीं भी हुआ था
उसको शब्दों के साथ पकाया गया था
दो नहीं जा सकते अगर वे तीन न हों
पर सख्त मुलायम के ऊपर से चला गया

जब गवर्नर की बेटी ने यह सुना तो उससे तो कोई जवाब नहीं बन पाया। वहाँ बैठे दूसरे लोग भी यह सुन कर आश्चर्यचकित हो गये और कहने लगे कि अब राजकुमारी को इस लड़के के साथ शादी कर लेनी चाहिये।

उसके बाद उसने सबको अपनी कहानी सुनायी कि उसके साथ क्या क्या हुआ था और फिर दोनों की शादी हो गयी।

अब हम एक ऐसे किस्म की कहानियों की तरफ चलते हैं जो सब देशों में पायी जाती है जिन्हें उनमें पायी गयी केवल एक घटना पर "भूली हुई दुलहिनें"[73] का नाम दिया जा सकता है।

इनके साधारण रूप में कहानी का हीरो अपनी हीरोइन को ढूँढने के लिये निकलता है वह या तो बेटी है या फिर किसी ओगरे या ओगरैस के कब्जे में है। तब हीरो हीरोइन की सहायता से हीरोइन के पिता के बताये हुई मुश्किलें हल करता है पर आखिर में उससे प्यार करने लग जाता है। वह उसको भगा ले जाता है तो माता पिता हीरो का पीछा करते हैं। हीरो उनका यह पीछा किन्हीं जादू की चीज़ें पीछे फेंकने से या फिर अपनी शक्ल बदल कर उनको पीछा करने से रोकता है।

हीरो अपनी दुलहिन को छोड़ कर अपने माता पिता को उससे मिलाने के लिये तैयार करने के लिये उनके पास जाता है। पर साधारणतया अपनी माँ के चूमने पर वह अपनी दुलहिन को तब तक के लिये भूल जाता है जब तक दुलहिन खुद उसको याद नहीं दिलाती। दोनों मिल जाते हैं और फिर खुशी से रहते हैं।

किसी किसी कहानी में हीरो मुश्किल काम भी नहीं करता या फिर अपने पीछे जादुई चीज़ें भी नहीं फेंकता। इस कहानी के सारे टुकड़े माँ के चूमने पर दुलहिन को भूल जाने तक कई कहानियों में पाये जाते हैं, खास कर के "सच्ची दुलहिन" में।[74]

जियूसैप्पे पित्रे की यह कहानी जो आगे दी जा रही है इस तरह की कहानियों का सबसे अच्छा उदाहरण है।

---

[73] "Forgotten Brides"

[74] "True Bride"

15 बर्फ सी सफेद आग सी लाल[75]

एक बार की बात है कि एक राजा और एक रानी थे। उनके कोई बच्चा नहीं था। वे हमेशा ही एक बच्चे के लिये प्रार्थना करते रहते। साथ में यह भी कहते कि अगर उनके एक बच्चा हो गया तो चाहे वह लड़की ही क्यों न हो वे दो फव्वारे सात साल तक बनाये रखेंगे। उनमें से एक फव्वारा तेल का होगा और दूसरा शराब का।

इस इरादे के फलस्वरूप उनके घर एक बेटा पैदा हुआ। जैसे ही बच्चा पैदा हुआ दो फव्वारे बनवा दिये गये – एक तेल का दूसरा शराब का। अब लोग कभी भी वहॉ जाते और तेल या शराब ले लेते।

सात साल खत्म होने पर वे फव्वारे सूखने लगे। एक राक्षसी जिसको तेल की जरूरत थी उस फव्वारे से तेल की कुछ बूँदें इकट्ठा करने गयी जिसमें से अभी भी कुछ बूँदें टपक रही थीं। उसके हाथ में एक स्पंज था और एक लोटा था।

उसने स्पंज से थोड़ा सा तेल समेटा और उसे अपने लोटे में निचोड़ दिया। उसको अपना लोटा भरने में काफी मेहनत करनी पड़ी।

---

[75] Snow-White-Fire-Red. Tale No 15. By Giuseppe Pitre. (Tale No 13).

तभी वहीं राजा का छोटा सा बेटा भी खेल रहा था। वह गेंद खेल रहा था। उसने गेंद फेंकी तो वह उसके लोटे में जा कर लगी और उसका लोटा टूट गया।

यह देख कर राक्षसी बोली — "सुन मैं तेरा कुछ बिगाड़ तो नहीं सकती क्योंकि तू राजा का बेटा है पर मैं तुझे यह शाप देती हूँ कि तू जब तक शादी न कर सके जब तक तू "बर्फ सी सफेद आग सी लाल" को न पा ले।"

राजा का बेटा होशियार था। उसने एक कागज पर उस बुढ़िया के शब्द लिख लिये और घर ले जा कर उसे एक ड्रौअर में रख दिया। उसने उसके बारे में किसी से कुछ नहीं कहा।

जब वह 18 साल का हुआ तो राजा और रानी उसकी शादी करना चाहते थे तब उसे उस बुढ़िया का शाप याद आया। उसने ड्रौअर से अपना लिखा हुआ कागज निकाला और एक भारी सॉस ले कर बोला — "उफ़ अगर बर्फ सी सफेद वाली और आग सी लाल वाली मुझे नहीं मिली तो मैं तो शादी ही नहीं कर सकता।"

जब उसे ठीक समय मिला तो उसने अपने माता पिता से इजाज़त ली और अपनी यात्रा पर निकल पड़ा। महीनों गुजर गये उसे कोई नहीं मिला। एक शाम जब रात होने वाली थी वह बहुत ही थका हुआ था और अपनी हिम्मत खो चुका था तो उसे सामने वाले मैदान में एक बहुत बड़ा घर नजर आया।

सुबह जब पौ फूटी तो वहाँ एक बहुत बड़ी राक्षसी आयी। वह भयानक रूप से लम्बी थी और बहुत तन्दुरुस्त थी आयी और बोली — "बर्फ सी सफेद आग सी लाल। अपने बाल नीचे करो ताकि मैं ऊपर चढ़ सकूँ।"

जब राजकुमार ने यह सुना तो वह बोला — "अच्छा तो यहाँ है वह बर्फ सी सफेद आग सी लाल राजकुमारी।"

बर्फ सी सफेद आग सी लाल राजकुमारी ने अपने बाल नीचे फेंक दिये जो उसे कभी न खत्म होने वाले लगे। और वह राक्षसी उनको पकड़ कर ऊपर चढ़ गयी।

अगले दिन राक्षसी उतरी और जब राजकुमार ने पक्का कर लिया कि वह चली गयी तो वह उस पेड़ के नीचे आया जिसके ऊपर वह छिपा हुआ था और चिल्ला कर बोला — "बर्फ सी सफेद आग सी लाल। अपने बाल नीचे करो ताकि मैं ऊपर चढ़ सकूँ।"

लड़की ने सोचा कि यह तो उसकी माँ की आवाज है उसने अपने बाल नीचे गिरा दिये। और राजकुमार उनको पकड़ कर ऊपर चढ़ गया। जब वह ऊपर पहुँचा तो उसने उस लड़की से कहा — "ओ मेरी प्यारी छोटी बहिन। मैंने तुम्हें ढूँढने को लिये कितनी कोशिशें नहीं कीं।"

तब उसने उसे बुढ़िया के शाप के बारे में बताया जो उसे जब वह सात साल का था तब मिला था। लड़की ने उसे कुछ खाने को दिया और कहा — "देखो। अगर राक्षसी आ गयी और उसने

तुमको यहॉ इस तरह देख लिया तो वह तुम्हें खा जायेगी। इसलिये तुम कहीं छिप जाओ।"

राक्षसी वापस आयी तो राजकुमार ने अपने आपको छिपा लिया। जब राक्षसी खाना खा चुकी तो उसकी बेटी ने उसको वाइन पीने के लिये दी। उसको उसने इतनी वाइन पिलायी कि वह अपने होश खो बैठी।

तब राजकुमारी ने उससे पूछा — "मॉ। अगर मुझे यहॉ से बाहर निकलना हो तो मैं यहॉ से कैसे निकलूॅ। ऐसा नहीं है कि मैं बाहर जाना ही चाहती हूॅ क्योंकि मैं तो आपके पास ही रहना चाहती हूॅ। पर मैं तो बस यूॅ ही जानना चाहती थी। तो बताइये न।"

राक्षसी मुस्कुरा कर बोली — "तो तुम यहॉ से बाहर जाना चाहती हो। पहले तुमको इस जगह की हर चीज़ पर जादू डालना होगा ताकि मैं समय की माप गणना भूल जाऊॅ। मैं तुम्हें बुलाऊॅ पर तुम्हारी बजाय कुर्सी या आलमारी जवाब दें।

इस तरह से जब तुम नहीं आओगी तो फिर मैं ऊपर चढ़ आऊॅगी। मैंने सात धागे के गोले रखे हुए हैं तुम वे सातों गोले ले कर चली जाना। जब मैं ऊपर आ कर तुमको नहीं देखूॅगी तो मैं तुम्हारा पीछा करूॅगी।

जब तुम देखो कि तुम्हारा पीछा किया जा रहा है तो तुम एक एक कर के वे सातों गोले अपने पीछे फेंक देना। मैं तुम्हें हमेशा ही

पकड़ लूँगी जब तक तुम आखिरी गोला नहीं फेंकोगी।" राजकुमारी ने यह सब सुना जो उसकी माँ ने कहा और इसे याद भी कर लिया।

अगले दिन जब राक्षसी बाहर गयी तब बर्फ सी सफेद आग सी लाल और राजकुमार ने वही किया जैसा राक्षसी ने कहा था । उन्होंने सातों धागे के गोले उठाये और घर में चारों तरफ गये और सभी से कहा — "मेज जब मेरी माँ बुलाये तो तुम जवाब देना। कुर्सी जब मेरी माँ बुलाये तो तुम जवाब देना। आलमारी जब मेरी माँ बुलाये तो तुम जवाब देना।"

इस तरह उन्होंने सारे घर पर जादू डाल दिया। फिर वे वहाँ से इतनी जल्दी भाग गये जैसे हवा में उड़ रहे हों।

जब राक्षसी घर वापस लौटी और उसने आवाज लगायी — "बर्फ सी सफेद आग सी लाल। अपने बाल नीचे लटका ताकि मैं ऊपर चढ़ सकूँ।"

मेज बोली — "माँ आ जाओ।"

पर जब कोई कुछ देर तक नहीं आया तो उसने फिर आवाज लगायी — "बर्फ सी सफेद आग सी लाल। अपने बाल नीचे लटका ताकि मैं ऊपर चढ़ सकूँ।"

इस बार कुर्सी बोली — "माँ आ जाओ।"

पर जब फिर कोई कुछ देर तक नहीं आया तो उसने फिर आवाज लगायी — "बर्फ सी सफेद आग सी लाल। अपने बाल नीचे लटका ताकि मैं ऊपर चढ़ सकूँ।"

इस बार आलमारी बोली — "मॉ आ जाओ।"

पर जब फिर कोई कुछ देर तक नहीं आया तो उसने फिर आवाज लगायी — "बर्फ सी सफेद आग सी लाल। अपने बाल नीचे लटका ताकि मैं ऊपर चढ़ सकूँ।"

इस बीच दोनों प्रेमी भागते रहे भागते रहे। जब राक्षसी ने देखा कि किसी और ने भी कोई जवाब नहीं दिया तो वह चिल्लायी "धोखा धोखा।"

तब उसने एक सीढ़ी उठायी और ऊपर चढ़ी। ऊपर पहुँच कर उसने देखा कि न तो लड़की है और न उसके धागे के गोले हैं तो वह फिर चिल्लायी — "अरी ओ नीच मैं तेरा खून पी लूँगी।"

कह कर वह उनकी खुशबू सूँघते सूँघते उनके पीछे पीछे भाग ली। उन लोगों ने उसको बहुत दूर से देख लिया। पर जब उसने उनको देखा तो वह दूर से ही चिल्लायी — "बर्फ सी सफेद आग सी लाल। ज़रा पीछे मुड़ कर देख ताकि मैं तुझे देख सकूँ।" पर अगर वह घूम कर देखती तो उस पर जादू पड़ जाता इसलिये उसने देखा ही नहीं।

जब राक्षसी ने करीब करीब उनको पकड़ लिया तो बर्फ सी सफेद आग सी लाल ने धागे का पहला गोला अपने पीछे फेंक दिया। इससे दोनों के बीच में एक बहुत बड़ा पहाड़ खड़ा हो गया।

पर इसको देख कर राक्षसी बिल्कुल नहीं घबरायी। वह जल्दी जल्दी उसके ऊपर चढ़ी और फिर उन दोनों को पकड़ लिया।

बर्फ सी सफेद आग सी लाल ने उसको आते देख अपना दूसरा गोला अपने पीछे फेंक दिया। इससे उन दोनों के बीच एक बहुत बड़ा मैदान पैदा हो गया जिसमें सारे में चाकू और छुरियॉ भरी पड़ी थीं। राक्षसी अपना कटा फटा और लहू लुहान अधमरा शरीर ले कर फिर से उनके पास तक पहुँच गयी।

बर्फ सी सफेद आग सी लाल ने उसको पास आते देख कर अपना तीसरा गोला पीछे फेंक दिया। इस बार उन दोनों के बीच में एक फव्वारा प्रगट हो गया जिसमें से बहुत तरह के सॉप बिच्छू आदि जहरीले जानवर निकल रहे थे।

आखिर मरती हुई और थकी हुई राक्षसी रुक गयी और उसने बर्फ सी सफेद आग सी लाल को शाप दिया — "जैसे ही रानी घर पहुँचने पर अपने बेटे को पहली बार चूमेगी राजकुमार तुझे भूल जायेगा।"

इसके बाद राक्षसी और नहीं सह सकी और वहीं मर गयी। प्रेमी अपनी यात्रा पर चलते रहे और आखिर उस शहर में आ गये जिसमें राजकुमार का घर था।

राजकुमार ने बर्फ सी सफेद आग सी लाल को बाहर ही रोक दिया और कहा — "तुम अभी ठीक से कपड़े नहीं पहने हो सा तुम अभी यहीं रुको। पहले घर मैं जाता हूँ और तुम्हारे लिये जिस चीज़ की जरूरत है वह सब ले कर आता हूँ। तब मैं तुम्हें घर ले चलूँगा।"

वह राजी हो गयी और राजकुमार अपने घर चला गया। रानी ने जैसे ही अपने बेटे को देखा उसने उसको तुरन्त ही चूमने के लिये चल दी। राजकुमार बोला — "मॉ मैंने एक कसम ले रखी है कि मैं अपने आपको किसी के द्वारा चूमे जाने नहीं दूँगा।"

बेचारी मॉ तो यह सुन कर बहुत डर गयी। रात को जब वह सो गया तो उसकी मॉ जो उसको चूमने के लिये बहुत बेचैन हो रही थी उसके कमरे में गयी और उसे चूम लिया। उसी पल से वह बर्फ सी सफेद आग सी लाल के बारे में सब कुछ भूल गया।

अब राजकुमार और उसकी मॉ को तो हम यहीं छोड़ते हैं और बर्फ सी सफेद आग सी लाल के पास चलते हैं जिसको कि यह भी पता नहीं था कि वह कहॉ खड़ी है।

तभी एक बुढ़िया वहॉ आयी तो सूरज सी चमकीली लड़की को रोता देख कर उससे बोली — "मेरी बच्ची। क्या बात है।"

लड़की बोली — "मॉ मुझे पता नहीं कि मैं यहॉ कैसे आयी।"

बुढ़िया बोली — "तू परेशान न हो चल मेरे साथ चल।" कह कर वह उसको अपने साथ अपने घर ले गयी। लड़की के हाथों में जादू था। उसने वहॉ पहुँच कर कुछ सामान बनाना शुरू कर दिया और बुढ़िया ने उसे बेचना शुरू कर दिया। इस तरह से वे दोनों वहॉ रहते रहे।

एक दिन लड़की ने बुढ़िया से कहा कि उसको शाही महल से दो पुराने कपड़े के टुकड़े चाहिये। वह उनसे कुछ बनाना चाहती है।

सो बुढ़िया अगले दिन महल गयी और वहॉ जा कर कपड़े के टुकड़े मॉगने लगी। उसने उनके लिये इतनी जिद की कि वह उन्हें वहॉ से लेने में सफल हो ही गयी।

बुढ़िया के पास दो फाख्ताऐं थीं। बर्फ सी सफेद आग सी लाल ने उन दोनों फाख्ताओं के लिये बहुत सुन्दर दो पोशाकें बना दीं। उनके उन्हें पहना कर वह उनके कानों में फुसफुसायी — "तुम बर्फ सी सफेद आग सी लाल हो और तुम राजकुमार हो। राजा मेज पर बैठा खाना खा रहा है। जाओ उड़ जाओ और उसको बताओ कि तुम्हारे ऊपर क्या क्या गुजरी है।"

जब राजा रानी राजकुमार सब लोग खाना खा रहे थे तो वे दोनों सुन्दर फाख्ताऐं अन्दर जा कर मेज पर जा बैठीं। "ओह ये कितनी सुन्दर हैं।" कह कर सबने उनकी तारीफ की।

तब वह फाख्ता जो बर्फ सी सफेद आग सी लाल बनी हुई थी ने कहना शुरू किया — "क्या तुम्हें याद है जब तुम बहुत छोटे थे तब तुम्हारे जन्म के लिये तुम्हारे माता पिता ने दो फव्वारे लगवाये थे – एक तेल का और दूसरा वाइन का।"

दूसरे फाख्ता ने जवाब दिया — "हॉ हॉ मुझे याद है।

पहली फाख्ता ने फिर पूछा — "और क्या तुम्हें उस बुढ़िया की भी याद है जिसका तुमने तेल का लोटा तोड़ दिया था।"

"हॉ मुझे वह भी याद है।"

पहली फाख्ता ने आगे कहा — "और क्या तुम्हें यह भी याद है कि उस बुढ़िया ने तुम्हें शाप दे दिया था कि जब तक तुम बर्फ सी सफेद आग सी लाल को नहीं पा लोगे तुम्हारी शादी नहीं होगी।"

दूसरी फाख्ता बोली — "हॉ मुझे वह भी याद है।"

थोड़े में कहो तो पहली फाख्ता ने दूसरी फाख्ता को ऐसा सब कह कर सब कुछ याद दिला दिया। वह फिर बोली — "और क्या तुम्हें यह भी याद है कि तुमने उस राक्षसी को कैसे अपने पीछे भगाया था और फिर कैसे तुम्हें शाप दिया था कि तुम किसी से भी अपना पहला चुम्बन पाते ही बर्फ सी सफेद आग सी लाल को भूल जाओगे।"

जब फाख्ता चूमने तक आयी तो उसे सब याद आ गया। राजा और रानी फाख्ताओं को इस तरह बात करते सुन कर बहुत आश्चर्यचकित हो गये। जब वे अपनी बातें खत्म कर चुके तो वे नीचे तक झुके और वहॉ से उड़ गये।

राजकुमार तुरन्त ही चिल्लाया — "अरे देखो तो ये फाख्ताऐं उड़ कर कहॉ गयीं।"

नौकर उनके देखने के लिये भागे तो उन्होंने देखा कि वे फाख्ताऐं तो एक किसान के मकान पर जा कर बैठ गयी थीं। राजकुमार भी उनके पीछे पीछे जल्दी से भागा गया और जा कर उस घर में घुसा तो वहॉ बर्फ सी सफेद आग सी लाल को पा लिया।

जब उसने उसे देखा तो तुरन्त ही उसके गले में बॅहें डाल दीं और बोला — "ओह मेरी प्यारी तुमने मेरे लिये कितना सहा है।"

जल्दी ही उन्होंने उसको ठीक से कपड़े पहनाये और उसको घर ले कर आये। जब रानी ने उसको देखा तो उसके मुॅह से निकला "ओह यह कितनी सुन्दर है।" बाद में उन दोनों की शादी हो गयी।[76]

जैसा कि हमने पहले लिखा था कि यह कहानी अक्सर अधूरी पायी जाती है। इस कहानी के कई रूप मिलते हैं इसका एक रूप मिलान[77] में कहा सुना जाता है "सुन का राजा"[78]। इस कहानी का हीरो सुन के राजा के साथ बिलियर्ड खेलता है और उसकी बेटी को जीत लेता है।

वह अपनी दुलहिन की खोज में जाता है तो आखिर में उसको एक बूढ़ा मिलता है जो उसे यह बताता है कि सुन का राजा कहॉ रहता है और साथ में यह भी कहता है कि "पास के एक जंगल में एक तालाब है जहॉ राजा की बेटिया दोपहर बाद उसमें नहाने के लिये आती हैं।

तुम उनके कपड़े चुरा लेना और जब वे उन्हें तुमसे वापस मॉगने आयें तो वे कपड़े उन्हें तभी देना जब वह तुम्हें राजा के पास ले कर जाने के लिये तैयार हो जायें।

---

[76] Read also Grimms' stories – (1) Sweetheart Roland", Tale No 56. (2) "The Two Kings's Children", Tale No 113. (3) "The True Bride", Tale No 186. (4) "The Drummer", Tale No 196.

[77] Milan is big city in Italy.

[78] The King of the Sun" – This story is given in my collection of Italian tales by Italo Calvino, "Italy kI Lok Kathayen-2" by Sushma Gupta in Hindi. It is given there under the title "The Billiard's Player" (Billiard Khelne Wala).

हीरो वैसा ही करता है जैसा उससे करने के लिये कहा जाता है। जब वह राजा के सामने पहुँचता है तो उससे उसकी तीन बेटियों में से किसी एक को अपनी आँखों पर पट्टी बाँध कर पहचानना था। बाकी की कहानी तो वैसी ही है जैसी और होती हैं – प्रेमियों का शक्ल बदल लेना।

इसमें लड़कियों का नहाना और हीरो का उस लड़की के कपड़े चुराना बिल्कुल उसी तरह से है जैसे "हंस लड़कियों" वाली कहानियों में आता है। ऐसी कहानियाँ इटली के कुछ पुरानी कहानियों के संग्रह में मिलती हैं।

एक कहानी है जो इटली के उत्तर में कही सुनी जाती है – "खुशी का टापू"[79]। इस कहानी में एक गरीब लड़का अपनी किस्मत ढूँढने निकलता है। उसको एक बूढ़ा मिलता है जो उससे यह कहता है कि किस्मत तो केवल **100** सालों में एक बार ही मिलती है। और अगर उसको उस समय न लिया गया तो फिर बस वह कभी नहीं मिलती।

उसने आगे कहा कि अब समय है किस्मत के आने का – आज या कल। उसने उसे सलाह दी कि नदी के किनारे के पास वाले जंगल में जा कर छिप जाये। जब तीन लड़कियाँ वहाँ नहाने के लिये आयें तो वह उनमें से बीच वाली लड़की की पोशाक चुरा ले। वह ऐसा ही करता है और उस बीच वाली लड़की को मजबूर कर देता है कि वह उससे शादी कर ले। यही लड़की "किस्मत" थी।

अपनी माँ की गलती से वह अपनी पत्नी को खो बैठता है और फिर जैसे "क्यूपिड और साइक"[80] कहानी में होता है उसको उस लड़की को ढूँढने के लिये "खुशी के टापू" पर जाना होता है।

यह घटना सिसिली की कई कहानियों में मिलती है। जियूसैप्पे पित्रे की कहानी "गिव मी द वील"[81] में भी पिछली कहानी की तरह ही एक गरीब लड़का अपनी किस्मत खोजने जाता है। रास्ते में उसे एक बुढ़िया मिलती है जो उसे एक खास फव्वारे पर भेजती है जहाँ **12** फाख्ताऐं पानी पीने के लिये आती हैं। वे सब वहाँ आ कर लड़कियाँ बन जाती हैं। वे सब सूरज की तरह सुन्दर हैं पर सबके चेहरों पर परदा पड़ा है।

वह उससे कहती है कि वह उनमें से सबसे सुन्दर लड़की के चेहरे से परदा हटा दे और उसे कहीं छिपा कर रख दे क्योंकि अगर उसको वह परदा मिल गया तो वह फिर से फाख्ता बन कर उड़ जायेगी। लड़का वैसा ही करता है जैसा उससे कहा गया था। वह अपनी पत्नी को घर

---

[79] "The Isle of Happiness". By Domenico Comparetti. (Tale No 50)

[80] "Cupid and Psyche" – read this story in my book "Sooar Raja Jaisi Kahanaiyan-2"

[81] Giuseppe Pitre's tale "Give Me the Veil". (Tale No 50).

ले जाता है और उसका परदा अपनी मॉ को सॅभाल कर रखने के लिये दे देता है। पर वह उसको उसकी पत्नी को दे देती है और वह फाख्ता बन कर उड़ जाती है।

ऐसा दो बार होता है तो तीसरी बार उसका परदा जला दिया जाता है तब वह वहीं रह जाती है क्योंकि परदे के न होने की वजह से वह अब फाख्ता नहीं बन सकती थी। बाद में पता चलता है कि वह तो स्पेन के राजा की बेटी थी जिसके ऊपर जादू डाल दिया गया था।[82]

[82] The Same incident is found in “The Drummer”. By Grimms. (Tale No 193)

16 शैतान ने तीन बहिनों से शादी कैसे की[83]

अभी एक और तरह की कहानियॉ देखना बाकी रह गयी हैं – ये कहानियॉ हैं "ब्ल्यूबीयर्ड"[84] जैसी कहानियॉ। हमें इनके तीन प्रकार के रूप मिलते हैं पर यह नाम सच्चे तरीके से केवल एक ही कहानी को दिया जा सकता है।

इस तरह की तीन कहानियॉ ग्रिम्स की तीन कहानियॉ हैं – "द फ़ेदर बर्ड", "द रौबर ब्राइडग्रूम" और "द वुड कटर्स चाइल्ड"।[85] इसके पहले रूप में जो ब्ल्यूबीयर्ड कहानी का असली रूप है दो बहिनें बारी बारी से एक आदमी से शादी करती हैं पर अपने पति द्वारा ही मारी जाती हैं क्योंकि वे अपने पति के मना किये जाने पर भी उसका एक कमरा खोल लेती हैं। सबसे छोटी लड़की उस कमरे को खोलती तो है पर किसी तरह से उसकी यह बात उसका पति नहीं जान पाता सो वह खुद भी बच जाती है और साथ में अपनी बहिनों को भी ज़िन्दा करा लेती है।

इसके दूसरे रूप में एक डाकू कई बहिनों से शादी करता है और उन्हें अपना हुक्म न मानने के लिये मार देता है। उनमें से सबसे छोटी बहिन मरने से बच जाती है और अपनी मरी हुई बहिनों को भी ज़िन्दा कर लेती है। साधारणतया कहानी के इस रूप में पति जो बहिन बच गयी उससे बदला लेने की कोशिश करता है पर वह इसमें भी असफल रहता है।

इस कहानी के तीसरे रूप में साधारणतया लड़की किसी भूत या राक्षस के कब्जे में है और वह उसको कोई एक खास दरवाजा खोलने से मना करता है पर वह लड़की उसकी बात नहीं मानती और साथ में अपनी गलती भी नहीं मानती सो उसका अपमान कर के उसे वापस भेज दिया जाता है। बाद में वह शादी कर लेती है तो उसके बच्चे एक एक कर के उससे ले लिये जाते हैं जब तक कि वह यह स्वीकार नहीं कर लेती कि हॉ उसने दरवाजा खोला था। या फिर इसके इटैलियन रूप में वह आखीर तक मना करती ही रहती है।

हम ये तीनों रूप अलग अलग देखेंगे पर सबसे पहले हम ब्ल्यूबीयर्ड जैसा रूप देखते हैं।[86] – "शैतान ने तीन बहिनों से शादी कैसे की"।

---

[83] How the Satan Married Three Sisters. Tale No 15.

[84] "Like Bluebeard Stories".

[85] Grimm's three stories – (1) "The Feather Bird" – No 46, (2) "The Robber Bridegroom" – No 40 and (3) "The Woodcutter's Child" – No 3.

[86] This story is written by Widter-Wolf.– "How the Devil Married Three Sisters". (Tale No 11), Fahreb. VIII. 148. This tale is given in this book as Tale No 16 – the present story.

एक बार की बात है कि एक शैतान को शादी करने की बड़ी इच्छा हुई। सो उसने नरक छोड़ा, एक बहुत ही सुन्दर नौजवान का रूप रखा और एक बहुत ही बड़ा और सुन्दर मकान बनाया।

जब वह मकान पूरा बन गया तो उसमें उसने सब तरह का सबसे ज़्यादा फैशनेबिल जरूरत का सामान रखवाया और सब तरह की सजावट करवायी।

उसके बाद वह एक परिवार में गया और अपना परिचय दिया। उस परिवार में तीन बेटियॉ थीं। उसने उनमें से सबसे बड़ी वाली लड़की को पटाया और उसको खुश किया। वह उससे शादी करने को राजी हो गयी।

लड़की के माता पिता यह देख कर बहुत खुश थे कि उनकी बेटी की शादी कितने अच्छे घर में हो रही थी। जल्दी ही दोनों की शादी हो गयी। शादी के बाद शैतान लड़की को अपने घर ले गया।

घर ले जा कर उसने अपनी पत्नी को बहुत बढ़िया फूलों का एक छोटा सा गुलदस्ता दिया जो उसने उसके सीने पर लगा दिया। फिर वह उसको अपने घर के सारे कमरे दिखाने ले गया।

आखीर में वह एक बन्द दरवाजे के पास आया और उससे बोला — "यह सारा मकान तुम्हारा है तुम इसमें कुछ भी कर सकती हो पर किसी भी हालत में तुम इस दरवाजे को मत खोलना।"

पत्नी ने उसका कहा मानते हुए उस समय तो हॉ में सिर हिला दिया पर वह तो उस पल का ही इन्तजार करती रही जब उसको वह बन्द दरवाजा खोल कर देखना था।

अगली सुबह शैतान ने उससे कहा कि वह शिकार को जा रहा है। सो जब वह शैतान घर से बाहर चला गया तो तुरन्त ही वह लड़की उस बन्द दरवाजे की तरफ दौड़ी और उसे खोल दिया।

वहॉ तो उसने बहुत ही भयानक आग जलती देखी जो उसकी तरफ बढ़ी और उससे उसके सीने पर लगे वे फूल मुरझा गये जो उसके पति ने उसको दिये थे।

जब उसका पति घर आया तो उसने उससे पूछा कि उसने वह दरवाजा खोला तो नहीं तो उसने बिना किसी हिचक के जवाब दिया "नहीं"। पर जब शैतान ने अपने दिये फूलों की तरफ देखा तो उसको पता चल गया कि वह झूठ बोल रही है।

वह बोला — "अब मैं तुम्हारी उत्सुकता का और ज़्यादा इम्तिहान नहीं लूँगा। आओ मेरे साथ आओ मैं तुमको खुद दिखाता हूँ कि इस दरवाजे के पीछे क्या है।"

कह कर वह उसको दरवाजे तक ले गया, वह दरवाजा खोला और उसको इतने ज़ोर का धक्का दिया कि वह नरक में जा पड़ी। उसके बाद उसने वह दरवाजा बन्द कर लिया।

कुछ महीने बीतने के बाद उसने उसी परिवार की दूसरी लड़की को अपने साथ शादी करने के लिये पटाया और उसका दिल जीत

लिया। उसके साथ भी ठीक वही हुआ जो उसकी बड़ी बहिन के साथ हुआ था।

अन्त में वह उसी परिवार की तीसरी लड़की के पास गया। यह लड़की होशियार थी। उसने सोचा "यकीनन इसने मेरी दोनों बहिनों को मार डाला है पर यह मेरे लिये अच्छा जोड़ा है। सो अबकी बार मैं इसके साथ जाती हूँ और देखती हूँ कि मैं उन दोनों से ज़्यादा खुशकिस्मत हूँ या नहीं।"

और इस प्लान के साथ उसने उससे शादी के लिये हाँ कर दी। उसको भी घर ले जाने के बाद उसने उसे एक बहुत सुन्दर फूलों का छोटा सा गुलदस्ता दिया और उसको उसके सीने पर लगा दिया।

फिर वह उसको अपने घर के सारे कमरे दिखाने ले गया और एक बन्द दरवाजे को दिखाते हुए उससे उसको हर हाल में खोलने से मना कर दिया।

वह लड़की अपनी बहिनों की तरह उतनी उत्सुक तो नहीं थी पर फिर भी अगले दिन जब उसका पति घर से बाहर चला गया तो उसने वह बन्द दरवाजा खोला। पर इत्तफाक से उसने अपने सीने पर लगे फूल पहले से ही पानी में रख दिये थे।

सो उसने भी वह दरवाजा खोलने पर वह भयानक आग देखी और देखीं उसमें अपनी दोनों बहिनें।

उसके मुँह से निकला — "उफ़ मैं कितनी लाचार हूँ। मैं तो सोचती थी कि मैंने एक सामान्य आदमी से शादी की है पर यह तो शैतान है। अब मैं इसके चंगुल से बाहर कैसे निकलूँ।"

फिर उसने अपनी दोनों बहिनों को बड़ी सावधानी से उस नरक में से बाहर खींचा और उन्हें छिपा दिया। उसके बाद उसने वह फूलों का गुलदस्ता फिर से अपने सीने पर लगा लिया।

जब शैतान घर आया तो उसने अपने दिये हुए उन फूलों की तरफ देखा जो उसने उसके सीने पर लगाये थे। वे फूल उसको बिल्कुल ताजा लगे सो उसने उस लड़की से कोई सवाल नहीं पूछा। उसको विश्वास हो गया कि उसने अपना वायदा निभाया था। पहली बार उसने उसको सचमुच में प्यार किया।

कुछ दिनों बाद उस लड़की ने अपने पति से कहा कि क्या वह तीन आलमारियॉ रास्ते में बिना कहीं उनको नीचे रखे और बिना आराम किये उसके पिता के घर ले जायेगा।

शैतान ने कहा "हॉ हॉ क्यों नहीं।"

"पर ध्यान रहे कि तुम अपना वायदा याद रखना क्योंकि मैं तुमको यहॉ से देखती रहूँगी।"

शैतान ने उससे वायदा किया कि वह वैसा ही करेगा जैसा उसने उससे करने के लिये कहा है।

सो अगले दिन उसने अपनी एक बहिन को एक आलमारी में बन्द किया और उसको अपने पति के कन्धों पर लाद दिया। वह

शैतान ताकतवर तो बहुत था पर साथ में सुस्त भी था। इसके अलावा उसको काम करने की आदत भी नहीं थी।

वह उस आलमारी को ले कर चला तो उस भारी आलमारी को उठाते उठाते थक गया। इससे पहले कि वह अपनी उस सड़क से बाहर निकलता जहॉ उसका मकान था वह कुछ देर आराम करना चाहता था कि उसकी पत्नी चिल्लायी — "इसको नीचे नहीं रखना। मैं तुम्हें देख रही हूॅ।"

शैतान अनमनेपन से उस आलमारी को ले कर चलता रहा जब तक कि वह अपनी सड़क के कोने पर नहीं आ गया। वहॉ आ कर उसने सोचा कि यहॉ तो वह मुझको नहीं देख पायेगी सो मैं यहॉ इसको नीचे रख कर थोड़ा आराम कर लेता हूॅ।

वह बस उस आलमारी को नीचे रखने ही वाला था कि उसकी पत्नी की बहिन जो उस आलमारी के अन्दर थी बोली — "इसको नीचे मत रखना मैं तुम्हें देख रही हूॅ।"

गालियॉ देते हुए वह उस आलमारी को दूसरी सड़क तक ले गया और किसी दूसरे के घर के दरवाजे पर उसको फिर से रखने ही वाला था कि उसने फिर से उसकी बहिन की आवाज सुनी "इसको नीचे मत रखना मैं अभी भी तुम्हें देख रही हूॅ।"

उसने सोचा मेरी पत्नी की ऑखें कैसी हैं कि वह सीधे तो सीधे कोने के दूसरी तरफ भी देख लेती हैं। और शायद वे दीवार के आरपार भी देख लें अगर वे शीशे की बनी हों।

इस तरह सोचते सोचते पसीने से लथपथ बहुत थका हुआ वह अपनी सास के घर आ पहुँचा। वहाँ उसने वह आलमारी उसको दी और तुरन्त ही घर वापस लौट गया ताकि घर जा कर वह बढ़िया नाश्ता कर सके।

अगले दिन भी वही हुआ। वह दूसरी आलमारी ले कर अपनी सास के घर गया और उसको उसको दे कर तुरन्त ही वापस आ गया।

तीसरे दिन उस लड़की को खुद को एक आलमारी में बैठ कर जाना था। सो उसने अपनी एक मूर्ति बनायी और उसको अपने कपड़े पहना दिये।

उसको उसने उस शैतान के मकान के छज्जे पर खड़ा कर दिया और खुद आलमारी में जा कर बैठ गयी। एक दासी ने उस आलमारी को शैतान के कन्धे पर रख दिया।

उसको उठाते हुए वह बुड़बुड़ाया — "उफ़ यह आलमारी तो उन दोनों आलमारियों से कहीं ज़्यादा भारी है। और आज जब वह छज्जे पर बैठी हुई है तो आज तो मेरे आराम करने का कोई मौका भी नहीं है।"

सो बड़ी मुश्किल से उस भारी आलमारी को उठा कर वह अपनी सास के घर बिना रुके चला। वहाँ उसने वह आलमारी भी अपनी सास को दी और जल्दी से अपने घर नाश्ते के लिये वापस

दौड़ पड़ा। आज तो वह भारी आलमारी ले जाते ले जाते उसकी कमर ही टूट गयी थी।

पर आज जब वह घर पहुँचा तो रोज की तरह से उसकी पत्नी आज उसको लेने बाहर नहीं आयी। यहाँ तक कि उसका नाश्ता भी तैयार नहीं था सो उसने उसे आवाज लगायी — "मारगरीटा[87] तुम कहाँ हो?" पर उसकी इस पुकार का भी उसको कोई जवाब नहीं मिला।

वह अपने मकान में चारों तरफ भागता फिरा। एक बार उसकी नजर एक कमरे की खिड़की के बाहर पड़ी तो उसने देखा कि उसके छज्जे पर मारगरीटा खड़ी है।

वह बोला — "मारगरीटा, क्या तुम सो गयी हो? नीचे आओ। मैं कुत्ते की तरह थक गया हूँ और भेड़िये की तरह भूखा हूँ।"

फिर भी उसको कोई जवाब नहीं मिला तो वह गुस्से से ज़ोर से चिल्लाया — "अगर तुम नीचे नहीं आयीं तो मैं ऊपर आ कर तुमको नीचे ले कर आता हूँ।" पर मारगरीटा तो हिली भी नहीं।

गुस्से में भर कर वह ऊपर गया और उसके कान पर एक ज़ोर का घूँसा मारा कि उसका तो सिर ही उड़ गया। उसने देखा कि उसका सिर तो एक मूर्ति का सिर था और उसका नीचे का शरीर तो केवल चिथड़ों का बना हुआ था।

---

[87] Margerita – name of the third and the youngest sister

यह देख कर तो उसका गुस्सा बहुत ही बढ़ गया। वह अपने सारे घर में चीज़ों को तोड़ता फोड़ता फिरा पर उससे क्या फायदा था। इससे उसकी पत्नी तो मिलने वाली नहीं थी। उसको अपनी पत्नी के गहनों का केवल खाली बक्सा ही मिला।

वह बोला — "सो वह मेरे दिये गहने भी चुरा कर ले गयी।"

वह तुरन्त ही उसके माता पिता को इस बात की खबर करने दौड़ा। पर जब वह उसके घर के पास आया तो उसने देखा कि ऊपर छज्जे पर तो तीनों बहिनें यानी उसकी तीनों पत्नियॉ खड़ी हैं और उस पर हॅस रही हैं।

उन तीनों पत्नियों को एक साथ वहॉ खड़ा देख कर तो वह शैतान इतना डर गया कि वह वहीं से उलटे पैरों भाग खड़ा हुआ और फिर अपने घर आ कर ही दम लिया।

उसके बाद से उसने फिर कभी शादी के बारे में सोचा भी नहीं।

हम यह बात पहले ही बता चुके हैं कि "पहेली बूझ कर दुलहिन को जीतने" के विषय में गौन्ज़ैनबाक की कहानी "डाकू जिसके पास जादूगरनी का सिर था" इसका एक बहुत ही अच्छा उदाहरण थी। इस कहानी में एक डाकू पहली राजकुमारी से शादी करने के बाद उसको घर ले जाता है और अपने जादूगरनी के सिर के द्वारा पता करता है कि उसकी पत्नी उसकी गैरहाजिरी में उसके बारे में क्या कहती है। यह सिर एक खिड़की के ऊपर एक टोकरी में लटका हुआ है।

पर "जादूगरनी के सिर" जैसी कई और चीज़ें भी इटली की कहानियों में पायी जाती हैं। इनमें किसी में जादूगर की बजाय कोई डाकू होता है जो कई बहिनों से शादी करता है।

गौन्ज़ैनबाक की लिखी हुई कहानी "द स्टोरी औफ ओहिमे"[88] में ओहिमे एक जादूगर है जो कुछ दिनों के लिये अपनी पत्नी को छोड़ जाता है। जाने से पहले वह उसको एक आदमी की हड्डी देता है और उससे कहता है कि उसके आने से पहले पहले वह उसे खाले।

उसकी पत्नी उस हड्डी को खाती नहीं बल्कि फेंक देती है। आ कर जादूगर पूछता है कि क्या उसने वह हड्डी खा ली पर वह उससे झूठ बोल देती है कि उसने वह हड्डी खा ली। पर जादूगर तब हड्डी से पूछता है "तुम कहॉ हो।"

हड्डी जवाब देती है "मैं यहॉ हूँ।"

जादूगर कहता है "तो यहॉ आओ।"

हड्डी उसके पास आ जाती है और जादूगर लड़की को अपना हुक्म न मानने के बदले में मार देता है। लड़की की दूसरी बहिन भी उसी तरीके से मारी जाती है।

और तब बनती है तीसरी बहिन उसकी पत्नी। उसको आदमी की बॉह खाने के लिये दी जाती है तो वह अपनी मॉ की आत्मा को बुलाती है और उसे अपनी समस्या बताती है तो वह उससे कहती है कि वह उसको जला ले फिर उसका चूरा कर के वह उसे अपनी कमर पर बॉध ले। जब जादूगर वापस आता है तो बॉह से पूछता है कि वह कहॉ है। वह जवाब देती है "मारूज़ा के शरीर पर।"

उसका पति उसकी बात पर विश्वास कर लेता है और उसके साथ नर्मी से पेश आता है। वह अपने घर की दूसरी चीज़ों के सा साथ उसको एक आलमारी में रखी बोतलें भी दिखाता है जिनसे मरा हुआ आदमी ज़िन्दा हो जाता है। और उससे एक दरवाजा खोलने के लिये भी मना करता है। मारूज़ा अपनी उत्सुकता रोक नही पाती और पहला मौका मिलते ही दरवाजा खोल देती है। उसमें उसको एक बहुत ही सुन्दर मरा हुआ राजकुमार मिलता है।

---

[88] "The Story of Ohime". By Gonzenbach. (Tale No 23).

वह उसे जिन्दा कर लेती है और उसकी कहानी सुनती है और उसको फिर से मार देती है ताकि उसके पति को उसकी इस हरकत का पता न चले।

उसके बाद वह जादूगर की मौत का राज़ पूछती है तो वह कहता है कि मैं मर नहीं सकता लेकिन अगर कोई फलॉ पेड़ की शाख मेरे कान में डाल दे तो मैं सो जाऊॅगा और फिर फिर कभी नहीं उठूॅगा। मारूज़ा जल्दी से जल्दी अपने पति को इस जादुई नींद में सुला देती है। राजकुमार को ज़िन्दा कर लेती है। वह उसके साथ चली जाती है और उससे शादी कर लेती है।

कुछ साल बाद जादूगर के कान में से पेड़ की शाख टूट कर निकल जाती है और वह जाग जाता है। वह अब अपनी पत्नी से बदला लेने की सोचता है। वह यह पता लगा लेता है कि वह कहॉ है। वह एक चॉदी की मूर्ति बनवाता है जिसमें वह खुद छिप कर बैठ जाता है और साथ में एक संगीत का वाद्य भी रख लेता है।

वह अपने आपको और मूर्ति को उस महल तक ले जाने में सफल हो जाता है जिसमें मारूज़ा और उसके पति रहते हैं। रात को जब सब सो गये होते हैं तो जादूगर मूर्ति में से निकलता है और मारूज़ा को रसोईघर में ले जाता है। वहॉ वह एक आग जलाता है और उस पर तेल उबलने के लिये रख देता है जिसमें उसे मारूज़ा को डालना होता है।

पर जैसे ही वह यह करने वाला होता है कि वह बोतल जिसमें ज़िन्दगी का पानी है और जो उसने राजा के बिस्तर पर रख दी थी लुढ़क कर गिर जाती है और राजा जाग जाता है। राजा मारूज़ा की चीखें सुनता है तो उसको बचा लेता है और जादूगर को उबलते हुए तेल में फेंक देता है। विश्वास दिलाने के बाद भी उसको कहते हैं कि बड़ी निर्दयता से मार डाला गया था।[89]

फ्लेरैन्स से ली गयी हुए एक और कहानी "द बेकर्स थ्री डौटर्स" "ब्ल्यूबीयर्ड" और "रौबर ब्राइडग्रूम" का मिला जुला रूप है। पति अपनी पत्नी को एक सोने की चाभी देता है और उससे एक खास दरवाजा खोलने से मना करता है और कहता है कि "तुम फलॉ दरवाजा नहीं खोलना। तुम इस बात को छिपा नहीं सकतीं क्योंकि मेरा कुत्ता मुझे सभी कुछा बता देगा। इसके अलावा मैं तुम्हारे लिये एक फूलों का गुच्छा दूॅगा जो तुम्हें मेरे वापस आने पर मुझे वापस करना पड़ेगा। अगर तुम उस कमरे में घुसोगी तो ये फूल मुरझा कर बिखर जायेंगे।

दोनों बहिनें उस कमरे का दरवाजा खोलती है और मारी जाती हैं पर तीसरी बहिन होशियार है। वह उस नीच कुत्ते को मार देती है और राजकुमार को बचा लेती है – जैसा कि

[89] "The Robber Bridegroom". By Grimm. (Tale No 40). This story is similar to this story.

पिछली कहानी में था। वहॉ से वह राजकुमार के साथ भाग जाती है और उससे शादी कर लेती है।

ऐसी ही एक कहानी मिलान की भी मिलती है जिसका नाम भी यही है – "द बेकर्स थ्री डौटर्स"। इसमें एक डाकू अपनी पत्नी को ले कर अपने घर ले जाता है और उससे कहता है कि उसका काम रात भर पहरा देना है और सुबह को जब वे घर वापस लौटें तब घर का दरवाजा खोलना है। पत्नी बेचारी सो जाती है और मार दी जाती है। ऐसा ही दूसरी बहिन के साथ भी होता है। तीसरी पत्नी जागती रहती है राजकुमार को बचा लेती है और भाग कर उसके साथ शादी कर लेती है। बाकी कहानी पहले जैसी ही है।

ब्ल्यूबीयर्ड जैसी कहानी के तीसरे रूप के उदाहरण इटली की कहानियों में केवल दो कहानियॉ मिलती हैं – एक गौनज़ैनबाक की कहानी सिसिली से, दूसरी कौम्पारैत्ती की कहानी पिसा से।[90] इनमें से पहली कहानी "गौडचाइल्ड औफ सेंट फ्रान्सिस औफ पौला"[91] कुछ इस तरह से है — "एक रानी पौला सेंट फ्रान्सिस की प्रार्थना करने पर एक बेटी को जन्म देती है जिसका नाम उन लोगों ने सेंट के नाम के ऊपर पौलीन[92] रखा है। जब बच्ची स्कूल जाती है तो वह सेंट उससे मिलते हैं और उसको कैन्डी देते हैं।

एक दिन सेंट उससे कहते हैं कि वह अपनी मॉ से पूछ कर उनको यह बताये कि जवानी में दुख सहना ज़्यादा अच्छा है या बुढ़ापे में। मॉ कहती है कि जवानी में दुख सहना ज़्यादा अच्छा है। इस पर सेंट पौलीन को उठा कर ले जाते हैं और उसे एक ऊॅची मीनार में बन्द कर देते हैं। सेंट उस मीनार में उसके लम्बे बालों की सहायता से चढ़ते उतरते हैं। मीनार में सेंट पौलीन को वह सब सिखा देते हैं जो उसको सीखना चाहिये।

एक दिन एक राजा उसके बाल पकड़ कर ऊपर चढ़ जाता है और पौलीन को अपने साथ भागने के लिये राजी कर लेता है। पौलीन भी राजी हो जाती है और उसकी दुलहिन बन जाती है। जब उसका पहला बच्चा होता है तो सेंट आते हैं और उसका पहला बच्चा ले जाते हैं। मॉ के मुॅह पर खून मल जाते हैं और उसकी बोली बन्द हो जाती है।

ऐसा तीन बार होता है तो रानी को एक अलग कमरे में बन्द कर दिया जाता है जहॉ वह अपना सारा समय सेंट फ्रांसिस की पूजा में निकाल देती है।

---

[90] Gonzelbach's story from Sicily "The Godchild of St Francis of Paula" , (Tale No 20); and Comparetti's story from Pisa "The Woodman", No 38.

[91] "Godchild of St Francis of Paula". By Gonzenbach. A tale from Sicily.

[92] Pauline

इधर रानी मॉ अपने बेटे की दूसरी शादी करने के लिये तैयार होती है पर जब उसकी शादी की दावत चल रही होती है तो सेंट पौलीन को शाही कपड़ों में ले कर आते हैं और उसके तीनों बच्चे उसे वापस दे देते हैं। और फिर सारा परिवार खुशी खुशी रहता है।

इस कहानी में "कमरा न खोलने" वाली घटना नहीं दी गयी है पर यह घटना दूसरी कहानी जो पिसा में कही सुनी जाती है उसमें पायी जाती है – "द वुडमैन"।[93] इस कहानी के मुख्य विचार को बिगाड़ दिया गया है — "एक लकड़ी काटने वाले के तीन बेटियॉ हैं जिनको वह पाल नहीं पाता। एक दिन एक स्त्री उसको जंगल में मिली तो वह उसे पैसे के एक थैले के बदले में उसकी एक बेटी अपने किसी साथी के लिये ले गयी। साथ में उसको यह विश्वास भी दिला गयी कि जंगल में उसको हमेशा ही बहुत सारी लकड़ियॉ मिल जायेंगी।

यह स्त्री उस लड़की को अपने घर ले जाती है और उससे कहती है कि उसके पीछे वह फलॉ फलॉ कमरे को न खोले। पर लड़की ने वैसा कर दिया तो उसने देखा कि उसकी मालकिन तो दो लड़कियों के साथ नहा रही है और किताब पढ़ रही है। उसने उसका दरवाज तुरन्त ही बन्द कर दिया।

पर जब उसकी मालकिन वापस लौटी और उसने उससे पूछा कि क्या उसने कहा नहीं माना और उसने क्या देखा उसने मान लिया कि हॉ उसने उसका कहा नहीं माना और जो कुछ देखा वह भी उसको बता दिया। इस पर उस स्त्री ने उसका सिर काट कर उसके बालों से छत की शहतीर से लटका दिया और उसका शरीर गाड़ दिया।

यही दूसरी बहिन के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। उसने मालकिन को कुछ लोगों के साथ मेज पर बैठे हुए देखा था। उसने उसको भी मार दिया। तीसरी बहिन ने यह देखते हुए भी कि उसकी दोनों बहिनों की क्या हालत हुई है वह अपनी उत्सुकता को दबा न सकी और वह दरवाजा खोल दिया। उसने मालकिन को एक पलंग पर लेटे हुए देखा। शाम को जब मालकिन वापस आयी और उसने उससे पूछा कि उसने क्या देखा तो उसने मना कर दिया कि "मैंने कुछ नहीं देखा।" मालकिन इससे ज़्यादा उससे कुछ नहीं बुलवा सकी सो उसने उसे किसानों वाले कपड़े पहनाये और उसे जंगल वापस ले जा कर वहीं छोड़ आयी।

पड़ोस के शहर का राजा वहॉ से जा रहा था कि उसको उस लड़की से प्यार हो गया तो उसने उससे शादी कर ली। जब उनका पहला बच्चा हुआ तो वह स्त्री जो उसको पहले ले गयी

[93] The Woodman.

थी उसके बिस्तर के पास प्रगट हुई और बोली — "अब समय आ गया है कि तुम मुझे बताओ कि उस दिन तुमने क्या देखा था।"

रानी ने फिर वही कहा — "मैंने कुछ नहीं देखा।"

सो उस स्त्री ने पहले तो उसके मुँह पर खून लगाया फिर उसका बच्चा उठा कर ले गयी। जब यह दोबारा भी हुआ तो राजा ने उसको एक दूसरे कमरे में रखवा दिया और वह अपनी दूसरी शादी करने की तैयारी करने लगा। इस दावत में उसने अपनी पहली पत्नी को भी बुलाया।

जब सब बैठे हुए थे तब वह स्त्री वहाँ मेज के नीचे प्रगट हुई और पहली पत्नी का स्कर्ट खींचते हुए बोली — "क्या तुम मुझे बताओगी कि उस दिन तुमने क्या देखा।"

रानी बोली — "नहीं। नहीं।" और वह बेहोश हो गयी।

उसी समय वहाँ एक बहुत बड़ी गाड़ी आयी जिसमें एक स्त्री बैठी हुई थी। उसने कहा कि वह राजा से मिलना चाहती है। राजा से मिलने पर उसने कहा कि वह वही स्त्री थी जो उसके पहले दोनों बच्चों को ले गयी थी। साथ में उसने यह भी कहा कि बचपन से ही उसके ऊपर जादू पड़ा हुआ था कि तब तक उसके ऊपर का यह जादू नहीं टूटेगा जब तक कि उसको कोई ऐसी लड़की नहीं मिल जायेगी जो कहेगी "मैंने कुछ नहीं देखा।"

वह उसके दोनों बच्चों को भी ले आयी और फिर सब खुशी से शान्तिपूर्वक रहने लगे।

17 मूर्ति के प्यार में[94]

ग्रिम की सबसे अच्छी कहानियों में एक कहानी बहुत ही सुन्दर और दिल को छू जाने वाली कहानी है। वह है – "वफादार जौन"।[95] इसके टक्कर की कहानी "राम और लक्ष्मण"[96] है। मजे की बात यह है कि इटली में इस कहानी के सात रूप हैं। सबसे पहले हम इसकी शुरूआत एक पूरे रूप से करते हैं[97] – "मूर्ति के प्यार में"।

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसके दो बेटे थे। राजा का बड़ा वाला बेटा शादी नहीं करना चाहता था जबकि छोटा वाला चारों तरफ हर जगह घूम आया पर उसे उसकी पसन्द की कोई लड़की ही नहीं मिली।

अब हुआ क्या कि एक दिन वह एक शहर गया वहाँ उसने एक मूर्ति देखी तो वह उसके प्रेम में पड़ गया। उसने उस मूर्ति को खरीद लिया और अपने घर ले गया। वह मूर्ति ले जा कर उसने अपने कमरे में रख दी। वह रोज उस मूर्ति को अपने गले से लगाता और चूमता।

---

[94] In Love of Statue. (Tale No 17)

[95] "Faithful John". By Grimms. (Tale No 6)

[96] "Ram and Laxman" by Ms Mary Frere in her book "Old Deccan days" 1868. Available at the Web Site : https://en.wikisource.org/wiki/Old_Deccan_Days. Read Hindi translation of this book "Purane Deccan ke Din" by Sushma Gupta.

[97] "In Love With a Statue". By Domenico Comparetti. From Monferrato. (Tale No 29).

एक दिन यह बात उसके पिता को पता चल गयी तो उसने उससे पूछा — "यह तुम क्या कर रहे हो? अगर तुम्हें एक पत्नी चाहिये तो एक हाड़ मॉस की लड़की को लो संगमरमर की नहीं।"

लड़के ने जवाब दिया कि वह वैसी ही लड़की लेना चाहेगा जैसी कि वह मूर्ति है और किसी तरह की नहीं। उसका बड़ा भाई उन दिनों कुछ नहीं कर रहा था तो वह वैसी लड़की की खोज में बाहर चला गया।

जब वह जा रहा था तो एक शहर में उसे एक आदमी दिखायी दिया जिसके पास एक चूहा था जो नाचता था तो आदमी जैसा लगता था। उसको देख कर उसने अपने मन में सोचा कि वह उसको खरीद लेता है और अपने भाई को दे देगा। उसके दिल बहलाने के लिये यह अच्छी चीज़ है। उसने वह चूहा खरीद लिया और आगे चल दिया।

चलते चलते वह एक और शहर में पहुँचा वहॉ उसको एक चिड़िया मिली जो बिल्कुल किसी देवदूत की तरह गाती थी। उसने अपने भाई के लिये उसको भी खरीद लिया।

घूमते घूमते वह घर वापस लौटने वाला ही था और एक सड़क से गुजर रहा था कि उसको एक भिखारी दिखायी दिया जो एक दरवाजा खटखटा रहा था। एक बहुत सुन्दर लड़की खिड़की पर आयी जिसकी शक्ल उसके भाई के पास वाली मूर्ति से बहुत मिलती जुलती थी पर वह तुरन्त ही वहॉ से चली गयी।

सो उसने भिखारी से उस घर से दोबारा भीख मॉगने के लिये कहा पर भिखारी ने मना कर दिया क्योंकि उसको डर था कि कि जादूगर जो इस समय घर से बाहर गया हुआ था कहीं जल्दी ही वापस न आ जाये और उसे खा न जाये।

पर राजकुमार ने उसे इतना सारा पैसा और दूसरी चीज़ें दीं कि वह तुरन्त ही दोबारा भीख मॉगने चला गया। पर उस बार भी वह लड़की केवल पल भर के लिये ही खिड़की पर आयी और वापस चली गयी। तब राजकुमार यह चिल्लाते हुए सड़क पर घूमने लगा कि वह शीशे ठीक करता है और बेचता है।

उस लड़की की नौकरानी ने जब यह सुना तो वह अपनी मालकिन के पास गयी और उससे शीशे देखने के लिये कहा। वह वहॉ गयी पर राजकुमार ने उससे कहा — "यहॉ तो मेरे पास बहुत ही सस्ते शीशे हैं पर अगर आपको अच्छा शीशा लेना हो तो आप मेरे जहाज़ पर चलें वहॉ आपको बहुत ही बढ़िया किस्म के शीशे मिलेंगे।

जब वह वहॉ पहुॅची तो वह उसको वहॉ से ले चला। यह देख कर वह बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगी और आहें भरने लगी ताकि वह उसे उसके घर वापस छोड़ दे। पर यह तो ऐसा था जैसे दीवारों से बात करना।

जब वे खुले समुद्र में पहुॅच गये तो उन्होंने एक बहुत बड़ी काली चिड़िया की आवाज सुनी। वह चिल्ला रही थी — "सिरीयू

सिरीयू। तुम्हारा चूहा तो बहुत सुन्दर है। तुम उसको अपने भाई के पास ले जाओगे और तुम उसका सिर उसकी तरफ घुमाओगे और उसके बारे में उसे बताओगे तो तुम संगमरमर के बन जाओगे।

सिरीयू सिरीयू। तुम्हारी चिड़िया तो बहुत सुन्दर है। तुम उसको अपने भाई के पास ले जाओगे। तुम उसका सिर उसकी तरफ घुमाओगे और उसके बारे में उसे बताओगे तो तुम संगमरमर के बन जाओगे।

सिरीयू सिरीयू। तुम्हारी यह लड़की तो बहुत सुन्दर है। तुम उसको अपने भाई के पास ले जाओगे। तुम उसका सिर उसकी तरफ घुमाओगे और उसके बारे में उसे बताओगे तो तुम संगमरमर के बन जाओगे।"

अब उसे तो पता ही नहीं था कि वह इन तीनों चीज़ों के बारे में अपने भाई से क्या और कैसे कहे क्योंकि यह सब कुछ तो वह उसी के लिये ले जा रहा था। क्योंकि उसे डर था कि इनके सबके बारे उसे बता कर तो वह खुद ही संगमरमर का बन जायेगा।

फिर भी वह चला और बन्दरगाह पर उतरा। उसने चूहे को अपने छोटे भाई को दिखाया तो उसने उसे जैसे ही लेना चाहा तो उसने उसका सिर काट दिया।

उसके बाद उसने उसे चिड़िया दिखायी जो एक देवदूत की तरह गाती थी। भाई ने उसे लेना चाहा तो बड़े भाई ने फिर उसका सिर काट दिया।

फिर वह बोला — "मेरे पास इन दोंनों से भी ज़्यादा सुन्दर एक चीज़ है।" और उसने वह सुन्दर लड़की जो उसकी मूर्ति जैसी दिखायी देती थी उसके सामने कर दी।

लड़की को लाने वाले ने अभी तक कुछ कहा नहीं था सो छोटे भाई ने सोचा कि कहीं वह उस लड़की को उससे न ले ले तो उसने उसे जेल में डलवा दिया। वह वहॉ जेल में बहुत दिनों तक रहा पर उसने अपना मुँह नहीं खोला। इस वजह से उसे मरवा दिया गया।

जिस दिन उसको मरना था उससे तीन दिन पहले उसने अपने भाई से कहा कि वह उससे आ कर मिल ले।

हालॉकि छोटे भाई की उससे मिलने की कोई इच्छा तो नहीं थी पर फिर भी वह राजी हो गया। जब वह अपने बड़े भाई से मिलने गया तो बड़े भाई ने उसे बताया कि रास्ते में उसको एक काली बड़ी चिड़िया मिली थी उसने मुझसे कहा था कि अगर मैं तुम्हें वह नाचता हुआ चूहा दूँगा और उसके बारे में बताऊँगा तो में पत्थर का हो जाऊँगा।"

उसके इतना कहते है वह कमर तक पत्थर का हो गया। उसने आगे कहा — "और अगर मैंने तुम्हें गाती चिड़िया दी और उसके बारे में बताया तो भी मेरे साथ वैसा ही होगा।" यह कहते कहते वह छाती तक पत्थर का बन गया।

वह और आगे बोला — "और अगर मैंने तुम्हें यह लड़की दे दी और इसके बारे में बताया तो भी मेरे साथ यही बीतेगी।" जैसे

ही उसने अपना वाक्य खत्म किया वह सारा का सारा पत्थर का हो गया।

यह देख कर तो उसका भाई बहुत ज़ोर ज़ोर से रो पड़ा और उसको ज़िन्दा करने की कोशिश करने लगा। सब तरह के डाक्टर बुलाये गये पर कोई भी उसको ज़िन्दा न कर सका।

आखीर में एक आदमी आया जिसने कहा कि वह उसको एक शर्त पर ज़िन्दा कर सकता है कि उसे जो चाहिये वह उसे दे दिया जाये। राजा ने कहा कि वह वैसा ही करेगा जैसा वह चाहेगा।

उसने राजा के दो बच्चों का खून माँगा। पर उनकी माँ इसके लिये तैयार ही न हो। तब राजा ने एक नाच का इन्तजाम किया। और फिर जब उसकी पत्नी नाच रही थी तो उसने दोनों बच्चों को मार दिया।

उसने उनके खून से उस पत्थर की मूर्ति को नहला दिया। तुरन्त ही मूर्ति ज़िन्दा हो गयी और वह आदमी बन कर नाच में चला गया।

जब माँ ने उस आदमी को देखा तो उसे अपने बच्चों की याद आयी। वह भागी गयी और उनको अधमरा पाया तो बेहोश हो कर गिर पड़ी।

पास में खड़े लोगों ने उसको धीरज देने की कोशिश की पर जब उसने आँख खोलीं और डाक्टर को देखा तो चीख पड़ी —

"ओ नीच दूर हो जाओ मेरी नजरों से। सो वह तुम हो जिसने मेरे दोनों बच्चों को मरवाया है।"

डाक्टर बोला — "मुझे माफ करें देवी। मैंने आपके बच्चों को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया है। आप जायें और जा कर देखें कि आपके बच्चे वहाँ हैं कि नहीं।"

वह तुरन्त ही भागी हुई उस कमरे में गयी जहाँ वे थे। वे तो वहाँ पर ठीक थे और खेल रहे थे। बल्कि खूब शोर मचा रहे थे।

तब वह डाक्टर बोला — "बेटी मैं तुम्हारा पिता जादूगर हूँ जिसको तुम छोड़ आयी थीं। मैं तुम्हें सिखाना चाहता था कि बच्चे का प्यार क्या होता है।"

उसके बाद उन लोगों में सुलह हो गयी और सब शान्ति और खुशी से रहने लगे।

इसका एक रूप वेनिस में भी कहा जाता है "मीला और बूचा"।[98] उसमें ये दोनों एक राजकुमार है दूसरा उसका दोस्त है। इस कहानी में जब ये दोनों एक उजड़े किले में अपनी रात बिता रहे होते हैं तो बूचा वहाँ कोई आवाज सुनता है जो उसे मीला के साथ होने वाली आगे की घटनाओं के बारे में बताती है।

[98] "Mela and Buccia" by Teza. From Venice.

उसका घोड़ा उसको अपने ऊपर से गिरा देगा अगर बूचा उस घोड़े को नहीं मार देता तो। एक ड्रैगन उसको उसकी शादी की रात मार देगा अगर बूचा ड्रैगन को नहीं मार देता तो। और अन्त में रानी का कुत्ता उसको काट लेगा अगर बूचा उस कुत्ते को नहीं मार देता तो।

और अगर बूचा यह बात किसी को बता देता है तो वह पत्थर का बन जायेगा। इसलिये बूचा इसी तरीके से काम करता है कि राजकुमार न मरे। राजा उसको हर चीज़ के लिये माफ कर देता है पर रानी कुत्ते के लिये नहीं करती। उसके लिये बूचा को फॉसी की सजा मिलती है।

तब बूचा सारी बातें बताता है और पैर से ऊपर सारा पत्थर का हो जाता है। राजा रानी और बूचा की मॉ सबको धीरज बॅधाना मुश्किल हो गया। तब एक बुढ़िया वहॉ आती है और बताती है कि छोटे राजकुमार का खून इस मूर्ति को ज़िन्दा वापस ला सकता है।

इस तरह से वह वफादार दोस्त ज़िन्दा कर लिया जाता है और बाद में बच्चे को भी ज़िन्दा कर लिया जाता है। कहानी के इस रूप में किसी का अपहरण नहीं होता और आखिरी खतरे की भी कोई धमकी नहीं दी जाती।

ऐसी कहानी का एक रूप सियना[99] में भी पाया जाता है। वहॉ दो में से एक भाई एक ऐसी लड़की की खोज में जाता है जिसके बाल सफेद हैं। रास्ते में वह एक तोता और एक घोड़ा खरीदता है।

तोते को खरीदने का खतरा यह है कि जैसे ही कोई उसे छुएगा वह उसकी ऑखें निकाल लेगा। जो घोड़े पर चढ़ेगा वह घोड़ा उसको अपने ऊपर से नीचे फेंक देगा। और जो उस सुन्दर लड़की से शादी करेगा उसे ड्रैगन मार देगा। बाकी कहानी वैसी ही है।

फ्लोरैन्स में कहे सुने रूप में और भी कई घटनाऐं जोड़ दी गयी हैं। उसमें जो जो खतरे है जिनसे राजकुमार को बचाना है राजकुमार का वफादार नौकर उनसे उसको बचाता है — जहरीले सेब से, जहरीली पेस्ट्री से और एक शेर से जो शाही कमरे में रहता था। नौकर पहले तो पत्थर का बन जाता है पर फिर बाद में उसको ज़िन्दा कर लिया जाता है।

मैनटुआन में कहे सुने जाने वाले रूप में[100] तोता घोड़ा और दुलहिन से खतरा है। जो कोई भी उन्हें छुएगा उसे एक ड्रैगन खा जायेगा। और जो इन खतरों के बारे में बतायेगा वह पत्थर का हो जायेगा। कहानी खत्म वैसे ही होती है जैसे पहले वाली कहानियॉ होती रही हैं।

---

[99] Siena – name of a place in Italy (Gradi, "Vigilia", p 64)

[100] Fiabe mant. No 9.

इसके जैसी एक कहानी पैन्टामिरोन[101] में भी पायी जाती है। बड़ा भाई अपने छोटे भाई के लिये दुलहिन ढूँढने जाता है। वह अपने भाई के लिये एक बाज़ और एक घोड़ा खरीदता है। बाज़ उसकी ऑखें निकाल लेगा और घोड़ा उसको गिरा देगा और आखीर में उसकी शादी की रात एक ड्रैगन उसे मार डालेगा। बाकी की कहानी वैसी ही है।

इसका सातवॉ रूप इटली के बलोनी शहर में कहा सुना जाता है।[102] यह थोड़े में इस तरह है — "एक रानी के कोई बच्चा नहीं होता तो वह एक जादूगरनी के पास जाती है। वह जादूगरनी उसको एक सेब खाने के लिये देती है और कहती है कि इसको खाने से समय आने पर उसके एक बेटा होगा। उसकी एक दासी उस सेब का छिलका खा लेती है।

समय आने पर दोनों एक एक बेटे को जन्म देती हैं। दासी का बेटा सेब के छिलके के रंग की तरह कुछ गहरे लाल रंग का होता है तो उसका नाम छोटा मूर रख दिया जाता है। दोनों साथ साथ बड़े होते हैं और जब राजकुमार दुनियॉ घूमने निकलता है तो छोटा मूर भी उसके साथ जाता है।

वे लोग रात को एक जादुई किले में ठहरते हैं तो मूर वहॉ एक आवाज सुनता है कि राजकुमार एक टूर्नामैन्ट जीतेगा और उससे एक राजकुमारी से शादी कर लेगा। पर शादी की रात को एक ड्रैगन उसकी पत्नी को खा जायेगा। और जो कोई इस बात को किसी को बतायेगा तो वह पत्थर का हो जायेगा।

मूर राजकुमारी की ज़िन्दगी तो बचा लेता है पर उसको जेल में डाल दिया जाता है। और उसको तभी ज़िन्दा किया जा सकता है जब उसके शरीर पर एक जंगली आदमी के मुर्गे का खून मला जाये। राजकुमार किसी तरह से उस मुर्गे को चुरा कर लाता है और उसका खून अपने दोस्त के शरीर पर मल कर उसे ज़िन्दा कर लेता है।

इसका इटली का एक और रूप[103] मिलता है जो "पोम और पील" के नाम से मशहूर है। इसका एक और यूरोपियन रूप ग्रिम्स ने लिखा है – "वफादार जौन"।[104]

यह अध्याय हम उस तरह की कहानियों से खत्म करते हैं जिनमें आदमी राक्षसों को हरा देते हैं। इसकी सबसे ज़्यादा सादा कहानी दो कहानियों में पायी जाती है जो बहुत ही मजेदार

---

[101] Pentamerone. Night 4, Tale No 9. Entitled "Raven". You can read Pentamerone stories in the book "Pentamerone-2" translated in Hindi by Sushma Gupta.

[102] Entitled as "La Fola del Muretein" (The Story of the Little Moor). It was published by Coronedi-Berti in the "Rivista Europea", Florence, 1873.

[103] This story is given Italo Calvino's book "Italian Folktales" translated by George Martin. 1980. as "Pome and Peel". You can read this story in My book "Italy Ki Lok Kathayen-2"

[104] "Faithful Johannes". By Grimms. (Tale No 6).

हैं। ये दोनों कहानियॉ सिसिली में कही सुनी जाती हैं। इनमें से एक कहानी जियूसैप्पे पित्रे को एक आठ साल की लड़की ने सुनायी थी।[105] यह कहानी कुछ इस तरह से है —

"एक बार दो साधु थे जो एक चर्च के लिये हर साल भीख मॉगने जाया करते थे। उनमें से एक बड़ा था और एक छोटा। एक बार वे रास्ता भूल गये और एक गुफा में आ गये जिसमें एक बहुत बड़ा जानवर रहता था। उस समय वह उसमें आग जला रहा था। दोनों साधुओं को यह विश्वास ही नहीं हुआ कि वह कोई बड़ा जानवर था सो उन्होंने कहा कि चलो हम लोग अन्दर चल कर थोड़ा आराम करते हैं।

वे अन्दर गये तो उन्होंने देखा कि उस बड़े जानवर ने पहले से ही एक भेड़ मार कर रखी हुई थी और वह उसे भून रहा था। उसने **20** भेड़ मार कर और पका कर रखी हुई थीं। जानवर उनको देख कर बोला — "खाओ। इन्हें खाओ।"

साधु बोले — "हम नहीं खायेंगे। हमको भूख नहीं है।"

बड़ा जानवर बोला — "मैं कहता हूॅ तुम इसे खाओ।"

सो उन्होंने भेड़ खा ली। जब उन्होंने भेड़ खा ली तो वे लेट गये। बड़े जानवर ने गुफा का मुॅह एक बड़े पत्थर से ढक दिया और उसे बन्द कर दिया। फिर उसने एक नुकीला लोहे का टुकड़ा गर्म किया और उसे बड़े वाले साधु के गले में घुसा दिया। फिर उसने उसको भूना और दूसरे साधु से उसे खाने के लिये कहा।

वह बोला — "मेरा पेट भरा हुआ है। मैं नहीं खाऊॅगा।"

बड़ा जानवर बोला — "चलो उठो और खाओ इसे नहीं तो में तुम्हें मार दूॅगा।"

वह अभागा साधु उठ कर मेज पर बैठ गया और खाने का बहाना करने लगा। वह मॉस को फेंकता रहा। रात को साधु ने वह लोहे का टुकड़ा उठाया गर्म किया और उस बड़े जानवर की ऑखों में घुसा दिया। उसके डर के मारे वह फिर एक भेड़ की खाल में छिप गया।

बड़ा जानवर किसी तरह से गुफा के दरवाजे तक पहुॅचा वहॉ रखा पत्थर हटाया और भेड़ों को एक एक कर के बाहर निकालना शुरू किया। साधु भी इसी भेड़ के झुंड में मिल कर बाहर निकल गया और अपनी जगह त्रपानी[106] पहुॅच गया। वहॉ जा कर उसने कुछ मछियारों को अपनी कहानी सुनायी। बड़ा जानवर मछली पकड़ने गया तो अन्धा होने की वजह से एक चट्टान से टकरा गया और उसका सिर फूट गया।

इसी का दूसरा रूप सिसिली का है जो करीब करीब ऐसा ही है।[107]

---

[105] "The Little Monk". By Giuseppe Pitre. (Tale No 51).

[106] Trapani

[107] Domenico Comparetti. Tale No 70.

सो सामान्य रूप से वे कहानियॉ जिनमें सामान्य लोग बड़े साइज़ के लोगों[108] को हराते या धोखा दे देते हैं दो तरह की हैं। एक तो वे जिनमें आदमियों के पास बड़े साइज़ के लोगों के पास की ताकत से ज़्यादा अच्छी चालाकी होती है। दूसरी वे जिनमें फिर बड़े साइज़ के लोग ही बेवकूफ होते हैं। इसके आगे की कहानी "तेरहवॉ" इस दूसरी तरह की कहानी है।

[108] Translated for the word "Giants"

18 तेरहवॉ[109]

एक बार की बात है कि एक पिता था जिसके **13** लड़के थे। उनमें से उसके सबसे छोटे बेटे का नाम तेरहवॉ था। पिता को अपने बच्चों को पालने के लिये बहुत मेहनत करनी पड़ती थी। वह घास फूस इकट्ठा कर के अपना घर चलाता था।

मॉ बच्चों को जल्दी जल्दी करने के लिये कहती — "आओ जो सबसे पहले आयेगा उसको सबसे पहले घास फूस का सूप पीने को मिलेगा।"

तेरहवॉ हमेशा ही बहुत जल्दी से आ जाता और सारे सूप का एक बड़ा हिस्सा उसी को पीने को मिलता। इसकी वजह से उसके भाई उससे नफरत करते थे और हमेशा कोई न कोई ऐसी तरकीब सोचते रहते जिससे उनको उससे छुटकारा मिल जाये।

राजा ने एक बार यह मुनादी पिटवायी कि जो कोई इतना बहादुर होगा कि वह ओगरे के ओढ़ने की चादर ला कर उसे दे दे तो वह उससे बहुत सारा सोना देगा।

तेरहवें के भाई राजा के पास गये और उनसे कहा — "योर मैजेस्टी। हमारे एक छोटा भाई है

[109] Thirteenth. Tale No 18. By Giuseppe Pitre. (Tale No 33)

जिसका नाम तेरहवॉ है। उसको अपने ऊपर इतना विश्वास है कि वह कोई भी काम कर सकता है।"

राजा बोला — "उसे तुरन्त ही मेरे पास लाओ।"

वे तुरन्त ही तेरहवें को साथ ले कर वहॉ आ गये।

तेरहवें ने पूछा — "राजा साहब। मैं उसकी ओढ़ने की चादर कैसे निकालूँगा। अगर उसने मुझे देख लिया तो वह तो मुझे ही खा जायेगा।"

राजा बोला —"इससे मुझे कोई मतलब नहीं बस तुम जाओ और मुझे उसके ओढ़ने की चादर ला कर दो। मुझे मालूम है कि तुम बहुत बहादुर हो और यह बहादुरी का काम तो तुम्हें मेरे लिये करना ही पड़ेगा।"

तेरहवॉ वहॉ से चला गया और ओगरे के घर पहुँचा। ओगरे घर पर नहीं था उसकी पत्नी रसोईघर में थी। तेरहवॉ चुपके से ओगरे के घर में घुस गया और पलंग के नीचे जा कर छिप गया।

रात को ओगरे वापस आया। उसने अपना रात का खाना खाया और जा कर सो गया। सोते सोते वह बोला —

मुझे आदमी के मॉस की बू आ रही है
जहॉ कहीं भी मुझे वह मिल जायेगा मैं उसे खा जाऊँगा

ओगरे की पत्नी बोली — "शान्त हो जाओ। यहॉ कोई नहीं आया है।"

यह सुन कर ओगरे सो गया और खर्राटे मारने लगा। कुछ देर में तेरहवें ने उसकी ओढ़ी हुई चादर थोड़ी सी खींची। इससे ओगरे जाग गया और चिल्लाया "कौन है।"

तेरहवें ने बिल्ली की आवाज निकाली – म्याऊँ।

ओगरे की पत्नी ताली बजाती हुई बोली — "श श।" और फिर दोनों सो गये। उनके फिर से सो जाने के बाद तेरहवें ने उसकी चादर निकाली और उसे ले कर भाग लिया।

ओगरे ने उसे भागते हुए सुन लिया अँधेरे में पहचान भी लिया तो चिल्लाया — "तो तुम तेरहवें हो। मैं तुम्हें जानता हूँ। तुम यकीनन तेरहवें ही हो।"

कुछ समय बाद राजा ने एक और ढिंढोरा पिटवाया कि जो कोई ओगरे का घोड़ा चुरा कर लायेगा उसे सोना दिया जायेगा। सो तेरहवाँ राजा के पास पहुँचा और उससे कहा कि वह यह काम करेगा उसे एक थैला भर कर केक और रेशम की रस्सी दे दी जाये।

ये दोनों चीज़ें ले कर वह वहाँ से चल दिया। अबकी बार वह ओगरे के घर रात को पहुँचा और चुपचाप ऊपर चढ़ गया और फिर उसकी घुड़साल में जा कर छिप गया। घोड़ उसे देख कर हिनहिनाया पर उसने कुछ केक दे कर कहा "देखो न कितनी मीठी केक है। अगर तुम मेरे साथ आओगे तो मेरे मालिक तुम्हें और बहुत सारी केक देंगे।"

फिर उसने उसको दूसरी केक दी और कहा — "तुम मुझे अपने ऊपर बैठ जाने दो और फिर देखो कि हम कैसे जाते हैं।"

बस वह उस पर चढ़ गया और केक खिलाते खिलाते उसे राजा की घुड़साल ले आया।

कुछ दिन बाद राजा ने एक बार और ढिंढोरा पिटवाया कि जो कोई ओगरे का तकिया ले कर आयेगा उसको वह फिर से सोना देगा।

तेरहवॉ ने राजा से पूछा — "राजा साहब यह कैसे सम्भव है कि उसका तकिया लाया जा सके। उसके तकिये में तो बहुत सारे घुँघरू लगे हुए हैं। और आपको तो मालूम है कि ओगरे तो एक सॉस की आवाज से ही जाग जाता है।"

राजा बोला — "मैं कुछ नहीं जानता। मुझे तो उसका तकिया चाहिये।"

तेरहवॉ बेचारा चल दिया। वह ओगरे के घर पहुँच कर उसके पलंग के नीचे जा कर छिप गया। रात को तेरहवें ने तकिया निकालने के लिये अपनी बॉह आगे फैलायी पर उसके तकिये में लगे छोटे छोटे घुँघरू बज उठे।

ओगरे बोला "यह क्या हुआ।"

ओगरे की पत्नी बोली "कुछ भी तो नहीं। शायद हवा होगी।"

पर ओगरे को विश्वास ही नहीं हुआ कि वह हवा हो सकती है सो वह ऑखें बन्द कर के लेटा रहा पर उसके कान कुछ सुनने के लिये खुले रहे।

तेरहवें ने तकिया लेने के लिये अपना हाथ फिर से बढ़ाया। खटाक। ओगरे ने तुरन्त ही उसका हाथ पकड़ लिया।

वह बोला — "आज मैंने तुम्हें पकड़ लिया। ज़रा रुको। मैं तुम्हारी पहली चालाकी दूसरी चालाकी और तीसरी चालाकी के लिये तुमको रुला कर छोड़ूँगा।"

इसके बाद उसने तेरहवें को एक बैरल में बन्द किया और उसको किशमिश और अंजीर खिलाना शुरू किया।

कुछ समय बाद उसने उससे कहा "अपनी उँगली बाहर निकालो ताकि मैं यह देख सकूँ कि तुम कुछ मोटे हुए या नहीं।"

तेरहवें ने एक चूहे की पूँछ देखी तो उसने उसे बाहर निकाल दी। उसे देख कर ओगरे बोला — "अरे तुम तो अभी भी पतले से हो। और इसके अलावा तुममें से तो बदबू भी तो बहुत आ रही है। बच्चे थोड़ी किशमिश और अंजीर और खाओ और जल्दी से मोटे हो जाओ।"

कुछ दिन बाद ओगरे ने उससे फिर से उसकी उँगली बाहर निकालने के लिये कहा तो इस बार उसने एक तकली बाहर निकाल

दी। "ओ अभागे। तुम तो अभी भी उतने ही पतले हो। खाओ खाओ और जल्दी मोटे हो जाओ।"

एक महीने के बाद तेरहवें के पास ओगरे को दिखाने के लिये और कुछ नहीं था सो उसे अपनी उंगली दिखानी ही पड़ी। उसको उसकी उँगली देख कर बहुत खुशी हुई।

वह बोला — "अरे यह तो मोटा हो गया है।"

यह सुन कर उसकी पत्नी भी वहीं आ गयी। वह उससे बोला — "प्रिये जल्दी से ओवन गर्म करो – तीन दिन तीन रात तक। क्योंकि मैं अपने सब रिश्तदारों को बुलाने वाला हूँ और हम सब तेरहवें की अच्छी दावत करेंगे।"

ओगरे की पत्नी ने तीन दिन तीन रात तक गर्म किया। फिर उसने तेरहवें को बैरल से आजाद कर दिया और बोली — "आओ अब बकरे को ओवन में रखना है।"

पर तेरहवें को पता चल गया कि उसका मतलब क्या है सो वह जब ओवन के पास पहुँचा तो उसने ओगरे की पत्नी से कहा — "माँ जी। देखना ज़रा ओवन के उस कोने में वह काला काला क्या है।"

यह सुन कर ओगरे की पत्नी उसे देखने के लिये नीचे झुकी पर उसे तो कुछ दिखायी नहीं दिया। तेरहवें ने फिर कहा — "और ज़रा नीचे झुक कर देखो ताकि तुम उसे ठीक से देख सको।"

सो ओगरे की पत्नी थोड़ा और झुकी कि उसने उसको पैरों से पकड़ कर ओवन में फेंक दिया और ओवन का दरवाजा बन्द कर

दिया। जब वह भुन गयी तो उसने उसे बड़ी सावधानी से बाहर निकाला और दो हिस्सों में काट दिया। फिर उसकी टॉगों को काट कर उसके कई हिस्से कर दिये और उन्हें मेज पर रख दिया।

उसका धड़ उसका सिर और बॉहों के साथ बिस्तर में रख दिया। उसको चादर ओढ़ा दी। उसकी ठोड़ी से ले कर उसके सिर के पीछे तक उसने एक रस्सी बॉध दी।

जब ओगरे अपने मेहमानों के साथ वहॉ आया तो उसने देखा कि मेज पर खाना लगा हुआ है। तो वह अपनी पत्नी के बिस्तर तक गया और उससे पूछा — "प्रिये क्या तुम खाना नहीं खाओगी?"

तेरहवें ने जो वहीं पलंग के नीचे छिपा हुआ था उसकी पत्नी की ठोड़ी से बॅधी हुई रस्सी खींच दी जिससे उसका सिर ना में हिल गया।

"क्यों क्या बात है। क्या तुम थकी हुई हो।"

तेरहवें ने फिर से रस्सी खींची और उसका सिर हॉ में हिला दिया।

अब हुआ यह कि ओगरे के मेहमानों में से एक ने कोई चीज़ खिसकायी तो उसे लगा कि ओगरे की पत्नी तो मर चुकी है और उसका केवल आधा शरीर ही वहॉ पर है।

वह चिल्लायी — "धोखा धोखा।"

सब उसी तरफ दौड़ पड़े। इस हल्ले गुल्ले में तेरहवॉ वहॉ से निकल भागा और ओगरे का तकिया और उसकी कुछ कीमती चीज़ों को ले कर राजा के पास पहुॅच गया।

इसके बाद एक दिन राजा ने तेरहवें से कहा कि अपने बहादुरी के कारनामों को पूरा करने के लिये वह उसे ओगरे को ज़िन्दा और पूरा ला कर दे। इस पर तेरहवें ने आश्चर्य से कहा — "राजा साहब यह कैसे हो सकता है।" पर फिर वह बोला "अब मेरी समझ में आया कि यह कैसे हो सकता है।"

फिर उसने एक बहुत बड़ा और मजबूत बक्सा बनवाया और अपनी एक साधु की शक्ल बना ली। उसने एक नकली लम्बी दाढ़ी लगा ली और ओगरे के घर गया।

वहॉ पहुॅच कर उसने उसे आवाज लगा कर कहा — "क्या तुम तेरहवें को जानते हो? उस कमीने ने मेरे सरदार को मारा है। पर अगर मैं उसे पकड़ लूॅ तो मैं उसे अपने इस बक्से में बन्द कर लूॅगा।"

यह सुन कर ओगरे उसके पास आ गया और बोला — "इस मामले में तुम्हारी सहायता करना चाहता हूॅ। क्योंकि तुम्हें नहीं पता कि उसने मेरे साथ क्या क्या किया है।" और उसने उसे अपनी कहानी बतानी शुरू कर दी।

नकली साधु बोला — "पर हम क्या करें। मैं तो तेरहवें को जानता नहीं। क्या तुम उसे जानते हो?"

ओगरे बोला — "हॉ मैं जानता हूँ उसे।"

साधु बोला — "तब ओ पिता ओगरे तुम मुझे बताओ कि वह कितना लम्बा है।"

ओगरे बोला — "जितना लम्बा मैं हूँ।"

साधु बोला — "अगर ऐसा है तो तुम इस बक्से में बन्द हो कर दिखाओ ताकि मुझे यह अन्दाज लग जाये यह बक्सा उसको सँभाल पायेगा या नहीं। क्योंकि अगर यह तुमको सँभाल पायेगा तो निश्चित रूप से यह उसको भी सँभाल लेगा।"

ओगरे बोला — "यह तो अच्छा विचार है।" और वह साधु के लाये बक्से में घुस गया।

साधु बोला — "पिता ओगरे ज़रा ध्यान से देख लेना बक्से में कोई छेद तो नहीं।"

ओगरे ने चारों तरफ देख कर कहा — "नहीं इसमें तो कोई छेद नहीं है।"

"ठीक है। अब मैं ज़रा इसको बन्द कर के देख लूँ कि यह ठीक से बन्द होता भी है या नहीं और फिर तुम्हारा बोझ उठा पाता भी है या नहीं।"

बस इस बीच साधु ने बक्सा बन्द कर दिया और उसे कीलों से जड़ दिया। फिर उसे अपनी कमर पर उठाया और शहर की तरफ चल दिया।

ओगरे चिल्लाया — "बस बहुत हो गया।"

इस बीच तेरहवॉ और तेज़ तेज़ भागने लगा और साथ में ओगरे को चिढ़ाने के लिये गीत भी गाता रहा —

मैं तेरहवॉ हूँ जो तुम्हें अपनी पीठ पर ले जा रहा हूँ
मैंने तुम्हारे साथ चाल खेली है और खेल रहा हूँ मुझे तुम्हें राजा को देना है

जब वह राजा के पास पहुँचा तो राजा ने ओगरे के हाथों और पैरों में लोहे की जंजीर डाल दी और उसको ज़िन्दगी भर बहुत तंग किया। फिर राजा ने तेरहवें को बहुत सारा खजाना दिया और हमेशा उसको अपने सलाहकार के रूप में अपने पास ही रखा।

इसी कहानी के दूसरे रूप की जिसमें एक बड़े साइज़ का आदमी हीरो के द्वारा ठगा जाता है कई कहानियॉ हैं। उनमें से एक जो मिलान में कही सुनी जाती है वह अब आगे दी जाती है — "द कौबलर" यानी "चमार"।

19 चमार[110]

एक बार की बात है कि एक चमार था जो एक दिन अपना चमार का काम करते करते इतना थक गया कि उसने अपनी किस्मत कहीं और खोजने की सोची। उसने थोड़ी सी चीज़[111] खरीदी और उसे मेज पर रख दी।

इतने में वहॉ बहुत सारी मक्खियॉ आ गयीं। उसने एक पुराना जूता उठाया और उन पर दे मारा। एक ही बार में सारी मक्खियॉ मर गयीं। बाद में उसने गिना तो **500** मक्खियॉ मर गयी थीं और **400** घायल हो गयी थीं।

फिर उसने अपनी कमर में एक तलवार लटकायी एक टेढ़ा सा टोप पहना और राजा के दरबार में गया और बोला — "मैं एक बहुत बड़ा मक्खीमार हूॅ। मैंने **500** मार दीं और **400** घायल कर दीं।"

राजा बोला — "क्योंकि तुम एक योद्धा हो तो तुम इतने बहादुर तो होने ही चाहिये कि तुम उस पहाड़ पर चढ़ सको जहॉ दो जादूगर रहते हैं। जाओ और जा कर उन दोनों को मार दो। अगर तुम उन दोनों को मार दोगे तो तुम मेरी बेटी से शादी कर सकते हो।"

---

[110] The Cobbler. Tale No 19. From Milan.

[111] Cheese is a kind of processed Paneer of India.

फिर उसने उसे एक सफेद झंडा दिया जिसे उसने जब फहराने के लिये कहा जब वह उन दोनों जादूगरों को मार दे। और एक बिगुल बजाने के लिये भी कहा। उसने यह भी कहा कि वह उनको मार कर उन दोनों के सिर एक थैले में रख कर ला कर उसको दिखाये।

चमार वहॉ से चल दिया। रास्ते में एक सराय पड़ी तो लो उस सराय के मालिक और उसकी पत्नी तो वही जादूगर थे जिनको उसे मारना था। उसने उससे रहने के लिये जगह और उसको जिस किसी और चीज़ की जरूरत थी वह सब उससे मॉग लिया।

उसके बाद वह अपने कमरे में गया तो सोने से पहले उसने कमरे की छत पर एक नजर डाली तो उसने देखा कि उसके बिस्तर के ऊपर तो एक बहुत बड़ा पत्थर है। सो वह बजाय अपने बिस्तर पर जाने के एक कोने में चला गया।

जब एक खास समय आया तो जादूगर ने वह पत्थर नीचे गिरा दिया जिससे उसका पूरा पलंग ही टूट गया।

सुबह को चमार सराय के मालिक के पास गया और उससे कहा कि वह शोर की वजह से रात भर सो नहीं सका। उसने कहा कि अगर ऐसा है तो वह उसका कमरा बदल देगा। पर अगली रात भी ऐसा ही हुआ तो उसने कहा कि वह फिर उसको दूसरा कमरा दे देगा।

अगले दिन सराय का मालिक और उसकी पत्नी जंगल से लकड़ी लेने गये। जब जादूगर घर लौटा तब तक चमार ने एक हॅसिया बना लिया था।

सो जादूगर को देख कर वह बोला — "ज़रा रुको। मैं अभी आ कर तुम्हारी पीठ से यह बोझा उतरवाता हूँ।"

उसने जा कर जादूगर को अपने हॅसिये से इतनी ज़ोर से मारा कि उसका सिर धड़ से अलग कर दिया। जादूगर की पत्नी जब वहॉ आयी तो उसने उसके साथ भी ऐसा ही किया।

उसके बाद उसने राजा का दिया हुआ झंडा फहरा दिया और बिगुल बजा दिया।

जब वह राजा के दरबार में पहुँचा तो राजा ने उससे कहा — "अब तुमने दो जादूगरों को तो मार दिया है सो अब तुम मेरी बेटी से शादी कर सकते हो।"

पर चमार तो जूते में से धागा खींचने का इतना आदी हो चुका था कि वह तो सोते में भी धागा खींचता रहता था और अपनी पत्नी को मारता रहता था। इससे वह बेचारी सो ही नहीं पाती थी। सो राजा ने उसको बहुत सारा पैसा दिया और उसको उसके घर वापस भेज दिया।

इस कहानी का बड़ा रूप गौन्ज़ैनबाक की कहानी "बहादुर चमार"[112] में पाया जाता है जो सिसिली में कही सुनी जाती है। इसका शुरू का हिस्सा मिलान में कहे सुने जाने वाले रूप से बहुत मिलता जुलता है। इस कहानी में चमार जब बड़े साइज़ के आदमी[113] के पास जाता है तो वह प्लास्टर औफ पेरिस और क्रीम चीज़[114] के कुछ गोले बना कर अपनी जेब में रख कर ले जाता है। जब वह जंगल में से बड़े साइज़ के आदमी को आते हुए सुनता है तो वह एक पेड़ पर चढ़ जाता है।

पर बड़े साइज़ का आदमी उसको सूँघ लेता है और उससे नीचे आने के लिये कहता है। चमार उससे कहता है कि अगर उसने उसको नहीं छोड़ा तो वह उसकी गरदन मरोड़ देगा। और यह दिखाने के लिये कि वह कितना ताकतवर था वह प्लास्टर औफ पेरिस के गोले यह कह कर तोड़ डालता है कि वह संगमरमर के गोले तोड़ रहा है।

बड़े साइज़ का आदमी उससे डर जाता है और वह चमार को अपने साथ रहने के लिये बुला लेता है। चमार उसके साथ रहने के लिये उसके घर चला जाता है। कुछ देर बार बड़े साइज़ का आदमी उससे कुँए से एक घड़े में पानी भर कर लाने के लिये कहता है। चमार कहता है कि अगर वह उसे एक मजबूत रस्सी दे देगा तो वह उसको कुँआ वहीं ला देगा। बड़े साइज़ का आदमी यह सुन कर डर जाता है और खुद ही कुँए से घड़े में पानी भर लाता है। उसके बाद बड़े साइज़ का आदमी उससे कुछ लकड़ी काटने के लिये कहता है तो चमार इससे फिर वही कहता है कि अगर वह उसे एक मजबूत रस्सी दे दे तो वह पूरा का पूरा पेड़ वहीं ला सकता है।

तब बड़े साइज़ का आदमी उसकी ताकत का इम्तिहान लेना चाहता है कि देखते हैं कि भारी डंडे को कौन ज़्यादा देर तक ले जा सकता है। चमार बोला कि तब ज़्यादा अच्छा हो अगर वह डंडे के मोटी वाली तरफ कुछ बाँध दे। वह सोचता था कि जब वह उसको पकड़ कर एक कूद लगायेगा तब शायद वह उसको मार पाये।

जब वे रात को सोने गये तो बड़े साइज़ के आदमी ने चमार को अपने पास सुलाया पर चमार पलंग के नीचे चला गया और अपनी जगह एक काशीफल रख दिया। अब बड़े साइज़ का आदमी तो उसको मारने के चक्कर में था सो वह रात को उठा और लोहे की मोटी सी छड़ ले कर उसने चमार को मारने की कोशिश की पर वहाँ तो चमार नहीं था केवल एक काशीफल ही रखा हुआ था।

---

[112] "The Brave Shoemaker". By Laura Gonzenbach. (Tale No 41).

[113] Translated for the word "Giant"

[114] Plaster of Paris and Cream Cheese. Cream Cheese is like a spread for use on bread etc.

जब बड़े साइज़ के आदमी ने काशीफल के टुकड़े टुकड़े कर दिये तो पलंग के नीचे से चमार एक ज़ोर की आह भरी। बड़े साइज़ का आदमी यह सुन कर डर गया वह बोला — "अरे तुम्हें क्या हुआ।"

चमार बोला — "कोई खटमल मेरा कान काट गया।"

अगले दिन चमार बड़े साइज़ के आदमी से बोला कि वह एक बड़ा बर्तन भर कर मैकेरोनी पकाये और जब वे उसको खा लेंगे तब वह उसको अपना पेट खोल कर दिखायेगा कि उसने उसको बिना चबाये ही खा लिया है। उसको भी बाद में वैसे ही दिखाना पड़ेगा।

चमार ने अपने गले में एक थैला बॉध लिया और अपनी खायी हुई मैकेरोनी उसमें रखता गया। बाद में उसने उसी थैले को एक चाकू से काट कर बड़े साइज़ के आदमी को दिखा दिया। सारी मैकेरोनी ऐसी की ऐसी बिना चबायी हुई थैले में से गिर पड़ी। बड़े साइज़ के आदमी ने भी जब वही करने की कोशिश की तो वह मर गया। उसने उसका सिर काट कर अपने थैले में रख लिया और उसे ले जा कर राजा को दे दिया राजा बेटी से शादी कर ली।

20 जादूगर सर फ़िओरान्ते[115]

एक बार की बात है कि एक लकड़हारा था उसकी तीन बेटियॉ थीं। हर सुबह वे बारी बारी से अपने पिता के लिये जंगल खाना ले जाती थीं। पिता और बेटी दोनों ने एक बड़ी झाड़ी में बैठा हुआ एक बड़ा सॉप देखा।

एक दिन उसने पिता से कहा कि वह उसकी तीनों बेटियों में से किसी एक से शादी करना चाहता है। पिता ने सोचा कि वह अपनी बेटी की शादी एक सॉप से कैसे कर दे सो उसने मना कर दिया। इस पर उसने पिता को धमकी दी कि अगर उसकी किसी भी बेटी ने उसका शादी का यह प्रस्ताव स्वीकार न किया तो वह उसी को मार देगा।

पिता ने सॉप के प्रस्ताव को अपनी बेटियों को बताया तो उसकी दोनों बड़ी बेटियों ने तो शादी के लिये साफ मना कर दिया। अगर उसकी तीसरी बेटी भी मना कर देती तो उस बेचारे के पास कोई रास्ता नहीं था सिवाय मरने के।

पर उसकी तीसरी सबसे छोटी बेटी अपनी पिता की ज़िन्दगी के लिये तुरन्त ही शादी के लिये राजी हो गयी। उसने कहा कि उसको तो हमेशा ही सॉपों से बहुत प्रेम रहा है और उसके पिता ने उसके लिये जिस सॉप की बात कही है वह तो बहुत सुन्दर है।

---

[115] Sir Fiorante Magician. Tale No 20. By de Gub. (Tale No 14)

जब सॉप को यह बताया गया तो उसने खुशी से अपनी पूँछ हिलायी और अपनी पत्नी को अपने ऊपर बिठा कर वह उसको दूर एक घास के मैदान में ले गया।

वहॉ उसने अपनी पत्नी के लिये एक शानदार महल बनाया और वह खुद एक बहुत सुन्दर आदमी बन गया। उसने बताया कि वह सर फ़िओरान्ते था जो लाल और सफेद मोजे पहनता था। पर उसको बहुत दुख होगा अगर उसने उसने उसके होने या उसके नाम के बारे में किसी से भी कुछ भी कहा क्योंकि फिर वह उसको हमेशा के लिये खो देगी।

उसको पाने का फिर उसको पास एक ही रास्ता रह जायेगा लोहे के जूते लोहे का डंडा और टोप फाड़ना और अपने ऑसुओं से सात बोतल भरना।

लड़की ने वायदा किया कि वह वैसा ही करेगी। परन्तु थी तो वह एक स्त्री ही। वह अपनी बहिनों से मिलने गयी तो उनमें से एक उसके पति का नाम जानना चाहती थी। वह इतनी चालाक थी कि न चाहने पर भी छोटी लड़की को अपने पति का नाम बताना ही पड़ा।

पर जब वह लड़की अपने घर वापस गयी तो उसको न तो अपन पति ही दिखायी दिया और न ही अपना महल। उसे मालूम था कि उसको ढूँढने के लिये अब उसे तप करना पड़ेगा। वह चलती चलती रही और बिना रुके रोती भी रही।

उसने अब तक एक बोतल ऑसू बहा कर इकट्ठे कर लिये थे कि तभी उसको एक बुढ़िया मिली जिसने उसे एक अखरोट दिया कि जरूरत के समय वह उसे तोड़ सकती है और गायब हो गयी।

जब उसने चार बोतल ऑसू बहा लिये तो उसे एक और बुढ़िया मिली जिसने उसे एक हैज़लनट दिया और उससे वही कहा जो पहली बुढ़िया ने कहा था कि वह उसे जब भी उसको जरूरत पड़े तोड़ सकती है। वह भी यह कह कर गायब हो गयी।

जब उसने सात बोतल ऑसू इकट्ठे कर लिये तब उसके सामने एक तीसरी बुढ़िया प्रगट हुई तो उसने उसे एक बादाम दिया कि वह उसे जरूरत के समय कभी भी तोड़ सकती है और गायब हो गयी।

आखिर लड़की सर फ़िओरान्ते के महल के पास आ गयी। सर फिओरान्ते ने दूसरी शादी कर ली थी। तो लड़की ने सबसे पहले अखरोट तोड़ा जिसमें से एक बहुत सुन्दर पोशाक निकली जिसे उसने सर फ़िओरान्ते की दूसरी पत्नी को दिखायी। अब सर फ़िओरान्ते की पत्नी उस पोशाक को अपने लिये चाहती थी।

लड़की ने कहा कि वह उस पोशाक को अपने पास रख सकती है अगर वह उसको एक रात के लिये सर फ़िओरान्ते के कमरे में सोने दे। सर फ़िओरान्ते की दूसरी पत्नी इस बात पर राजी हो गयी पर इस बीच उसने अपने पति को थोड़ी अफीम दे दी।

रात को जब लड़की सर फ़िओरान्ते के कमरे में सोने आयी तो उसने सर फ़िओरान्ते से कहा — "ओ सफेद और लाल मोजे वाले सर फ़िओरान्ते। मैंने एक जोड़ी लोहे के जूते डंडा और टोप तोड़ दिये हैं और सात बोतल ऑसू भी बहा दिये हैं अब तो अपनी पत्नी को पहचानो।" पर वह तो अफीम के नशे में था सो उसको तो कुछ पता ही नहीं चला।

अगले दिन उसने हैज़लनट तोड़ दिया। इसमें से भी एक पोशाक निकली जो पहले दिन वाली पोशाक से भी ज़्यादा सुन्दर थी। सर फ़िओरान्ते की दूसरी पत्नी इस पोशाक को भी लेना चाहती थी। लड़की ने इस पोशाक को भी उसे उसी शर्त पर दोने का वायदा किया कि वह उस रात उसे सर फ़िओरान्ते के कमरे में सोने दे।

सर फ़िओरान्ते की दूसरी पत्नी ने उसकी यह बात मान ली और सर फ़िओरान्ते को अफीम दे कर सुला दिया। सो उस रात भी जब वह लड़की उसके कमरे में सोने गयी तो वह उसको न जगा सकी क्योंकि वह फिर से अफीम के असर में था।

तीसरे दिन सर फ़िओरान्ते की एक वफादार दासी ने उससे पूछा कि क्या उसने रात को कुछ आवाजें सुनी थीं। सर फ़िओरान्ते ने कहा "नहीं तो।" पर उस दिन उसने सोचा कि आज वह अफीम नहीं लेगा।

तीसरे दिन लड़की ने बादाम तोड़ डाला। इस बार बादाम में से पिछली दो पोशाकों से भी ज़्यादा सुन्दर एक और पोशाक निकल आयी। अब यह पोशाक भी सर फ़िओरान्ते की दूसरी पत्नी को चाहिये थी। उस लड़की ने उसे यह पोशाक भी पहली वाली शर्त पर दे दी।

इस बार सर फ़िओरान्ते की दूसरी पत्नी ने जब उसको अफीम देने की कोशिश की तो उसने उसे लेने का बहाना तो किया पर ली नहीं। जब वह लड़की सर फ़िओरान्ते के कमरे में गयी तो उसने फिर अपने पति से बात की। इस बार उसने अपनी पहली पत्नी की बात सुनी उसे गले लगाया।

अगले दिन उन दोनों ने यह महल दूसरी पत्नी के लिये छोड़ा और वे उससे और अच्छे महल में रहने चले गये।

21 क्रिस्टल का ताबूत[116]

एक बार एक आदमी था जिसकी पत्नी मर गयी थी। उसके एक बेटी थी **10–12** साल की। उसके पिता ने उसको स्कूल भेजा। क्योंकि वह इस दुनियॉ में अकेली थी वह अपनी टीचर से अपने पिता की बहुत तारीफ करती थी।

जब टीचर को यह पता चला कि इस लड़की की मॉ नहीं है तो वह उसके पिता के प्रेम में पड़ गयी। वह उस लड़की से कहती रही कि "अपने पिता से पूछना कि क्या वह मुझसे शादी करेंगे।" यह वह उससे रोज कहती रही तो आखिर लड़की ने एक दिन अपने पिता से कहा कि उसकी टीचर उससे शादी करना चाहती है।"

पिता बोला — "बेटी अगर मैं दूसरी शादी कर लूँगा तो तुम पर बहुत मुसीबत आ जायेगी।"

पर लड़की जिद करती रही। आखिर उसने एक दिन अपने पिता को अपनी टीचर से मिलने के लिये राजी कर ही लिया। टीचर ने जब उसे देखा तो वह बहुत खुश हुई दोनों ने कुछ ही दिनों में अपनी शादी पक्की कर ली।

बेचारी बच्ची। कितनी दुखी हुई वह सौतेली मॉ को पा कर। उसको इतनी बेरहम सौतेली मॉ को ला कर कितना पछताना पड़ा।

---

[116] The Cystal Casket. Tale No 21.

वह सौतेली मॉ उसको रोज बाहर छज्जे[117] पर एक बेसिल[118] के पौधे के गमले को पानी देने के लिये भेजती थी। और यह गमला एक ऐसी जगह रखा हुआ था जो उसके लिये बहुत ही खतरनाक जगह थी क्योंकि अगर वह वहॉ से गिर जाती तो सीधी नदी में जा कर गिरती।

एक दिन एक बहुत बड़ी गरुड़ चिड़िया[119] वहॉ आयी और उसने उससे पूछा — "तुम यहॉ क्या कर रही हो?"

वह बच्ची बेचारी रो रही थी क्योंकि वहॉ से उसको नदी में गिरने का डर लग रहा था।

गरुड़ चिड़िया फिर बोली — "आओ तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ। मैं तुमको यहॉ से दूर ले जाऊॅगी जहॉ तुम अपनी नयी मॉ के साथ बहुत खुश रहोगी।"

वह बच्ची उस गरुड़ की पीठ पर बैठ गयी और वह गरुड़ चिड़िया उसको ले कर उड़ चली। काफी देर तक उड़ने के बाद वे एक बहुत बड़े मैदान में पहुॅच गये जहॉ क्रिस्टल का एक बहुत बड़ा महल खड़ा था।

---

[117] Translated for the word "Terrace"

[118] Basil – Basil is English name of Tulasee (in India it is called Holy Basil). In Italy it is used as a herb in dishes.

[119] Translated for the word "Eagle Bird". See its picture above.

गरुड़ ने उस महल का दरवाजा खटखटाया — "दरवाजा खोलो ओ स्त्रियों, देखो मैं तुम लोगों के लिये एक बहुत ही सुन्दर लड़की ले कर आयी हूँ।"

जब उस महल में रहने वालों ने महल का दरवाजा खोला तो वे उस सुन्दर सी लड़की को देख कर बहुत खुश हुए। उन्होंने उसको चूमा और फिर प्यार से उसके ऊपर हाथ फेरा। इस बीच दरवाजा बन्द हो गया और सब उस महल के अन्दर शान्ति से रहे।

अब हम उस गरुड़ चिड़िया के पास चलते हैं जो यह सोच रही थी कि वह उस सौतेली माँ को चिढ़ायेगी।

सो एक दिन वह उड़ कर फिर से उसी छज्जे पर आयी। आज वहाँ वह सौतेली माँ उस बेसिल के पौधे को पानी दे रही थी।

गरुड़ ने उससे पूछा — "अरे आज तुम इस पौधे को पानी दे रही हो तुम्हारी बेटी कहाँ है?"

सौतेली माँ बोली — "उँह, हो सकता है कि वह छज्जे पर से नीचे गिर गयी हो और नदी में गिर गयी हो। मुझे दस दिन से उसके बारे में कुछ पता नहीं।"

गरुड़ बोली — "तुम कितनी बेवकूफ हो। यह देख कर कि तुम उसके साथ कितना बुरा बर्ताव कर रही थी उसको मैं अपनी परियों के पास ले गयी और वह अब वहाँ पर बहुत अच्छे से रह रही है।" यह बता कर वह गरुड़ चिड़िया वहाँ से उड़ गयी।

सौतेली मॉ को यह सुन कर बहुत गुस्सा आया और जलन भी हुई।

उसने शहर से एक जादूगरनी[120] को बुलाया और उससे कहा — "मेरी सौतेली बेटी अभी ज़िन्दा है और वह गरुड़ की कुछ परियों के घर में है। यह गरुड़ चिड़िया मेरे छज्जे पर अक्सर आती रहती है। अब तुम मेरा एक काम करो कि तुम मेरी इस सौतेली बेटी को किसी तरह से मार दो।

क्योंकि मुझे डर है कि वह किसी भी दिन यहॉ वापस आ जायेगी और फिर अगर मेरे पति को यह पता चल गया तो वह मुझे ज़िन्दा नहीं छोड़ेगा।"

वह जादूगरनी बोली — "तुम बिल्कुल चिन्ता न करो यह सब तुम मुझ पर छोड़ दो।"

जादूगरनी ने क्या किया कि उसने एक बहुत सुन्दर सी मिठाई की टोकरी बनायी जिसमें उसने एक टोटका[121] भी रख दिया।

उसमें उसने उसके पिता के नाम से एक चिट्ठी लिख कर रखी कि जैसे ही उसके पिता को यह पता चला कि वह कहॉ है वह यह मिठाई की टोकरी उसके लिये भेज रहा है। वह यह जान कर बहुत

[120] Translated for the word "Witch"

[121] Translated for the word "Charm". It may be anything and can be worn anywhere on the body. See the picture of such a charm, one of its kind, above

खुश है कि वह परियों के साथ रह रही है। वह खुद भी परियों के साथ है।

अब हम उस जादूगरनी को यहीं छोड़ते हैं जो उस लड़की के पास जाने की तैयारी कर रही है और अरमैलीना[122] के पास चलते हैं।

एक दिन परियों ने अरमैलीना से कहा — "देखो अरमैलीना, हम लोग चार दिन के लिये बाहर जा रहे हैं। इस बीच तुम अपना ख्याल ठीक से रखना। इस महल का दरवाजा तुम किसी के लिये भी नहीं खोलना क्योंकि तुम्हारी सौतेली मॉ तुम्हारे खिलाफ कुछ साजिश रच रही है।"

अरमैलीना ने उनसे वायदा किया कि वह उनके पीछे किसी के लिये भी महल का दरवाजा नहीं खोलेगी और कहा — "मेरे बारे में ज़्यादा चिन्ता न करना। मैं ठीक हूॅ और मेरी सौतेली मॉ का अब मुझसे कोई लेना देना नहीं है।"

परियॉ तो उसको यह कह कर चली गयीं पर ऐसा नहीं था जैसा कि अरमैलीना ने सोच रखा था। अगले ही दिन जब अरमैलीना महल में अकेली थी तो किसी ने महल का दरवाजा खटखटाया तो वह बोली — "जाओ यहॉ से। मैं किसी के लिये दरवाजा नहीं खोलती।"

---

[122] Ermellina – the name of the girl.

पर इस बीच दरवाजे की खटखटाहट की आवाज और तेज़ हो गयी तो उसकी उत्सुकता बढ़ गयी कि दरवाजे पर कौन हो सकता है जो इतनी ज़ोर से दरवाजा खटखटा रहा है। सो उसने खिड़की में से बाहर झॉका।

उसने क्या देखा कि बाहर उसके अपने घर की एक नौकरानी खड़ी है। असल में वह जादूगरनी उसके घर की एक नौकरानी का रूप रख कर वहॉ आयी थी।

वह बाहर से ही बोली — "ओ मेरी प्यारी अरमैलीना, तुम्हारे पिता तुम्हारे दुख में बहुत रो रहे हैं क्योंकि वह तो यह विश्वास कर ही चुके थे कि तुम मर चुकी हो। पर वह जो गरुड़ चिड़िया तुमको वहॉ से उठा कर ले गयी थी उसने उनको बताया कि तुम यहॉ परियों के पास हो।

तुम्हारे पिता ने जब तुम्हारे ज़िन्दा होने की खबर सुनी तो उनको लगा कि शायद तुमको किसी चीज़ की जरूर ही जरूरत होगी सो उन्होंने तुम्हारे लिये यह छोटी सी मिठाई की टोकरी भेजी है।"

अरमैलीना ने अभी भी दरवाजा नहीं खोला था। पर वह नौकरानी अभी भी उससे नीचे आने और दरवाजा खोलने और अपने पिता की चिट्ठी लेने के लिये जिद करती रही पर उसने फिर भी दरवाजा नहीं खोला और कहा — "मुझे कुछ नहीं चाहिये।"

पर आखिर छोटी लड़कियॉ तो मिठाई की बहुत शौकीन होती ही हैं सो फिर वह मिठाई के नाम से ललचा गयी। वह नीचे उतरी और उसने महल का दरवाजा खोल दिया।

जादूगरनी ने उसको वह मिठाई की टोकरी दे दी और उसमें से एक मिठाई निकाल कर उसको तोड़ कर उसको देते हुए कहा — "लो यह खाओ।"

इस मिठाई में उसने पहले से ही जहर मिला रखा था। सो जैसे ही अरमैलीना ने उसे खाया तो वह जादूगरनी तो वहॉ से गायब हो गयी। और उधर अरमैलीना ने बड़ी मुश्किल से दरवाजा बन्द किया होगा कि वह वहीं नीचे सीढ़ियों पर ही गिर पड़ी।

जब परियॉ घर वापस लौटीं तो उन्होंने दरवाजा खटखटाया पर किसी ने दरवाजा ही नहीं खोला तो उनको लगा कि किसी ने जरूर ही वहॉ कोई शरारत की है सो वे रोने लगीं।

तब उन परियों की सरदार ने कहा — "अगर कोई दरवाजा नहीं खोल रहा है तो हमको यह दरवाजा तोड़ देना चाहिये।"

उन्होंने ऐसा ही किया। जब दरवाजा तोड़ा गया तो उन्होंने देखा कि अरमैलीना तो सीढ़ियों पर मरी पड़ी है।

अरमैलीना की कई दोस्त जो उसको बहुत प्यार करती थीं उन्होंने अपनी सरदार से प्रार्थना की कि वह उसको ज़िन्दा कर दे पर उसने उसको ज़िन्दा करने से मना कर दिया क्योंकि उसने उसका कहा नहीं माना था।

पर उनमें से कोई न कोई उससे तब तक प्रार्थना करती ही रही जब तक वह मान नहीं गयी।

सो उसने अरमैलीना का मुँह खोला और उसके मुँह में से मिठाई का एक टुकड़ा निकाला जो उसने अभी तक निगला नहीं था। मिठाई का टुकड़ा निकालते ही वह ज़िन्दा हो गयी।

उसको ज़िन्दा देख कर उसके दोस्त तो बहुत खुश हो गये पर परियों की सरदार ने उसके इस काम को ठीक नहीं समझा तो अरमैलीना से उसने फिर से वायदा लिया कि वह ऐसा फिर नहीं करेगी।

कुछ दिन बाद एक बार फिर ऐसा मौका आया कि उन परियों को फिर से बाहर जाना पड़ा।

उनकी सरदार ने अरमैलीना से फिर कहा — "याद रखना अरमैलीना अबकी बार किसी के लिये भी दरवाजा नहीं खोलना। पहली बार तो मैंने तुमको ज़िन्दा कर दिया था मगर अबकी बार अगर ऐसा कुछ हुआ तो मैं कुछ नहीं करूँगी।"

अरमैलीना ने फिर वही कहा — "आप बिल्कुल चिन्ता न करें अबकी बार में किसी के लिये भी दरवाजा नहीं खोलूँगी।"

पर ऐसा फिर एक बार हुआ। वह गरुड़ चिड़िया अरमैलीना की सौतेली माँ का गुस्सा और जलन बढ़ाने के लिये फिर से उसके पास जा पहुँची और उसको बताया कि अरमैलीना तो अभी भी ज़िन्दा थी।

सौतेली मॉ ने उसको ऊपर से तो कह दिया कि वह गरुड़ चिड़िया उससे झूठ बोल रही थी पर फिर भी उसने उस जादूगरनी को दोबारा से बुलवाया और उससे कहा कि या तो वह उसे मार दे नहीं तो वह उसे मार देगी।

उस बुढिया को लगा कि अबकी बार तो वह पकड़ी गयी। उसने उस सौतेली मॉ से कहा कि वह अरमैलीना के लिये एक बहुत सुन्दर पोशाक खरीद दे – सबसे सुन्दर जो भी उसको मिले।

फिर उसने अरमैलीना की दर्जिन का वेश बनाया और उसकी वह पोशाक ले कर वहॉ से चल दी।

वह फिर अरमैलीना के महल पहुॅची और जा कर उसका दरवाजा खटखटाया और बोली — "खोलो खोलो दरवाजा खोलो। मैं हूॅ तुम्हारी दर्जिन।"

अरमैलीना ने खिड़की से बाहर झॉका तो उसने देखा कि बाहर तो उसकी दर्जिन खड़ी है। उसको वहॉ देख कर पहले तो वह कुछ परेशान हो गयी कि वह वहॉ कैसे आ गयी पर इतने में ही उस दर्जिन ने कहा — "मैं तुम्हारी दर्जिन हूॅ। मैं यह तुम्हारी पोशाक तुम पर नापने के लिये लायी हूॅ।"

अरमैलीना बोली — "नहीं नहीं। मैं एक बार पहले ही धोखा खा चुकी हूॅ और नहीं खा सकती।"

दर्जिन बोली — "पर मैं वह पुरानी वाली बुढ़िया नहीं हूँ। मैं तो तुम्हारी दर्जिन हूँ। तुम तो मुझे जानती हो। मैं हमेशा ही तुम्हारे लिये पोशाकें बनाती हूँ।"

इस तरह से जब वह बुढ़िया उसके पीछे पड़ी तो अरमैलीना सढ़ियों से नीचे उतरी। दर्जिन ने उसको वह पोशाक पहन कर देखने के लिये दी। वह जब उसको पहन कर उसके बटन ही लगा रही थी कि वह दर्जिन वहाँ से भाग ली।

अरमैलीना ने दरवाजा बन्द किया और सीढ़ियाँ चढ़ने लगी पर वह ऊपर तक नहीं जा पायी और बीच में ही गिर गयी और मर गयी।

परियाँ जब घर वापस लौटीं तो उन्होंने घर का दरवाजा खटखटाया पर पिछली बार की तरह से अबकी बार भी किसी ने दरवाजा नहीं खोला तो अरमैलीना की दोस्तों ने फिर से रोना शुरू कर दिया।

परियों की सरदार बोली — "मैंने तुमसे कहा था न कि वह हमें फिर से धोखा देगी। इस बार मुझे उससे कुछ लेना देना नहीं है। मैं उसके लिये कुछ नहीं कर सकती।"

उनको फिर से दरवाजा तोड़ना पड़ा। वहाँ उन्होंने देखा कि वह बेचारी लड़की वह सुन्दर सी पोशाक पहने सीढ़ियों पर बेजान पड़ी है। इस बार वे सब रोयीं क्योंकि वे सब उसको बहुत प्यार करती थीं।

अब उसके लिये कुछ नहीं किया जा सकता था। परियों की सरदार ने अपनी जादू की छड़ी हिलायी और एक सुन्दर सा ताबूत[123] लाने का हुक्म दिया। वह ताबूत चारों तरफ से हीरों से जड़ा था।

फिर उन्होंने एक सुन्दर सी सोने और फूलों की माला बनायी और उस लड़की को पहना दी और उसको ताबूत में लिटा दिया। वह ताबूत इतना कीमती और इतना सुन्दर था कि देखने में ही वह बहुत सुन्दर लगता था।

परियों की सरदार ने फिर एक बार अपनी जादू की छड़ी घुमायी तो उससे उसने एक बहुत बढ़िया घोड़ा मॅगवाया जैसा कि किसी राजा के पास भी नहीं था।

उन सबने मिल कर वह ताबूत उस घोड़े की पीठ पर रखा और शहर के चौराहे पर ले चले। परियों की सरदार ने कहा — "तुम लोग चलते ही जाना जब तक तुमसे कोई यह न कहे "रुक जाओ भगवान के लिये रुक जाओ क्योंकि मैंने अपना घोड़ा तुम्हारे लिये खो दिया है।"

अब हम परियों को यहीं छोड़ते हैं और घोड़े की तरफ चलते हैं जो अरमैलीना का ताबूत लिये हुए जा रहा था। वह घोड़ा तो अपनी पूरी गति से भागा जा रहा था। सोचो ज़रा उस समय वहॉ कौन आया? वहॉ आया एक राजा का बेटा।

---

[123] Translated for the word "Casket". See its picture above.

उसने जब इतनी तेज़ घोड़ा भागता देखा तो उसकी पीठ पर रखी चीज़ को वह पहचान नहीं सका सो उसने सोचा कि देखा जाये कि उस घोड़े की पीठ पर क्या रखा है।

सो उसने अपने घोड़े को उकसाया और उस घोड़े के पीछे पीछे भाग लिया। वह अपने घोड़े को उतना ही तेज़ भगाना चाहता था जितना कि वह घोड़ा भाग रहा था सो उसने उसको इतना मारा कि उसका घोड़ा ही मर गया।

उसने उस मरे हुए घोड़े को सड़क पर छोड़ा और वह खुद पैदल ही उसके पीछे भाग लिया। पर वह उसका पीछा भी बहुत दूर तक न कर सका और चिल्लाया — "रुक जाओ भगवान के लिये रुक जाओ क्योंकि मैंने अपना घोड़ा तुम्हारे लिये खो दिया है।"

ताबूत वाला घोड़ा उसी समय रुक गया क्योंकि यही वे शब्द थे जिन पर उसको रुकना था। जब राजकुमार ने उस बढ़िया से ताबूत में एक सुन्दर लड़की को देखा तो वह अपने घोड़े को तो भूल गया और उसके घोड़े को शहर ले गया।

राजा की मॉ को पता था कि उसका बेटा शिकार के लिये गया हुआ था पर जब उसने घोड़े के ऊपर कुछ रखा देखा तो उसकी समझ में नहीं आया कि वह क्या सोचे कि वह क्या ले कर आया था। राजा के पिता नहीं थे इसलिये इस समय वही राजा था।

वह महल पहुँचा और घोड़े पर से उस ताबूत को उतारने के लिये कहा। वह ताबूत घोड़े पर से उतार कर उसके कमरे में ले

जाया गया। वहाँ उसने अपनी माँ को बुलाया और कहा — "माँ मैं गया तो शिकार के लिये था पर मुझे तो एक पत्नी मिल गयी।"

माँ ने पूछा — "पर वह है कौन? एक गुड़िया या एक लाश?"

राजा बोला — "माँ तुम इस बात की चिन्ता न करो बस यह समझो कि यह मेरी पत्नी है।"

यह सुन कर उसकी माँ हँस पड़ी और अपने कमरे में चली गयी। नहीं तो वह बेचारी और क्या करती?

अब यह राजा न तो शिकार के लिये कहीं जाता था, न कहीं और जाता। बल्कि खाना खाने के लिये मेज पर भी नहीं जाता था और अपना खाना वहीं अपने कमरे में ही मँगवा लेता था।

यह सब चल रहा था कि किस्मत की बात कि लड़ाई छिड़ गयी और राजा को लड़ने के लिये जाना पड़ा।

उसने अपनी माँ को बुलाया और उससे कहा — "मुझे दो दासियाँ ऐसी चाहिये माँ जो मेरे भरोसे की हों जो मेरे पीछे इस ताबूत की देख भाल करें। क्योंकि मेरे आने तक अगर इस ताबूत को कुछ हुआ तो मैं उन दोनों दासियों को मरवा दूँगा।"

राजा की माँ अपने बेटे को बहुत प्यार करती थी सो बोली — "जाओ बेटा तुम जाओ। तुम बिल्कुल न डरो। इस ताबूत की देख भाल मैं खुद करूँगी।"

जाने से पहले कई दिनों तक वह रोता रहा कि वह अपना इतना कीमती खजाना किसी दूसरे के ऊपर छोड़ कर जा रहा है पर वह इसमें कुछ नहीं कर सकता था और उसको जाना ही पड़ा।

जाने के बाद अपनी चिट्ठियों में वह केवल अपनी पत्नी को अपनी मॉ की बात मानने के लिये ही लिखता रहा।

अब हम मॉ की तरफ चलते हैं तो मॉ ने अपने बेटे की बात पर कुछ ज़्यादा ध्यान नहीं दिया यहॉ तक कि उसने उस ताबूत के ऊपर जमी धूल भी साफ नहीं करवायी।

और फिर एक दिन अचानक राजा की एक चिट्ठी आयी कि राजा जीत गया और वह कुछ ही दिनों में घर लौट रहा है। तब रानी मॉ ने दासियों को बुलाया और कहा कि "हम तो बर्बाद हो गये।"

दासियों ने पूछा — "क्या हुआ रानी मॉ?"

रानी मॉ बोली — "मेरा बेटा कुछ ही दिनों में लौट रहा है और इतने दिनों में हमने उस गुड़िया की क्या देखभाल की है?"

वे बोलीं — "यह तो सच है। हम अब जा कर उसका चेहरा साफ करते हैं।"

वे उस कमरे में गयीं जहॉ वह ताबूत रखा था। वहॉ उन्होंने देखा कि उस गुड़िया का चेहरा तो धूल और मक्खियों के कणों से ढका हुआ था। उन्होंने एक स्पंज लिया और उसको पानी में भिगो कर उससे उसका चेहरा साफ करने लगीं।

उसका चेहरा साफ करते समय उस स्पंज के पानी में से पानी की कुछ बूँदें उस गुड़िया की पोशाक पर गिर पड़ीं। इससे उसकी पोशाक पर धब्बे पड़ गये। यह देख कर वे बेचारी दासियॉ रोने लगीं और रोते रोते रानी मॉ के पास सलाह के लिये गयीं कि वे अब क्या करें।

रानी मॉ बोली — "तुमको मालूम नहीं कि क्या करना चाहिये? जाओ और जल्दी से दरजिन को बुला कर लाओ और उसको इसके लिये ऐसी ही एक पोशाक इसके नाप की खरीद कर लाने को कहो। और इससे पहले कि मेरा बेटा आ जाये इसकी यह पोशाक उतार कर इसको नयी पोशाक पहना दो।"

दासियों ने ऐसा ही किया। वे कमरे में गयीं और उसकी पोशाक के बटन खोलने शुरू किये। पर जैसे ही उन्होंने उसकी पोशाक में से उसकी एक बॉह निकाली कि अरमैलीना ने ऑखें खोल दीं।

उसको ऑखें खोलते देख कर दासियॉ तो डर के मारे उछल पड़ीं। पर उनमें से एक जो बहुत हिम्मत वाली थी बोली — "मैं तो स्त्री हूँ और यह भी स्त्री है इसलिये यह मुझे खायेगी नहीं।" सो उसने उसकी वह पोशाक उतार दी।

पोशाक के उतरते ही अरमैलीना उस ताबूत में से बाहर निकल कर यह देखने के लिये चलने की कोशिश करने लगी कि वह कहॉ है।

दासियॉ उसके कदमों पर गिर पड़ीं और उससे पूछा कि वह कौन है। उस बेचारी ने तब उनको अपनी पूरी कहानी सुनायी और पूछा कि वह कहॉ है।

इस पर दासियॉ रानी मॉ को बुला लायीं। रानी मॉ ने उसको सब बता दिया और वह लड़की बेचारी यही सोच सोच कर चुपचाप रोती रही कि उन परियों ने उसके साथ क्या क्या किया।

राजा भी बस अब आने ही वाला था सो रानी मॉ ने उस गुड़िया से कहा — "इधर आओ और मेरी सबसे अच्छी वाली एक पोशाक पहन लो।" और उसने उसको एक रानी की तरह सजा दिया।

तभी उसका बेटा आ गया। सबने मिल कर उस गुड़िया को एक छोटे से कमरे में छिपा दिया ताकि कोई उसे देख न सके।

राजा बहुत खुशी खुशी आ रहा था। उसके आगे आगे जीत के बाजे बजते आ रहे थे। लोग झंडे फहराते आ रहे थे।

पर उसको इन सबमें कोई रुचि नहीं थी। वह तो बस महल में आते ही अपने उस कमरे की तरफ गुड़िया को देखने के लिये दौड़ा गया जिसमें वह ताबूत रखा छोड़ गया था।

दासियॉ उसके पैरों पर गिर पड़ीं और बोलीं — "राजा साहब राजा साहब, उस गुड़िया के शरीर में से तो इतनी बदबू आने लगी थी कि हम लोग उस महल में रह ही नहीं सकते थे इसलिये हमें मजबूरन उनको उसको दफ़न करना पड़ा।"

राजा उनका कोई बहाना सुनने को तैयार नहीं था। उसने तुरन्त ही महल के दो नौकर बुलवाये और उनसे उन दासियों के लिये फॉसी का तख्ता बनाने के लिये कहा।

उसकी मॉ ने उसको शान्त करने की बहुत कोशिश की पर वह सब बेकार। उसने बार बार कहा कि वह तो एक मरी हुई लड़की थी उसकी तुम इतनी चिन्ता क्यों करते हो पर राजा की कुछ समझ में नहीं आ रहा था।

वह चिल्ला कर बोला — "नहीं नहीं। मैं कोई वजह नहीं सुनना नहीं चाहता। वह मरी थी या ज़िन्दा थी यह सब आप सबको मेरे ऊपर छोड़ देना चाहिये था। मुझे वह चाहिये।"

आखिर जब रानी मॉ ने देखा कि वह उन दासियों के लिये फॉसी का फन्दा तैयार करवाने पर तुला हुआ था तो उसने एक छोटी सी घंटी बजायी तो एक बहुत ही सुन्दर लड़की जो अब गुड़िया नहीं रह गयी थी वहॉ आयी। वह इतनी सुन्दर थी जैसी कि पहले कभी किसी ने कोई और लड़की देखी नहीं थी।

राजा तो उसको देख कर आश्चर्यचकित रह गया बोला — "यह कौन है?"

तब रानी मॉ, दासियॉ और अरमैलीना सबने मिल कर उसको सब कुछ बताया।

वह बोला — "मॉ पहले जब यह मरी हुई थी तो मैं इसको केवल पसन्द करता था और अपनी पत्नी कहता था पर अब मैं

इसको प्यार करता हूँ और सचमुच में इसको अपनी पत्नी बनाना चाहता हूँ।"

रानी माँ बोली — "हाँ बेटा, मेरी भी यही इच्छा है कि अब तुम इससे शादी कर लो।"

कुछ दिन बाद ही उन दोनों की शादी हो गयी और दोनों खुशी खुशी रहने लगे।

22 सौतेली मॉ[124]

"सौतेली मॉ" जैसी कहानियों में यह कहानी ऐसी है जिसमें एक भाई और बहिन दोनों ही अपनी सौतेली मॉ का शिकार बनते हैं।

एक बार की बात है कि एक पति पत्नी थे जिनके दो बच्चे थे – एक लड़का और एक लड़की। इत्तफाक से पत्नी मर गयी तो पति ने दूसरी शादी कर ली। इस दूसरी पत्नी की एक बेटी थी जो केवल एक ऑख से ही देख सकती थी। पति किसान था सो वह खेत पर काम करने चला जाता था। सौतेली मॉ अपने सौतेले बच्चों को बिल्कुल नहीं देख सकती थी।

एक दिन उनसे छुटकारा पाने के लिये उसने एक रोटी बेक की और उसको ले कर उनको उनके पिता के पास भेज दिया। पर उसने उनको गलत खेत की तरफ भेज दिया ताकि वे खो जायें।

बच्चे जब पहाड़ पर पहुॅचे तो उन्होंने अपने पिता को पुकारना शुरू किया पर किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। लड़की थोड़ा जादू जानती थी। चलते चलते वे एक स्रोत के पास आ गये। भाई को प्यास लगी थी वह उसमें से पानी पीना चाहता था तो लड़की बोली "भैया इसमें से पानी मत पियो नहीं तो तुम एक गधा बन जाओगे।"

[124] The Stepmother. Tale No 22. By Giuseppe Pitre. (Tale No 283)

वे फिर आगे चले तो उनको एक और स्रोत मिला। भाई को ज़ोर की प्यास लगी थी वह वहॉ पानी पीना चाहता था पर बहिन ने कहा कि वह यहॉ भी पानी न पिये क्योंकि अगर यहॉ पानी पियेगा तो वह एक बछड़ा बन जायेगा।

पर लड़के को बहुत प्यास लगी थी सो उसने उस स्रोत से पानी पी लिया। जैसे ही उसने पानी पिया वह एक सुनहरे सींगों वाला बछड़ा बन गया। अब लड़की उसको साथ ले कर आगे चली। वे समुद्र के किनारे आ गये।

वहॉ उनको एक बहुत सुन्दर महल दिखायी दिया जो एक राजकुमार का था। जब राजकुमार ने लड़की को देखा और देखा कि वह कितनी सुन्दर थी तो उसने उससे शादी कर ली। बाद में उसने उस बछड़े के बारे में पूछा तो उसने बताया कि क्योंकि उसने बचपन से पाला है इसलिये वह उसे बहुत चाहती है।

अब हम इन बच्चों के पिता के पास चलते हैं। पिता अपने बच्चों के गायब हो जाने से बहुत दुखी हुआ। अपना मन बहलाने के लिये वह सौंफ़[125] इकट्ठी करने चला गया। चलते चलते वह भी उसी महल के पास आ गया जहॉ उसकी बेटी ने राजकुमार से शादी कर ली थी।

[125] Translated for the word “Fennel”

जब वह बाहर घूम रहा था तो उसकी बेटी से महल की खिड़की से झॉक रही थी। उसने अपने पिता को देखा तो उसने वहीं से पुकारा — "ऊपर आओ दोस्त।"[126]

जब वह आ गया तो उसने पूछा — "दोस्त तुमने मुझे पहचाना नहीं।"

पिता बोला — "मुझे अफसोस है मैंने तुम्हें नहीं पहचाना।"

लड़की बोली — "मैं आपकी बेटी हूॅ जिसे आपने समझ लिया था कि वह खो गयी है।"

वह अपने पिता के पैरों पर गिर पड़ी और बोली — "पिता जी मुझे माफ करें। मैं इत्तफाक से इस महल में आ गयी। यह महल एक राजकुमार का है उसने मुझसे शादी कर ली।"

यह सुन कर पिता को बहुत खुशी हुई और सन्तोष हुआ कि उसकी खोयी हुई बेटी मिल गयी थी और वह भी अपनी ज़िन्दगी ठीक से बिता रही थी।

वह आगे बोली — "पिता जी यह सौंफ का थैला आप यहॉ खाली कर दीजिये। मैं अब इस थैले को आपके लिये सोने से भर दूॅगी।" फिर उसने उससे विनती की कि वह अपनी पत्नी और एक ऑख वाली बेटी को भी यहॉ ले आये।

---

[126] I have translated this sentence literally just to show my surprise as how can a daughter call her father "a friend", and not only once but again too inspite of recognizing him fully well that he was her father.

पिता सोने से भरा थैला ले कर घर लौटा तो उसकी पत्नी डर गयी। उसने पूछा — "यह पैसा आपको किसने दिया?"

पिता बोला — "प्रिये आज मुझे मेरी बेटी मिल गयी। अब वह एक राजा की पत्नी है। उसी ने मेरा यह थैला सोने से भरा है।"

यह सुन कर कि उसकी सौतेली बेटी अभी ज़िन्दा है सौतेली माँ तो बजाय खुश होने के बहुत गुस्सा हो गयी। फिर भी उसने अपने पति से कहा — "मैं अपनी बेटी को ले कर वहाँ जरूर जाऊँगी।"

सो पति पत्नी और उनकी एक आँख वाली बेटी सभी पति की बेटी के पास गये। लड़की ने अपनी सौतेली माँ और बहिन का बहुत प्यार से स्वागत किया।

पर एक दिन जब राजा घर में नहीं था तो उसने क्या किया। उसने अपनी सौतेली बेटी को महल की खिड़की से बाहर समुद्र में फेंक दिया।

फिर उसने अपनी एक आँख वाली बेटी को अपनी सौतेली बेटी के कपड़े पहना कर उससे कहा — "जब राजा आये और वह तुम्हें रोता हुआ पाये तो तुम उससे कहना "उस छोटे बछड़े ने अपने सींग मार कर मेरी एक आँख फोड़ दी है। अब मेरी एक ही आँख रह गयी है।" यह कह कर सौतेली माँ अपने घर लौट गयी।

शाम को जब राजा आया तो उसने उस लड़की से पूछा कि "तुम क्यों रही हो।"

उस लड़की ने वही जवाब दे दिया जो उसको उसकी मॉ ने सिखाया था – "उस छोटे बछड़े ने अपना सींग मार कर मेरी एक ऑख फोड़ दी है।"

राजा तुरन्त ही चिल्ला कर बोला — "जाओ कोई कसाई को बुलाओ और उस बछड़े को कटवा दो।"

जब बछड़े ने यह सुना कि वे लोग उसे कटवाने जा रहे हैं वह बाहर छज्जे पर गया और समुद्र की तरफ मुॅह कर के अपनी बहिन से बोला —

मेरे लिये पानी गर्म हो रहा है और चाकू तेज़ हो रहे हैं

उसकी बहिन ने समुद्र में से जवाब दिया —

ओ मेरे भैया मैं तुम्हारे लिये कुछ नहीं कर सकती
क्योंकि मैं एक बहुत बड़ी मछली के मुॅह में हूॅ

जब राजा ने बछड़े को ये शब्द कहते सुना तो उसने खिड़की के बाहर समुद्र की तरफ देखा। उसने देखा कि उसकी पत्नी समुद्र में है तो उसने दो नाविकों को उसको वहॉ से निकाल लाने के लिये भेजा। वे नाविक उसको बाहर ले आये। राजा ने उसका इलाज करा कर उसे ठीक किया।

एक ऑख वाली लड़की को उसने मार कर छोटे छोटे टुकड़ों कटवा दिया। फिर उसे टूनी मछली की तरह से नमक लगवा कर उसकी मॉ के पास भिजवा दिया।

जब लड़की के पिता को यह सब पता चला तो उसने उसे छोड़ दिया और अपनी बेटी के पास रहने के लिये चला गया।

23 पानी और नमक[127]

एक दूसरी तरह की कहानी को यहॉ नहीं छोड़ा जा सकता जो "सतायी हुई लड़की"[128] जैसी कहानी है। यह कहानी शेक्सपीयर की "किंग लीर" से मिलती जुलती है। इसमें एक पिता अपनी सबसे छोटी बेटी को इसलिये सजा देता है क्योंकि वह यह समझता है कि वह उसे अपनी बड़ी बहिनों के जितना प्यार नहीं करती। इसका एक सबसे अच्छा उदाहरण है जियूसैप्पै पित्रे की कहानी "पानी और नमक"।

अब एक बहुत ही बढ़िया कहानी आपके सामने प्रस्तुत की जाती है। एक बार की बात है एक राजा था जिसके तीन बेटियॉ थीं। एक बार वे सब खाने की मेज पर बैठे हुए थे कि राजा बोला — "चलो देखते हैं कि तुम तीनों में से मुझे सबसे ज़्या प्यार कौन करता है।"

सबसे बड़ी बेटी बोली — "पिता जी मैं आपको अपनी ऑखों जितना प्यार करती हूॅ।"

दूसरी बेटी बोली — "पिता जी मैं आपको अपने दिल जितना प्यार करती हूॅ।"

राजा ने अपनी छोटी वाली बेटी से पूछा — "और तुम बेटी।"

तीसरी सबसे छोटी बेटी बोली — "पिता जी मैं आपको पानी और नमक जितना प्यार करती हूॅ।"

---

[127] Water and Salt. Tale No 23. By Giuseppe Pitre. (Tale No 10).

[128] "Persecuted Maiden"

राजा को यह सुन कर बहुत आश्चर्य हुआ। उसने पूछा — "क्या तुम मुझे केवल पानी और नमक जितना ही प्यार करती हो। अरे कोई सजा देने वालों को बुलाओ मैं इसे अभी इसी समय मरवाना चाहता हूँ।"

उसकी बड़ी बहिनों ने सजा देने वालों को एक कुत्ता दे दिया और कहा कि वे इस कुत्ते को मार दें राजा के लिये उनकी बहिन का एक कपड़ा ला दें और उनकी बहिन को सुरक्षित रूप से एक गुफा में छोड़ दें।

उन्होंने ऐसा ही किया। उन्होंने कुत्ते का मारा उसकी जीभ और राजकुमारी का एक कपड़ा ला कर राजा को दे दिया। उन्होंने कहा — "यह लीजिये योर मैजेस्टी यह राजकुमारी जी की जीभ है और यह उनका कपड़ा।" राजा ने उनको इनाम दे कर विदा किया।

यह अभागी राजकुमारी इत्तफाक से एक जादूगर को मिल गयी जो उसको अपने घर ले गया। उसका घर शाही महल के सामने ही था। एक दिन राजा के बेटे ने उस देखा तो वह उससे बहुत प्यार करने लगा। जल्दी ही उनकी शादी पक्की हो गयी।

जादूगर ने राजकुमारी से कहा कि शादी के पहले दिन उसे जादूगर को मार देना चाहिये। साथ में उसने यह भी कहा उसको तीन राजाओं को जरूर बुलाना चाहिये। सबसे पहले तो अपने पिता को बुलवाना और तुमको अपने नौकरों से यह कह देना चाहिये कि वह तुम्हारे पिता को पानी और नमक न दें।

अब हम इस लड़की के पिता की तरफ चलते हैं। जितना समय बीतता गया उसका प्यार अपनी छोटी बेटी की तरफ उतना ही ज़्यादा बढ़ता गया और इतना बढ़ा कि वह उसके दुख में बीमार पड़ गया।

जब उसने इस लड़की की शादी के बुलावे के बारे में सुना तो उसने सोचा "मैं अपनी बेटी के लिये इतना प्रेम लिये हुए इस शादी में कैसे जाऊँ। पर अगर मैं नहीं जाता तो इस राजा को बुरा लगेगा और फिर यह मुझ पर किसी समय भी हमला कर देगा। सो उसने यह बुलावा स्वीकार कर लिया और शादी में चला गया।

उधर शादी के एक दिन पहले उन्होंने जादूगर को मार दिया। उन्होंने उसके चार हिस्से किये और उसका एक एक हिस्सा चारों कमरों में रख दिया। उसका खून उन्होंने सीढ़ियों पर और कमरे में चारों तरफ बिखेर दिया। उसका खून और मॉस सोना और जवाहरात बन गये।

जब तीनों राजा वहॉ आये और उन्होंने सोने की सीढ़ियॉ देखीं तो वे उन पर पैर रखने में हिचकिचाने लगे। राजकुमार बोला — "आप चिन्ता न करें आप ऊपर चलें यह तो कुछ भी नहीं है।"

उस शाम उन लोगों की शादी हो गयी। अगले दिन शादी की दावत थी। राजकुमार ने अपने नौकरों को हुक्म दिया कि राजा को पानी और नमक न परोसा जाये। वे सब मेज पर बैठे। नयी रानी अपने पिता के पास बैठी थी पर राजा खाना नहीं खा रहा था।

उसकी बेटी ने पूछा "हिज़ मैंजेस्टी खाना नहीं खा रहे। क्यों। क्या आपको खाना अच्छा नहीं लग रहा?"

"वाह क्या खाना है। खाना बहुत अच्छा है।"

"फिर आप खाना क्यों नहीं खा रहे।"

"मुझे कुछ अच्छा नहीं लग रहा है।"

दुलहा और दुलहिन दोनों ने उसको कुछ मॉस खिलाने की कोशिश की पर उससे खाना नहीं खाया गया। वह केवल बकरी की तरह उस खाने को चबाता रहा जैसे बिना नमक के खाना उसके गले से ही नहीं उतर रहा हो।

जब सब खाना का चुके तो सब आपस में बातें करने लगे। राजा ने उनको अपनी बेटी के बारे में बताया। उसकी बेटी ने उससे पूछा कि क्या वह अभी भी अपनी बेटी को पहचान सकता था।

कह कर वह वहॉ से बाहर चली गयी और अपनी वही पोशाक पहन कर आ गयी जिसको पहन कर उसने मरने के लिये जाते समय अपना महल छोड़ा था।

उसने कहा — "पिता जी आपने मुझे केवल इस बात पर मारे जाने का हुक्म दे दिया था कि मैंने आपसे यह कहा था कि मैं आपको पानी और नमक जितना प्यार करती हूॅ। अब आप देखिये कि बिना पानी और नमक के खाना कितना मुश्किल है।"

उसके पिता के मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला बस उसने अपनी बेटी को गले लगा लिया और उससे माफी माँगी। उसके बाद वे सब सन्तुष्ट और खुश रहे और हम लोग अभी भी ऐसे ही हैं।

24 तीन सन्तरों से प्यार[129]

एक बार की बात है कि एक राजा और एक रानी थे। उनके एक बेटा था जो कम बुद्धि वाला था। रानी इस बात से बहुत दुखी थी। उसने सोचा कि वह लौर्ड की शरण में जायेगी और उनसे सलाह लेगी कि वह ऐसे बेटे के साथ क्या करे।

लौर्ड ने कहा कि उसको अपने बेटे को किसी तरह हॅसाना चाहिये। वह बोली — "लौर्ड। मेरे पास तो केवल एक डिब्बा तेल है और वह भी केवल मेरे लिये है।"

लौर्ड बोले — "तुम इस तेल को दान में दे दो। इससे बहुत सारे लोग आयेंगे। कुछ की कमर झुकी होगी तो कुछ सीधे चल रहे होंगे तो कुछ के कूबड़ भी हो सकता है। क्या पता इनमें से किसी को देख कर तुम्हारे बेटे को हॅसी आ जाये।"

सो रानी ने यह ढिंढोरा पिटवाया कि उसके पास एक डिब्बा तेल है। कोई भी आ कर उसमें से थोड़ा थोड़ा तेल ले सकता है। यह सुन कर सचमुच में बहुत सारे लोग तेल लेने पहुॅच गये। सबने मिल कर तेल का वह डिब्बा खत्म कर दिया।

अन्त में एक जादूगरनी आयी उसने भी रानी से थोड़े से तेल की मॉग की। रानी बोली — "आह मुझे अफसोस है कि मेरा सारा तेल तो चला गया और मेरे पास अब और तेल नहीं है।"

---

[129] The Love of the Three Oranges. Tale No 24.

रानी बहुत दुखी और गुस्सा थी कि यह सब करने के बाद भी उसका बेटा अभी तक हॅसा नहीं था। जादूगरनी फिर बोली — "ज़रा मुझे अपना डिब्बा तो दिखाओ।"

रानी ने अपना डिब्बा खोला तो बुढ़िया उसके अन्दर घुस गयी और जब वह बाहर निकली तो सारी तेल में भीगी हुई थी। यह देख कर रानी का बेटा हॅस पड़ा। वह हॅसता रहा हॅसता रहा और बहुत देर तक हॅसता रहा।

यह देख कर बुढ़िया बोली — "भगवान करे तुम कभी खुश न रहो जब तक तुम तीन सन्तरों का प्यार न पा जाओ।"

बेटा यह सुन कर और भी इच्छुक हो गया वह अपनी मॉ से बोला — "मॉ मुझे अब कभी शान्ति नहीं मिलेगी जब तक मुझे तीन सन्तरों का प्यार न मिल जाये।"

रानी बोली — "पर बेटा तुम जाओगे कैसे और तीन सन्तरों का प्यार पाओगे कैसे।"

पर वह नहीं माना। उसने अपना घोड़ा उठाया और उस पर सवार हो कर चल दिया। वह चलता रहा वह चलता रहा जब तक कि वह एक बहुत बड़े फाटक के सामने नहीं आ गया। उसने दरवाजा खटखटाया तो अन्दर से किसी ने पूछा "कौन है।"

उसने जवाब दिया — "भगवान की बनायी एक आत्मा।"

अन्दर वाली आवाज ने कहा — "इतने सालों में आज तक किसी ने मेरा यह दरवाजा नहीं खटखटाया।"

लड़के ने फिर वही कहा — "दरवाजा खोलिये मैं भगवान की बनायी एक आत्मा हूँ।"

तब एक बूढ़ा आया और उसने दरवाजा खोला। उसकी पलकें इतनी लम्बी थीं कि वह नीचे जमीन को छू रही थीं। बूढ़ा बोला — "बेटा वे छोटे वाले कॉटे उठा कर मेरी इन पलकों को ज़रा ऊपर तो उठाओ।"

राजकुमार ने वैसा ही किया तो बूढ़े ने पूछा — "तुम इस तरफ कहाँ जा रहे हो।"

राजकुमार बोला — "मैं इस तरफ तीन सन्तरों का प्यार पाने जा रहा हूँ।"

बूढ़ा बोला — "कितने लोग चले गये पर इधर लौट कर कोई नहीं आया। क्या तुम्हारी भी यही इच्छा है कि तुम भी वापस न लौटो। मेरे बच्चे। लो तुम ये टहनियाँ ले जाओ। तुमको कुछ जादूगरनियाँ मिलेंगी जो अपने हाथों से अपना ओवन साफ कर रही होंगी। ये टहनियाँ तुम उनको दे देना तो वे तुम्हें वहाँ से जाने देंगी।"

राजकुमार ने धन्यवाद दे कर उससे वे टहनियाँ ले लीं और अपने घोड़े पर सवार हो कर आगे चल दिया। वह काफी देर तक चलता रहा कि आगे चल कर उसको बहुत बड़े साइज़ की जादूगरनियाँ बैठी अपने हाथों से ओवन साफ करती दिखायी दीं। उसने वे डंडियाँ उनकी तरफ फेंक दीं और उन्होंने उसे जाने दिया।

वह आगे चलता रहा कि अबकी बार वह पहले दरवाजे से भी एक बड़े दरवाजे के पास आया। यहॉ भी पहले जैसा ही हुआ। यहॉ वाले बूढ़े ने कहा — "अब तुम जा ही रहे हो तो तुम रास्ते के लिये यह रस्सी लेते जाओ। रास्ते में तुम्हें कुछ जादूगरनियॉ अपने बालों से पानी खींचती हुई मिलेंगी। तुम उनको यह रस्सी दे देना तो वे तुम्हें वहॉ से जाने देंगी।"

राजकुमार ने उसे भी धन्यवाद दिया रस्सी ली और अपने घोड़े पर सवार हो कर चल दिया। आगे जा कर वैसा ही हुआ जैसा कि बूढ़े ने कहा था।

उससे और आगे चला तो वे एक तीसरे दरवाजे के पास आ गया जो पिछले दोनों दरवाजों से भी बड़ा था। इसमें भी एक बूढ़ा था जिसकी पलकें पिछले दोनों बूढ़ों की पलकों से भी ज़्यादा लम्बी थीं।

इस बूढ़े ने उसको एक थैला भर कर रोटी दी और एक मोमबत्ती दी और कहा — "लो यह रोटी लो और यह मोमबत्ती लो। आगे जा कर तुम्हें कुछ बड़े बड़े कुत्ते मिलेंगे तो तुम उनके लिये यह रोटी फेंक देना तो वे तुम्हें वहॉ से गुजर जाने देंगे।

वहॉ से आगे चल कर एक और बड़ा दरवाजा आयेगा जिस पर कई जंग लगे ताले लगे होंगे। वहॉ तुमको एक मीनार दिखायी देगी और उसके अन्दर होगा तीन सन्तरों का प्यार।

जब तुम उस जगह पहुँच जाओ तब तुम इस मोमबत्ती से उन जंग लगे तालों को चिकना कर लेना। और जब तुम मीनार पर चढ़ जाओगे तब तुमको वहाँ एक कील से टँगे सन्तरे दिखायी देंगे।

वहाँ तुमको एक बुढ़िया भी दिखायी देगी जिसका एक राक्षस[130] बेटा है। उसने उन सारे ईसाइयों को खा लिया है जो भी वहाँ आते हैं। सो तुम्हें उससे बहुत सावधान रहना है।"

राजकुमार ने सन्तुष्ट हो कर रोटी का थैला लिया और मोमबत्ती ली और अपने घोड़े पर सवार हो कर चल दिया। काफी देर तक चलने के बाद उसने देखा कि दूर तीन बहुत बड़े कुत्ते मुँह खोले उसको खाने के लिये तैयार बैठे हैं। उसने उनके सामने वह रोटी फेंक दी। कुत्ते उसे खाने में लग गये सो उन्होंने उसे जाने दिया।

चलते चलते वह एक दूसरे दरवाजे के पास आया जहाँ कई जंग वाले ताले लगे थे। वह अपने घोड़े से नीचे उतरा घोड़े को दरवाजे से बाँधा और तालों में मोमबत्ती से उनको चिकना शुरू कर दिया। काफी आवाज करने के बाद वे खुल गये।

राजकुमार उसके अन्दर घुसा तो उसको एक मीनार दिखायी दी। वह उसमें ऊपर चला गया। वहाँ पहुँच कर उसको एक बुढ़िया मिली।

---

[130] Translated for the word "Ogre". See his picture above.

उसने राजकुमार से पूछा — "बेटा तुम कहॉ जा रहे हो। तुम यहॉ किसलिये आये हो। मेरा एक बेटा है जो एक राक्षस है। जब वह तुम्हें देखेगा तो वह तुम्हें जरूर ही खा जायेगा।"

जब वह यह सब राजुकमार से कह रही थी कि तभी उसका बेटा आ गया। बुढ़िया ने राजकुमार को पलंग के नीचे छिपा दिया पर उसके बेटे ने भॉप लिया कि घर में कहीं कोई आदमी था। सो उसने चिल्लाना शुरू किया —

गीं गीं मुझे एक ईसाई की खुशबू आ रही है
गीं गीं मुझे एक ईसाई की खुशबू आ रही है

उसकी मॉ ने कहा — "बेटा यहॉ कोई नहीं है।"

पर वह वही दोहराता रहा। तब उसकी मॉ ने उसको शान्त करने के लिये मॉस का एक टुकड़ा दिया जिसे उसने एक पागल आदमी की तरह खा लिया।

जब वह अपने बेटे को खिला रही थी तो उसने राजकुमार को तीन सन्तरे दिये — "मेरे बेटे। तुम इन्हें लो और तुरन्त ही इन्हें ले कर यहॉ से भाग जाओ क्योंकि जैसे ही इसका खाना बन्द हुआ तो यह तुमको फिर से ढूँढने लगेगा और तुम्हारे मिलते ही तुम्हें खा जायेगा।"

तीनों सन्तरे देने के तुरन्त बाद ही उसको पछतावा हुआ तो उसको यही पता नहीं था कि वह क्या करे सो उसने चिल्लाना शुरू किया — "सीढ़ियों इसको नीचे फेंक दो। तालो इसको कुचल दो।"

वे बोले — "हम यह नहीं कर सकते क्योंकि इसने हमें मोम लगाया है।"

उसने कहा — "कुत्तों इसको खा जाओ।"

कुत्ते बोले — "हम इसको नहीं खा सकते इसने तो हमें रोटी खिलायी है।"

उसके बाद राजकुमार अपने घोड़े पर सवार हुआ और वहॉ से भाग लिया।

बुढ़िया फिर चिल्लायी — "जादूगरनी इसको बॉध लो।"

जादूगरनी बोली — "हम इसे नहीं बॉध सकते क्योंकि इसने हमें रस्सी दी है।"

बुढ़िया बोली — "जादूगरनी इसको मार दो।"

जादूगरनी बोली — "नहीं हम नहीं मार सकते क्योंकि इसने मुझे टहनियॉ दी हैं।"

इस तरह राजकुमार सबसे बचता हुआ भागता रहा। रास्ते में वह बहुत थक गया और उसे प्यास भी लग आयी तो उसने सोचा कि वह क्या करे। उसने एक सन्तरा निकाला और उसे तोड़ दिया। लो उसमें से तो एक बहुत सुन्दर लड़की निकल आयी और बोली "मुझे बहुत प्यास लगी है। मुझे पानी दो।"

राजकुमार बोला — "मेरे पास तो पानी नहीं है।"

वह बोली — "ऐसे तो मैं मर जाऊँगी।"

और वह तुरन्त ही मर गयी।

राजकुमार ने वह सन्तरा फेंक दिया और अपना चलना जारी रखा पर उसे प्यास फिर से लग आयी। निराश हो कर उसने दूसरा सन्तरा भी तोड़ दिया। इस सन्तरे में से भी एक बहुत सुन्दर लड़की निकल आयी जो पहली लड़की से भी ज़्यादा सुन्दर थी।

इस लड़की ने भी पानी माँगा पर राजकुमार के पास तो पानी था ही नहीं सो वह उसको पानी नहीं दे सका और पहली लड़की की तरह से यह लड़की भी मर गयी।

अब केवल एक सन्तरा बच गया था। उसने सोचा कि अबकी बार इस लड़की के साथ वह ऐसा नहीं होने देगा। वह उसको वहीं तोड़ेगा जहाँ पानी होगा। उसको फिर से प्यास लग आयी थी पर वह पानी की इन्तजार में अपने आपको रोके रहा।

कुछ दूर चलने के बाद एक कुँआ आया। वहाँ उसने वह तीसरा सन्तरा तोड़ा। उसमें से भी एक लड़की निकली जो पिछली दोनों लड़कियों से भी ज़्यादा सुन्दर थी। जब उसने पानी माँगा तो उसने उसे पानी दिया और उसे अपने घोड़े पर बिठा कर अपने राज्य ले चला।

जब वह अपने घर के पास पहुँच गया तो बोला — "मैं तुम्हें यहाँ इन दो पेड़ों के नीचे छोड़े जाता हूँ। उन दोनों में से एक पेड़

की पत्तियॉ सोने की थीं और फल चॉदी के थे और दूसरे पेड़ की पत्तियॉ चॉदी की थीं और फल सोने के थे।

उसने उसके लिये एक बहुत सुन्दर काउच बनाया और उसको पेड़ों के नीचे उस पर बिठा कर उससे कहा — "मैं अब अपने घर जाता हूॅ और जा कर अपनी मॉ को बताता हूॅ कि मैंने तुम्हें पा लिया है। फिर मैं तुम्हें यहॉ से ले जाऊॅगा और हम दोनों शादी कर लेंगे।"

कह कर वह अपने घोड़े पर चढ़ा और अपने घर चला गया। जब वह अपने घर चला गया तो एक बूढ़ी जादूगरनी वहॉ आयी और उससे बोली — "आ बेटी मैं तेरे बालों में कंघी कर दूॅ।"

लड़की बोली — "नहीं मेरी जैसी लड़की को इसकी कोई इच्छा नहीं है।"

पर जादूगरनी ने फिर कहा — "नहीं नहीं आ बेटी मैं तेरे बालों में कंघी कर दूॅ।"

जब बुढ़िया ने कई बार कहा तो थक कर उसने उसे हॉ कर दी। अब उस बुढ़िया ने उसके सिर में क्या किया कि उसने एक पिन उसकी दोनों कनपटियों के आर पार निकाल दी।

ऐसा करते ही लड़की एक फाख्ता में बदल गयी। अब उस नीच जादूगरनी ने क्या किया कि वह उस लड़की के काउच पर लेट गयी और राजकुमार का इन्तजार करने लगी। लड़की तो पहले ही फाख्ता बन

कर उड़ गयी थी।

इस बीच राजकुमार घर पहुँचा तो माँ ने कहा — "बेटे तुम इतने दिनों तक कहाँ थे। तुमने इतना सारा समय कहाँ और कैसे गुजारा।"

राजकुमार बोला — "ओह माँ मैं अपने लिये कितनी सुन्दर पत्नी ले कर आया हूँ।"

"पर बेटे तुम उसे छोड़ कहाँ आये हो।"

"माँ मैं उसे दो पेड़ों के बीच में छोड़ कर आया हूँ। जिनमें से एक पेड़ की पत्तियाँ चाँदी की हैं और फल सोने के हैं और दूसरे पेड़ की पत्तियाँ सोने की हैं और फल चाँदी की हैं।"

तब रानी ने एक बहुत बड़ी शानदार दावत का इन्तजाम किया बहुत सारी गाड़ियाँ तैयार करवायीं जो उस लड़की को लेने जातीं। जिनको घोड़ों पर बैठना था वे सब अपने अपने घोड़ों पर चढ़े। जिनको गाड़ियों में बैठना था वे सब अपनी अपनी गाड़ियों में बैठे और लड़की को लाने के लिये चल दिये।

लेकिन जब सब वहाँ पहुँचे तो उन्होंने देखा कि वहाँ तो एक बहुत ही बदसूरत झुर्री पड़ी स्त्री काउच पर बैठी हुई थी और एक सफेद फाख्ता उन पेड़ों के ऊपर बैठी हुई थी।

बेचारा राजकुमार। तुम उसकी हालत समझ सकते हो। वह अपने दिल में बहुत दुखी था और उस बदसूरत स्त्री को देख कर तो बहुत शर्मिन्दा भी था।

उसके माता पिता ने उसको शान्त करने के लिये उस स्त्री को एक गाड़ी में बिठाया और महल की तरफ चल दिये जहॉ शादी की दावत उन सबका इन्तजार कर रही थी।

राजकुमार बहुत दुखी था। मॉ ने उसे समझाया कि वह दुखी न हो वह फिर से सुन्दर हो जायेगी। पर राजकुमार न तो बात कर रहा था और न ही उसका मन खाने में लग रहा था। खाना लाया गया। सब मेहमान एक गोल मेज के चारों तरफ बैठे।

इस बीच एक सफेद फाख्ता रसोईघर के छज्जे पर आ बैठी और गाने लगी —

ओ रसोइये सो जा भुने हुए मॉस को जल जाने दे
ताकि बूढ़ी जादूगरनी को मॉस खाने को न मिले

मेहमान मेज पर मॉस का इन्तजार कर रहे थे। उन्होंने बहुत देर तक उसके आने का इन्तजार किया पर जब वहॉ वह बहुत देर तक नहीं आया तो लोग रसोईघर की तरफ बढ़े। वहॉ जा कर उन्होंने देखा कि रसोइया तो सोया पड़ा था।

वे उसे बहुत देर तक जगाते रहे तब कहीं जा कर उसकी ऑख खुली पर वह फिर से उनींदा हो गया। उसने कहा कि उसको नहीं पता कि उसको क्या हो गया है पर वह खड़ा नहीं हो पा रहा था। किसी तरह से उसने दूसरा मॉस भूनने के लिये रखा कि वही फाख्ता रसोईघर के छज्जे पर फिर आयी और फिर से गाने लगी —

ओ रसोइये सो जा भुने हुए मॉस को जल जाने दे

ताकि बूढ़ी जादूगरनी को मॉस खाने को न मिले

मेहमानों ने फिर बहुत देर तक इन्तजार किया जब तक वे थक नहीं गये। तब राजकुमार खुद उसको देखने के लिये गया तो उसने भी देखा कि रसोइया तो सोया पड़ा था और मॉस जल रहा था। उसने रसोइये को जगाते हुए पूछा — "तुम्हें क्या हो गया है। तुम सो रहे हो और यह मॉस यहॉ जल रहा है।"

तब रसोइये ने बताया कि अभी वहॉ एक फाख्ता आयी थी और वह बार बार यही गा रही थी —

ओ रसोइये सो जा भुने हुए मॉस को जल जाने दे
ताकि बूढ़ी जादूगरनी को मॉस खाने को न मिले

और वह तुरन्त ही फिर से सोने लगा। सो राजकुमार छज्जे पर गया वहॉ उसने फाख्ता को देखा और उससे बोला — "ओ फाख्ता प्यारी फाख्ता। इधर आ मैं तुझे ज़रा देखूँ तो।"

फाख्ता उसके पास आ गयी तो उसने उसको पकड़ लिया और उसको सहलाने लगा कि तभी उसने महसूस किया कि उसके सिर में तो पिनें लगायी गयी हैं – एक तो माथे में और एक दोनों कनपटियों पर।

उसने क्या किया कि उसके माथे में लगी हुई पिन निकाल दी। उसे फिर से सहलाया और फिर उसकी कनपटियों में से भी पिन

निकाल दी। पिन निकालते ही वहॉ एक बहुत सुन्दर लड़की खड़ी हो गयी। उससे भी सुन्दर जितनी वह पहले थी।

राजकुमार तुरन्त ही उसको अपनी मॉ के पास ले गया और बोला — "मॉ देखो यह रही मेरी दुलहिन।"

उसकी मॉ उस सुन्दर लड़की को देख कर बहुत खुश हुई और उसका पिता राजा भी। पर जब बूढ़ी जादूगरनी ने उस लड़की को देखा तो वह चिल्लायी "मुझे कहीं और ले चलो मुझे कहीं और ले चलो। मुझे इससे बहुत डर लग रहा है।"

तब सुन्दर लड़की ने उन्हें वह सब बताया जो कुछ वहॉ हुआ था। मेहमानों से पूछा गया कि ऐसी हालत में जादूगरनी के साथ क्या करना चाहिये। जो सबसे ऊॅचे ओहदे का आदमी था वह बोला कि उसके शरीर पर खूब अच्छे से तेल लगा कर उसे जला देना चाहिये।

दूसरे लोग भी चिल्लाये हॉ यही ठीक है यही ठीक है। सबने उस बूढ़ी जादूगरनी को पकड़ लिया उसको तेल मल कर चौराहे पर आग जला कर उस आग में फेंक दिया गया।

फिर वे सब घर लौटे और पहले से भी ज़्यादा धूमधाम से राजकुमार की शादी हुई।

Names of Jesus' 12 Apostles –

1. Simon Peter (brother of Andrew) - He was active in bringing people to Jesus – Bible writer
2. James (son of Zebedee and other brother of John) also called James the Greater
3. John (son of Zebedee and brother of James) – Bible writer
4. Andrew (brother of Simon Peter) – He was active in bringing people to Jesus
5. Philip od Bethsaida
6. Thomas (Didymus)
7. Bartholomew (Nathaniel) – He was one of the disciples to whom Jesus appeared at the Sea of Tiberias after his Resurrection. He was witness of the Ascension
8. Matthew (Levi) of the Capernaum
9. James (son of Alphaeus), also called "James the Lesser" Bible writer
10. Simon the Zealot (the Canaanite)
11. Thaddaeus-Judas (Lebbaeus) – brother of James the Lesser and brother of Matthew (Levi) of the Capernaum
12. Judas Iscariot who also betrayed him

The New Testament says the end of only two Apostles – Judas who betrayed Jesus and then killed himself; and James the son of Zebedee who was executed by Herod.

List of the Tales of Popular Tales of Italy

Part 1

1. King of Love
2. Zelinda and the Monster
3. King Bean
4. The Dancing Water, the Singing Apple and the Talking Bird
5. The Fair Angiola
6. The Cloud
7. The Cistern
8. The Griffin
9. Cinderella
10. Fair Maria Wood
11. The Curse of the Seven Children
12. Oraggio and Blanchinetta
13. The Fair Florita
14. Bierde
15. Snow-White-Fire-Red
16. How the Devil Married Three Sisters
17. In Love With a Statue
18. Thirteenth
19. The Cobbler
20. Sir Florante Magician
21. The Cystal Casket
22. The Stepmother
23. Water and Salt
24. The Love of the Three Oranges

Part 2

25. The King Who Wanted a Beautiful Wife
26. The Bucket
27. The Two Humpbacks
28. The Story of Catherine and Her Fate
29. The Crumb in the Beard
30. The Fairy Orlanda
31. The Shepherd Who Made the King's Daughter Laugh
32. The Ass That Lays Money
33. Don Joseph Pear
34. Puss in Boots
35. Fair Brow

36. Lionbruno
37. The Peasant and the Master
38. The Ingrates
39. The Treasure
40. The Shepherd
41. The Three Admonitions
42. Vineyard I Was and Vineyard I Am
43. The Language of the Animals
44. The Mason and His Son
45. The Parrot: First Version
46. The Parrot: Second Version
47. The Parrot Which tells Three Stories: Third Version
48. Truthful Joseph
49. The Man the Serpent and the Fox
50. Lord Saint Peter and Apostles

Part 3
51. The Lord, St Peter and the Blacksmith
52. In This World One Weeps and Another Laughs
53. The Ass
54. Saint Peter and His Sisters
55. Pilate
56. Story of Judas
57. Desperate Malchus
58. Malchus at the Column
59. The Srory of Buttadeu
60. The Story of Crivoliu
61. The Story of St James of Galacia
62. The Baker's Apprentice
63. Occasion
64. Brother Giovannone
65. Godfather Misery
66. Beppe Pipetta
67. The Just Man
68. Of a Godfather and Godmother of St John Who Made Love
69. The Groomsman
70. The Parrish Priest of San Marcuola
71. The Gentlemen Who kicked a Skull
72. The Gossips of St John
73. Saddaedda

Part 4

74. Mr Attentive
75. The Story of the Barber
76. Don Firriyulieddu
77. The Little Chickpea
78. Pitidda
79. Saxton's Nose
80. The Cock and the Mouse
81. Godmother Fox
82. The Cat and the Mouse
83. A Feast Day
84. The Three Brothers
85. Buchettino
86. Three Goslings
87. The Cock
88. The Cock and That Wished to Become Pope
89. The Goat and the Fox
90. The Ant and the Mouse
91. The Cook
92. The Thoughtless Abbot
93. Bastianelo
94. Christmas
95. The Wager
96. Scissiors They Were
97. The Doctor's Apprentice
98. Firrazzanu's Wife and the Queen
99. Giufa and the Plaster Statue
100. Giufa and the Judge
101. The Little Omelet
102. Eat My Clothes
103. Giufa's Exploits
104. The Fool
105. Uncle Capriano
106. Peter Fullone and the Egg
107. The Clever Peasant
108. The Clever Girl
109. The Crab

Classic Books of European Folktales in Hindi

Translated by Sushma Gupta

1353 **Il Decamerone**
No 33 By Giovanni Boccacciao. 100 tales.
Translated by John Payne. London : Villon Society. 1886.

1550 **Facetious Nights of Straparola**
No 21 By Giovanni Francesco Straparola. 1550, 1553. 2 vols. 75 tales
First Translator : HG Waters. London : Lawrence and Bulletin. 1894.

1634 **Il Pentamerone.**
No 9 By Giambattista Basile. 50 tales. Translated in 3 volumes
First two volumes from John Edward Taylor – 32 tales
The third volume from Sir Richard Burton – remaining 19 tales

1874 **Serbian Folklore.**
No 2 By Madam Csedomille Mijatovies. London : W Ibisters. 26 tales.
"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich.
London : George and Harry. 1914 (1916, 1921).
It contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

1885 **Italian Popular Tales.**
No 27 By Thomas Frederick Crane. 109 tales. 4 volumes

1894 **Georgian Folk Tales**.
No 18 Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales.
Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें हिन्दी में
हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

1. Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa.
Translated by George W Bateman. Chicago, AC McClurg. **1901**. 10 tales.
ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं। अनुवाद – जौर्ज डबल्यू बेटमैन। **1901**। **2022**

2. Serbian Folklore.
Translated by Madam Csedomille Mijatovies. London, W Isbister. **1874.** 26 tales.
सरबिया की लोक कथाऐं। अंगेजी अनुवाद – मैम ज़ीडोमिले मीजाटोवीज़। **2022**

"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich. London : George and Harry. 1914 (1916, 1921). it contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

3. The King Solomon: Solomon and Saturn
राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – प्रभात प्रकाशन। जनवरी **2019**

4. Folktales of Bengal.
By Rev Lal Behari Dey. **1889**. 22 tales.
बंगाल की लोक कथाऐं — लाल बिहारी डे। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – नेशनल बुक ट्रस्ट।। **2020**

5. Russian Folk-Tales.
By Alexander Nikolayevich Afanasief. **1889**. 64 tales. Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916.
रूसी लोक कथाऐं – अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव। **2022**। तीन भाग

6. Folk Tales from the Russian.
By Verra de Blumenthal. **1903**. 9 tales**.**
रूसी लोगों की लोक कथाऐं – वीरा डी ब्लूमैन्थल। **2022**

7. Nelson Mandela's Favorite African Folktales.
Collected and Edited by Nelson Mandela. **2002**. 32 tales
नेलसन मन्डेला की अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं। **2022**

8. Fourteen Hundred Cowries.
By Fuja Abayomi. Ibadan: OUP. **1962**. 31 tales.
चौदह सौ कौड़ियॉ – फूजा अबायोमी। **2022**

9. Il **Pentamerone.**
By Giambattista Basile. **1634**. 50 tales.
इल पैन्टामिरोन – जियामबतिस्ता बासिले। **2022**। तीन भाग

10. Tales of the Punjab.
By Flora Annie Steel. **1894**. 43 tales.
पंजाब की लोक कथाऐं – फ्लोरा ऐनी स्टील। **2022** । दो भाग

11. Folk-tales of Kashmir.
By James Hinton Knowles. **1887**. 64 tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं – जेम्स हिन्टन नोलिस। **2022** । चार भाग

12. African Folktales.
By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. **1998**. 18 tales.
अफ्रीका की लोक कथाऐं – अलेसान्ड्रो सैनी। **2022**

13. Orphan Girl and Other Stories.
By Offodile Buchi. **2001**. 41 tales
लावारिस लड़की और दूसरी कहानियॉ – ओफ़ोडिल बूची। **2022**

14. The Cow-tail Switch and Other West African Stories.
By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt and Company. **1947**. 143 p.
गाय की पूँछ की छड़ी – हैरल्ड कूरलैन्डर और जौर्ज हरज़ौग। **2022**

15. Folktales of Southern Nigeria.
By Elphinston Dayrell. London : Longmans Green & Co. **1910**. 40 tales.
दक्षिणी नाइजीरिया की लोक कथाऐं – ऐलफिन्स्टन डैरैल। **2022**

16. Folk-lore and Legends : Oriental.
By Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. **1889**. 13 Folktales.
अरब की लोक कथाऐं – चार्ल्स जौन टिबिट्स। **2022**

17. The Oriental Story Book.
By Wilhelm Hauff. Tr by GP Quackenbos. NY : D Appleton. **1855**. 7 long Oriental folktales.
ओरिऐन्ट की कहानियों की किताब – विलहैल्म हौफ़। **2022**

18. Georgian Folk Tales.
Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales. Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.
जियोर्जिया की लोक कथाऐं – मरजोरी वारड्रौप। **2022**। दो भाग

19. Tales of the Sun, OR Folklore of South India.
By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. **1890**. 26 Tales
सूरज की कहानियॉ या दक्षिण की लोक कथाऐं — मिसेज़ हावर्ड किंग्सकोटे और पंडित नतीसा सास्त्री। **2022**

20. West African Tales.
By William J Barker and Cecilia Sinclair. **1917**. 35 tales.
पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाऐं — विलियम जे बार्कर और सिसीलिया सिन्क्लेयर। **2022**

21. Nights of Straparola.
By Giovanni Francesco Straparola. **1550, 1553**. 2 vols. First Tr: HG Waters. London: Lawrence and Bullen. **1894**.
स्ट्रापरोला की रातें — जियोवानी फ्रान्सैस्को स्ट्रापरोला। **2022**

22. Deccan Nursery Tales.
By CA Kincaid. **1914**. 20 Tales
दक्कन की नर्सरी की कहानियॉ – सी ए किनकैड। **2022**

23. Old Deccan Days.
By Mary Frere. **1868 (5th ed in 1898**) 24 Tales.
पुराने दक्कन के दिन – मैरी फ्रैरे। **2022**

24. Tales of Four Dervesh.
By Amir Khusro. **Early 14th century**. 5 tales. Available in English at :
किस्सये चार दरवेश — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**

25. The Adventures of Hatim Tai : a romance (Qissaye Hatim Tai).
Translated by Duncan Forbes. London : Oriental Translation Fund. **1830.** 330p.
किस्सये हातिम ताई — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**

26. Russian Garland : being Russian folktales.
Edited by Robert Steele. NY : Robert McBride. **1916**. 17 tales.
रूसी लोक कथा माला — अंग्रेजी अनुवाद – ऐडीटर रोबर्ट स्टीले। **2022**

27. Italian Popular Tales.
By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. **1885**. 109 tales.
इटली की लोकप्रिय कहानियॉ — थोमस फ्रैडैरिक केन। **2022**। चर भाग

28. Indian Fairy Tales
By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 1892. 29 tales.
भारतीय परियों की कहानियॉ — जोसेफ जेकब्स। **2022**

29. Shuk Saptati.
By Unknown. Translated in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911.
Under the Title "The Enchanted Parrot".
शुक सप्तति — । **2022**

30. Indian Fairy Tales
By MSH Stokes. London : Ellis & White. **1880.** 30 tales.
भारतीय परियों की कहानियॉ — ऐम ऐस ऐच स्टोक्स। **2022**

31. Romantic Tales of the Panjab
By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. **1903**. 422 p. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियॉ — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

32. Indian Nights' Entertainment
By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. **1892**. 426 p. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

33. Il Decamerone
By Giovanni Boccaccio. **1353**. 100 Tales.
इल डैकामिरोन — जिओवानी बोकाकिओ। **2022**

34. Indian Antiquary 1872
.A collection of scattered folktales in this journal. 1872.

35. Short Tales of Punjab
By Charles Swynnerton. Collected from his two books "Romantic Tales of the Panjab" and "Indian Nights' Entertainment". **1903 and 1892** respectively.

Facebook Group :
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks
Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद **1976** में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस कर के एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात **1995** में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स कर के **4** साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2022** तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से ये लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचायी जा सकेंगी।

विंडसर, कैनेडा
2022